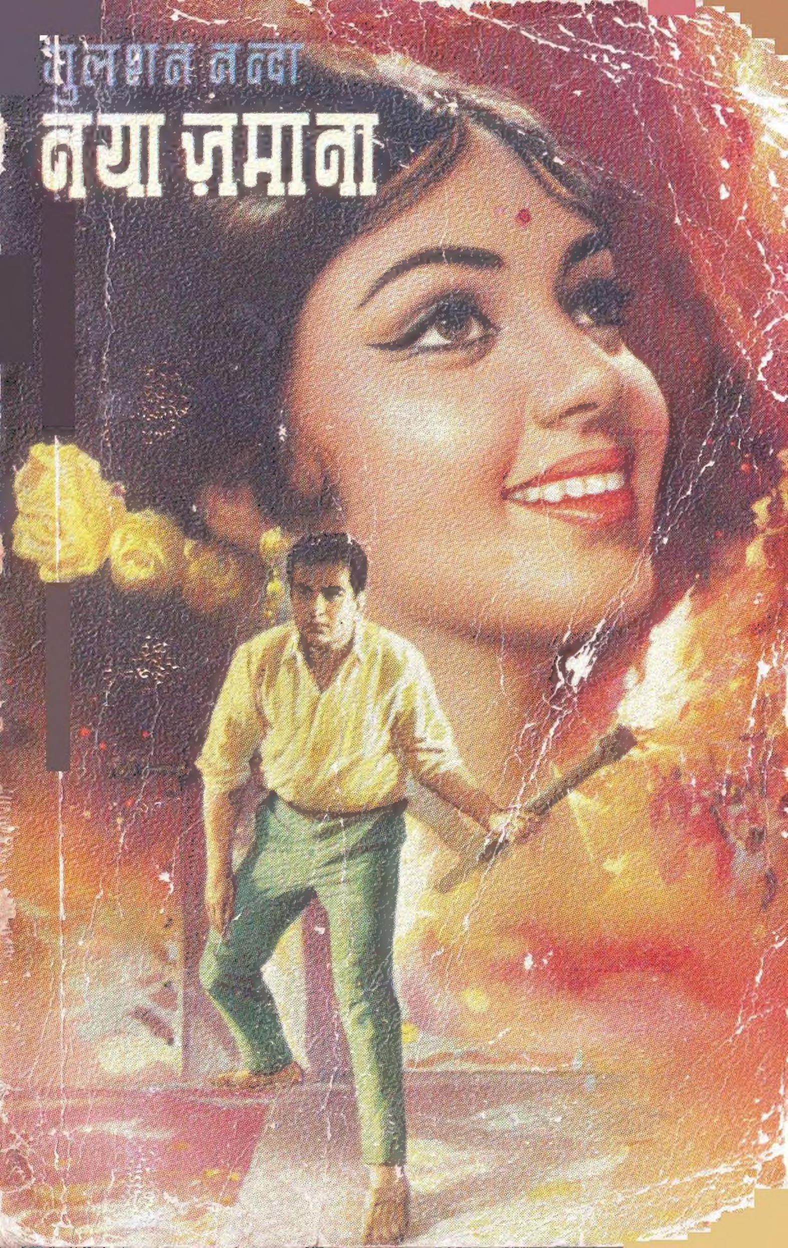
गुलशन नन्दा

नया ज़माना





'नया ज़माना' के पाठकों से :

तीन प्रसिद्ध लेखक और एक लोकप्रिय निर्देशक मिलकर जब किसी समस्या-प्रधान शक्तिशाली कथानक पर काम करते हैं तब उनकी आशाओं, भावनाओं तथा कल्पनाओं का संगम बन जाता है।

संगम है निर्देशक प्रमोद चक्रवर्ती का नया चित्र 'नया ज़माना' ! और, वे लेखक हैं—सचिन भौमिक, गुलशन-नन्दा तथा आग़ा जानी कश्मीरी !

वैसे तो अभिनय के इस लम्बे जीवन में मुझे निर्माता प्रमोद चक्रवर्ती के साथ काम करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु यह जीवन स्वयं एक चमत्कार है ! एक ऐसा ही चमत्कार आप—पाठक तथा दर्शक के रूप में—'नया ज़माना' में भी देखेंगे !

हम श्री प्रमोद चक्रवर्ती और श्री जीतु ठाकुर के आभारी हैं,
जिनके सहयोग से इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हुआ।

गुलशन नंदा

नया ज़माना



फिल्मी-शैली पर लिखा सम्पूर्ण कथानक (स्क्रीन-प्ले)

स्टार पॉकेट सीरीज़

नया ज़माना

SH-200

प्रकाशक : स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि०
४/५ बी० आसफअली रोड,
नई दिल्ली-१

प्रथम संस्करण : अप्रैल १९७१

मूल्य : तीन रुपये (3.00)

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली–२८

SH-200 : NAYA ZAMAANA : (Gulshan Nanda)

गुलशन नन्दा की ओर से

दो शब्द

प्रिय पाठक बन्धु,

कुछ ही सप्ताह पूर्व मेरा उपन्यास 'झील के उस पार' प्रस्तुत किया गया है। और अब 'नया ज़माना' के साथ फिर आपके सम्मुख हूं। इतने कम समय में दो पुस्तकों का एक साथ प्रकाशन आश्चर्यजनक है। किन्तु आशा है, यह आपको सुखद लगेगा।

'नया ज़माना' मेरी पूर्व-प्रकाशित पुस्तकों से कुछ भिन्न है। अब तक मेरे उपन्यासों के आधार पर फिल्में बनती रही हैं। किन्तु यह पुस्तक एक फिल्मी कथानक पर आधारित है। वास्तव में यह मेरी नई फिल्म 'नया ज़माना' का स्क्रीन-प्ले है। उपन्यास और फिल्म स्क्रीन-प्ले में मुख्य अन्तर यह होता है कि उपन्यास से लेखक की ओर से कहानी प्रस्तुत की जाती है। फिल्म में दृश्यों के क्रम एवं पात्रों के डायलाग से कहानी आगे बढ़ती है और आप पाठक होकर भी फिल्म के दृश्यों का भरपूर मज़ा लेते हैं। अंग्रेज़ी साहित्य में इस प्रकार के 'स्क्रीन-प्ले' (चित्रपट-कथानक) काफी बड़ी संख्या में छपते रहते हैं, किन्तु हिन्दी में शायद अपने प्रकार का यह पहला प्रकाशन है। मुझे विश्वास है कि पाठक इस शैली की पुस्तक को पसन्द करेंगे और अपने विचारों से मुझे अवगत करायेंगे।

इस फिल्म के कथानक को इतना रोचक एवं प्रभावशाली बनाने में मेरे दो सहयोगियों सर्वश्री सचिन भौमिक एवं आग़ा जानी-काश्मीरी का भरपूर सहयोग मुझे मिला है—और मैं यह कहने में प्रसन्नता अनुभव करता हूं कि उनके सहयोग के बिना कदाचित यह कथानक अधूरा रह जाता।

फिल्म 'नया ज़माना' के निर्माता निर्देशक श्री प्रमोद चक्रवर्ती भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस कथानक को पुस्तक-रूप में प्रकाशित करने की मुझे प्रेरणा एवं अनुमति दी।

अन्त में आप सभी बन्धुओं के अपरिमित स्नेह एवं विश्वास के लिए पुन: आभार प्रदर्शित करते हुए—

७, शीश महल,
५-ए, पाली हिल्ज़,
बांद्रा, बम्बई-५०
५ अप्रैल, १९७१

—आपका
गुलशन नन्दा

"ज़िन्दगी पर सबका एक-सा हक़ है
सब तसलीम करेंगे।
सारी खुशियां, सारे दर्द बराबर
हम तक़सीम करेंगे।"

नया ज़माना

(स्क्रीन-प्ले)

लेखक : सचिन भौमिक,
गुलशन नन्दा,
आग़ा जानी कश्मीरी

गीत : आनन्द बख्शी

फोटोग्राफ़ी : वी० के० मूर्ति

संगीत : एस० डी० बर्मन

निर्माता व निर्देशक : प्रमोद चक्रवर्ती

'नया ज़माना' के पात्र :

अनूप	...	धर्मेन्द्र
सीमा	...	हेमा मालिनी
राजन चौधरी	...	प्राण
महेश	...	महमूद
रेखा	...	अरुणा ईरानी
अनूप की मां	...	ललिता पवार
अशोक	...	मनमोहन
आशा (श्रीमती राजन)	...	इन्द्राणी मुखर्जी
मकान-मालिक	...	धुमाल
लिली	...	शबनम
गुड्डी	...	गुड्डी
मकान-मालकिन	...	मीना
गुप्ता (दैनिक 'आवाज़' के मालिक)	...	कानू राय
वर्मा (दैनिक 'आवाज़' के सम्पादक)	...	ब्रह्म भारद्वाज
सीताराम	...	जानकीदास
प्रकाश (अनूप का मित्र)	...	मधुप शर्मा
मुनीम (मेहताजी)	...	केशव राणा
पुरोहित	...	वी० गोपाल
पुलिस इन्सपेक्टर	...	राजन कपूर

१

शाम हो चुकी है। बस की लम्बी कतार में लोग बेचैनी से बस का इंतजार कर रहे हैं। इसी कतार में अनूप और मौलाना भी खड़े हैं। अचानक बस आकर रुकती है और कतार में खलबली-सी मच जाती है। हर व्यक्ति अपनी बारी से पहले सवार होने की कोशिश करता है। अनूप और मौलाना की बारी आते ही बस में जगह भर जाती है। मौलाना झुंझलाकर जेब से अखबार निकालकर पढ़ने लगते हैं।

मौलाना—लाहौल विला कूवत। खुदा रहम करे, फिर झगड़ा हो गया।

अनूप—लगता है इसमें बाहर वालों का हाथ है।

मौलाना—आपकी तारीफ़ ?

अनूप—जी मैं भी आप ही की क़ौम का एक इन्सान हूं।

मौलाना—तो आप मुसलमान हैं ?

अनूप—जी हां कभी-कभी हो जाता हूं।

मौलाना—क्या मतलब ?

अनूप—जब मुसलमानों पर ज़ुल्म होता है तो मुसलमान हो जाता हूं और जब हिन्दुओं पर ज़ुल्म होता है तो हिन्दू हो जाता हूं।

मौलाना—बहरहाल कोई ज़ात तो होगी जनाब की ?

अनूप—जी हां वही ज़ात है जो आज हिन्दुस्तान में सौ में से नब्बे आदमियों की है।

मौलाना—समझा हिन्दू हैं आप।

अनूप—जी नहीं। दरअसल दो ही तो ज़ातें हैं हिन्दुस्तान में—एक अमीर और दूसरी गरीब।

मौलाना—वल्लाह आप तो नेता मालूम होते हैं।

अनूप—जी नेताजी तो बस एक ही गुज़रे हैं इस देश में।

मौलाना—तो शौक क्या फ़र्माते हैं जनाब ?

अनूप—पढ़ता हूं और लिखता हूं।

मौलाना—क्या पढ़ते हैं आप ?

अनूप—सफेद झूठ जो आज के देश-सेवक अखबारों में लिखते हैं।

मौलाना—और क्या लिखते हैं आप ?

अनूप—वो सच जो उन्हें दिखाई नहीं देता।

तभी एक बैलगाड़ी के सामने आ जाने से सीमा की कार झटके से बस-स्टाप के पास रुकती है। सड़क पर जमा बरसात का पानी और कीचड़ कार के पहियों से उछलकर मौलाना के कपड़ों पर जा पड़ता है।

मौलाना—लाहौल विला कूवत।

किसी सुन्दरी की तीखी आवाज़ सुन दोनों चौंक पड़ते हैं और कार की तरफ बढ़ते हैं।

सीमा—ए बैलगाड़ी हटाओ—हटाओ न।

मौलाना—साहेबजादी ये क्या शराफत है ?

अनूप—इन अमीरों से गरीबों के साफ कपड़े भी नहीं देखे जाते ।

सीमा—आपका ख्याल है कि मैंने जान-बूझकर इनके कपड़े खराब किए हैं ?

अनूप—मेमसाहब भगवान ने आंखें देखने के लिए दी हैं। सिर्फ काजल लगाने के लिए नहीं ।

सीमा—आइ ऐम सॉरी ।

अनूप—आप क्या समझती हैं 'सॉरी' विलायती साबुन का टुकड़ा है जो मौलाना साहब के कपड़े साफ कर देगा ।

सीमा कार से बाहर निकलकर आती है, और अपनी नशीली निगाहों से अनूप को देखने लगती है।

सीमा—क्या एक शरीफ लड़की से इस तरह बात की जाती है ?

अनूप—अच्छी शराफत दिखाई आपने ।

सीमा—शट् अप ।

अनूप—मेमसाहब किस बात पे अकड़ती हैं आप ? इस खूबसूरती के लिए जो आपकी नहीं भगवान की दी हुई चीज़ है। या फिर इस रुपये-पैसे के लिए जो आपने नहीं आपके बाप-दादों ने कमाया होगा ।

सीमा दस रुपये का एक नोट पर्स से निकालकर मौलाना की तरफ बढ़ाती है।

सीमा—ज़्यादा लैक्चर देने की ज़रूरत नहीं है। ये लीजिए—मेरी तरफ से किसी लॉन्ड्री में अपने कपड़े धुलवा लीजिएगा ।

अनूप—इस मेहरबानी के लिए थोड़ी सेवा करनी पड़ेगी।

मौलाना हिचकिचाते हैं, मगर अनूप लपक कर नोट थाम लेता है। और आगे बढ़कर कार के पहिये की हवा निकाल देता है।

सीमा—क्या कर रहे हो? ह्वाट नॉनसेन्स?

अनूप—हवा ज़रा ज़्यादा भर गई थी इसलिए निकालनी पड़ी। ये लीजिए चवन्नी, हवा भरवा लेना। और ये मेरी तरफ से इनाम।

अनूप दस रुपये के नोट के साथ एक चवन्नी जेब से निकालकर सीमा की तरफ बढ़ाता है।

मौलाना—चलिए चलिए, बस आ गई।

सीमा—यू इडियट फ़ूल।

सीमा नोट व चवन्नी सड़क पर गुस्से से फेंक देती है और नथनों को फैलाये दोनों को परेशान नज़र से देखती है। बस के आते ही दोनों उसमें सवार हो जाते हैं। वह खुद देर तक तिलमिलाई हुई वहीं खड़ी रहती है।

□ □

दैनिक 'आवाज़' का सिल्वर जुबली उत्सव मनाया जा रहा है। उसके सभापति मिस्टर राजन स्टेज पर खड़े भाषण दे रहे हैं, जो सीमा के बड़े भाई हैं। इसी उत्सव में श्रीमती राजन, उनके एक अज़ीज़ दोस्त अशोक और उनकी बहन निली भी सभापति के साथ स्टेज पर विराजमान हैं; और श्रोताओं के साथ ताली बजाने में उनका साथ दे रहे हैं।

राजन—हम धनवानों का रुपया अगर देश की भलाई के काम न आया तो फिर वो रुपया किस काम का ? अगर हमने गरीबी को दूर न किया तो एक दिन ये गरीबी हमको खत्म कर देगी। यही गुप्ताजी के अखबार 'आवाज़' की आवाज़ है—वक्त की आवाज़ है—जनता की आवाज़ है।

तालियों की गूंज से वातावरण में एक सुरीली थरथराहट होने लगती है। उसी समय भीड़ को चीरते हुए दैनिक 'आवाज़' का रिपोर्टर अनूप पंडाल में दाखिल होता है और राजन बाबू के भाषण से लोगों के खिले चेहरों को देखता है।

राजन—आज हम सब अखबार 'आवाज़' की सिल्वर जुबिली सैलेबरेट करने इकट्ठा हुए हैं। इस शुभ मौके पर मैं पच्चीस हज़ार रुपया अपनी तरफ से और पच्चीस हज़ार रुपया अपनी वाइफ आशा देवी की तरफ से उन अनाथ बच्चों की सेवा में दान करता हूं जिनकी भलाई के लिए गुप्ताजी ने यह अनाथ आश्रम खोला है।

और हां ये दस हज़ार रुपये का चैक हमारे फैमिली फ्रैंड मिस्टर अशोक और उनकी बहन मिस लिली की तरफ से।

अनूप 'आवाज़' के सम्पादक वर्मा जी के करीब आकर रुकता है।

अनूप—नमस्ते वर्मा जी !

सम्पादक—अनूप बहुत देर कर दी तुमने।

अनूप—सभापति का भाषण काफी जोरदार लिखा है आपने वर्मा जी।

सम्पादक—खामोश हो जाओ अनूप। ये बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिए।

तालियों की गूंज उनकी बातचीत को पुनः दबा देती है।

राजन—आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं। इस देश के सब बच्चे हमारे हैं—वो अमीर का हो चाहे गरीब का—बच्चे देश की किस्मत हैं। उनको पहनने के लिए कपड़ा, रहने को मकान और खाने को रोटी मिलनी ही चाहिए।

पंडाल के बाहर एक पेड़ का सहारा लिए एक बच्चा राजन का भाषण सुन रहा है। उसके चेहरे पर भूख के निशान हैं। वह भूख से बेताब होकर उस तरफ बढ़ता है जहां मेहमानों के लिए खाने का बन्दोबस्त है। मेज पर तरह-तरह के भोजन लगे देखकर उसकी आंखें चमक उठती हैं। लेकिन वह उन चीजों को छूने की जुर्रत नहीं करता।

राजन—आपके खाने का वक्त आ गया। आइए हम सब लोग मिल-जुलकर खाना खायें।

सीमा तेजी से भीड़ में दाखिल होती है और अनूप को देखते ही रुक जाती है। लिली सीमा को चुप खड़ी देख उसकी तरफ लपकती है।

लिली—मेमसाहब बड़ी देर लगा दी।

सीमा—रास्ते में एक बदतमीज़ मिल गया था।

श्रीमती राजन की चिल्लाहट पर दोनों चौंक उठती हैं। अनूप तेज़ी से आगे बढ़कर देखता है कि अशोक उस गरीब बच्चे को मार रहा है जिसने अभी-अभी खाने की मेज़ से कुछ उठाने की कोशिश की थी।

अनूप अशोक को धक्का देकर एक तरफ हटा देता है और रोते हुए बच्चे को अपनी बांहों में संभाल लेता है।

श्रीमती राजन—चोर कहीं का—शरम नहीं आती रोटी चुराते हुए। कौन इसे यहां लाया ?

अनूप—भूख !

श्रीमती राजन—ये किस गरीब का बच्चा है ?

अनूप—देश में एक-दो गरीब हों तो बताऊं।

श्रीमती राजन—इसको यहां किसने बुलाया था ?

अनूप—सभापति ने। उनकी झूठी आवाज़ को ये मासूम आप अमीरों के दिल की आवाज़ समझ बैठा—सोचा मैं भगवान का रूप हूं—पूजा न सही, पेट-पूजा तो हो जाएगी।

अशोक—क्या इसी इन्सल्ट के लिए हमने साठ हज़ार रुपया चन्दा दिया था ?

अनूप—तो क्या साठ हज़ार से साठ करोड़ गरीबों को बेइज़्ज़त करने का इरादा था ?

श्रीमती राजन—ये तो समझ बैठा है कि सारे गरीब हमारी वजह से फाक़ा कर रहे हैं।

अनूप—अगर किसी गरीब को फाक़ा करते देखो, तो यकीन कर लो कि उसकी रोटी कोई दूसरा ज़रूर छीनकर खा रहा है।

राजन को इस घटना पर बहुत गुस्सा आता है मगर वह मजबूर हो खामोश रहता है।

सीमा उसकी इस दिलेरी से प्रभावित होती है।

अनूप बच्चे को उठाए तेजी से बाहर चला जाता है। श्रीमती राजन अपनी इस बेइज्जती पर बड़बड़ाने लगती हैं और जब अखबार 'आवाज़' के मालिक उनके सामने आते हैं तो वह चिल्ला उठती हैं—

श्रीमती राजन—गुप्ताजी कौन था ये बदतमीज़ ?

गुप्ताजी—एडिटर, कौन था ये बदतमीज़ ?

सम्पादक—हमारे ही अखबार का रिपोर्टर।

अशोक—डैमेजिंग एण्ड डिस्गस्टिंग !

श्रीमती राजन—चलो, सीमा, घर चलो।

सीमा—भाभी तुम भी किस किस्म के. ग़लत आदमी से उलझ गई थीं ?

लिली—न जाने अपने-आपको क्या समझता है ?

गुप्ताजी—मैं आप लोगों से मुआफी मांगता हूं—और कल इस रिपोर्टर का मुआफीनामा भी अखबार 'आवाज़' में पढ़ लीजिएगा।

दूसरे दिन जब अनूप अपने दफ्तर पहुंचता है तो वर्माजी गुप्ताजी का ड्राफ्ट किया हुआ मुआफीनामा उसके सामने रख देते हैं। वह हैरानी में पड़ जाता है और ज्यों ही उसकी नजर वर्माजी से मिलती है, वह फौरन गुप्ताजी का टेलीफोन नम्बर मिला देते हैं।

वर्मा—जी गुप्ता जी, अनूप मुआफीनामे पर दस्तखत करने को तैयार है। वो बहुत ही शर्मिन्दा है, फिर कभी ऐसी हरकत न करेगा।

अनूप—मैं बात करूं ?

वर्मा—हां-हां, जरूर करो।

अनूप—जी मैं बात करने से नहीं डरता और न ही किसी से डर कर बात करता हूं। गुप्ताजी मैं वाकई बहुत शर्मिन्दा हूं।

गुप्ता—दैट्स आल राइट।

अनूप—इसलिए नहीं कि कल रात मैंने क्या कहा ? बल्कि इसलिए कि अखबार 'आवाज' जिसे मैं आज तक जनता की आवाज समझता रहा, वह जनता की आवाज नहीं बल्कि जनता को लूटनेवालों की आवाज थी।

गुप्ता—स्टाप इट, यू आर फायर्ड।

वर्मा गुस्से में आकर अनूप से रिसीवर छीन लेते हैं।

अनूप—गाली दी गुप्ताजी ने। मुझे अफसोस है मेरी वजह से आपको गाली सुननी पड़ी।

वर्मा—कल आकर अपना हिसाब ले जाना।

अनूप—जी, आज मिल जाता तो अच्छा था, मैं रेखा से वादा करके आया हूं।

वर्मा—आई ऐम सॉरी।

रेखा कालिज के आफिस के काउन्टर पर खड़ी है और अपने भाई अनूप के न आने से परेशान है।

रेखा—भैया ने आज वादा तो किया था एक्जामिनेशन-फी का,

मगर न जाने अभी तक क्यों नहीं आए ?

क्लर्क—खैर अभी ग्रेस के दो दिन बाकी हैं। रेखा ख्याल रखना कहीं तुम जैसी ब्रिलियेन्ट स्टुडेन्ट का साल खराब न हो जाए।

रेखा—जी फीस वक्त पर पहुंच जाएगी।

उसी वक्त सीमा रेखा को तलाश करती हुई वहां आ जाती है।

सीमा—अरे, रेखा तुम यहां फीस जमा करा रही हो और मैंने तुम्हारी याद में कालिज का कोना-कोना छान मारा है।

रेखा—जभी मुझे हिचकियां आ रही थीं।

सीमा—सुन, तू कल मेरी ग्जीजी की सालगिरह की पार्टी में आ रही है। मैंने मेहमानों से एक सरपराइज़ देने का वादा किया है। तेरा गाना पार्टी का बिग्गेस्ट सरपराइज़ होगा।

रेखा—तू भी तो बहुत अच्छा गाती है। कालिज की लता मंगेशकर तो तू कहलाती है।

सीमा—और हर बरस कम्पिटीशन में गोल्ड मैडल मार जाती है तू।

रेखा—वो तो भैया की कविता ही ऐसी होती है।

सीमा—ओ हो, हर बात में भैया की तारीफ करना न भूलना।

रेखा—अच्छा तू मुझे ये बता तू मुझे इन्विटेशन देने आई है या सिर्फ गाने के लिए बुला रही है।

सीमा—देख फिर ऐसी बातें करेगी तो मारूंगी।

रेखा—मां से तो पूछना पड़ेगा। उनकी इजाज़त के बगैर···

सीमा—चल ये बात मेरे ऊपर छोड़। मैं उन्हें मना लूंगी और इस बहाने तुम्हारा घर भी देख लूंगी।

यह कहते हुए वह उसे अपनी मोटर-कार की तरफ खींच ले जाती है और दोनों गाड़ी में बैठकर रवाना हो जाती हैं।

मोटर गाड़ी शहर की लम्बी-चौड़ी सड़कों को पार करती हुई आखिर उस बस्ती की तरफ मुड़ती है जो शहर से जरा हट कर है। सीमा पहली बार गरीबों की बस्ती में आती है। उसे यह सब बड़ा अजीब-सा लगता है। गाड़ी एक मामूली से मकान के सामने आकर रुकती है।

रेखा—ये रहा हमारा मकान। नीचे के हिस्से में हम लोग रहते हैं और ऊपर मकान मालिक।

रेखा की मां घर के काम में लगी हुई है। रेखा अपनी सहेली को लिए अन्दर आती है और मां से उसका परिचय कराती है।

रेखा—मां यह सीमा है मेरे साथ ही कालिज में पढ़ती है।

सीमा रेखा की मां के पांव छूने को झुकती है और मां उसके सर पर हाथ रखते हुए आशीर्वाद देती है।

मां—जीती रहो बेटी···जीती रहो।

सीमा—मां, आज मैं आपसे कुछ मांगने आई हूं।

मां—मुझसे ?

सीमा—हां, पहले वादा कीजिए, आप इन्कार नहीं करेंगी।

मां—बेटी अव्वल तो हमारे पास कुछ है नहीं, दूसरे तुम्हें ना भी कैसे कह सकती हूं। तुम भी तो रेखा के समान हो।

सीमा—नहीं मां रेखा मुझसे ज्यादा रईस है।

रेखा—चल, मैं तुझसे ज्यादा रईस हूं ?

सीमा—इस बात को तू नहीं समझ सकती। मां क्या होती है, मेरे दिल से पूछ—जिसकी मां का साया बचपन से ही उठ गया हो।

> **सीमा अपनी मां को याद करके उदास हो जाती है और अनजाने में उसकी पलकों पर आंसू आकर रुक जाते हैं। रेखा की मां का दिल उसके आंसू देखकर दर्द से भर आता है।**

मां—मां तो रोशनी की तरह अमर होती है बेटी ! वह आंखों से जरूर ओझल हो जाती है लेकिन उसकी छाया हमेशा क़ायम रहती है। आज से इस टूटे-फूटे घर को अपना ही घर समझो।

रेखा—ए, तू दावत देने आई है या मेरी मां का मन चुराने ?

सीमा—मां, मैं रेखा को अपनी भतीजी की सालगिरह की दावत देने आई हूं। अगर वापिसी में कुछ देर हो गई तो मैं खुद छोड़ जाऊंगी।

मां—अच्छा-अच्छा जरूर जाएगी। रेखा इन्हें अनूप के कमरे में बिठाओ।

> **मां यह कहते हुए रसोई-घर की तरफ बढ़ती है और रेखा सहेली को लिए अनूप के कमरे की तरफ। जैसे ही दोनों अनूप के कमरे में आती हैं, सीमा आश्चर्य से दीवारों पर बनी तस्वीरें देखती है और पल भर देखती ही रह जाती है।**

सीमा—अरे ये क्या है ? कार्ल मार्क्स ! विवेकानन्द ! लोकमान्य तिलक ! रवीन्द्रनाथ टैगोर ! दीवार पर ये सब क्या है ?

रेखा—तस्वीरें।

सीमा—ये तो मैं समझी। लेकिन बनाई किसने हैं ?

रेखा—मेरे भैया ने।

सीमा—सबके नीचे नाम लिख छोड़े हैं वर्ना पहचानना मुश्किल हो जाता। तेरे भैया पागल तो नहीं हैं ? भई मेरी बात का बुरा मत मानना, मैंने तो यूं ही कह दिया।

रेखा—मेरे भैया पागल हैं या नहीं, यह तो मैं नहीं जानती। लेकिन हां उनके विचार मामूली आदमियों से बहुत ऊंचे हैं, ये ज़रूर सच है। इन महान् लोगों की छपी हुई तस्वीरें भैया को बिल्कुल पसन्द नहीं। वह कहते हैं कि उनके चेहरे का नक्शा तो दुरुस्त होता है मगर उनके ऊंचे ख्यालात का अन्दाज़ा नहीं दिखाई पड़ता।

सीमा—तेरे भैया बड़े दिलचस्प मालूम होते हैं। तू तो कहती थी कि वे सिर्फ राइटर हैं। आज मालूम हुआ वह पेन्टर भी हैं। अच्छा, और क्या-क्या हैं वो भी बता दे।

रेखा—थोड़ी देर और ठहर जा। आते ही होंगे तुझे खुद मालूम हो जाएगा।

तभी दीवार पर लगी हुई घड़ी तीन बजाती है और सीमा चौंककर अपनी घड़ी देखने लगती है।

सीमा—ओह गाड, इट्स थ्री। मेरी भाभी के भैया अमेरिका से आनेवाले हैं। तेरे भैया का इन्तज़ार करूंगी तो मेरी भाभी नाराज़ हो जाएगी एयर-पोर्ट पर। बाय•••

मिसेज़ राजन, अशोक, लिली, गुड्डी और परिवार के दूसरे दोस्त हवाई अड्डे पर महेश के जहाज़ के आने का इन्तज़ार कर रहे हैं। सबकी निगाहें उस प्लेन पर लगी हुई हैं जो

अभी-अभी हवाई-पट्टी को छूकर उनकी तरफ बढ़ रहा है। राजन की नन्ही बच्ची गुड्डी उछल पड़ती है।

गुड्डी—मामा जी का प्लेन आ गया।

श्रीमती राजन—शुक्र है भगवान का। मेरा भाई पांच बरस के बाद अमेरिका से खैरियत से वापस आ गया।

अशोक—यों कहिए हमारे महेश सात समंदर पार से बिजनैस मैनेजमेंट की भारी डिगरी लेकर आ रहे हैं।

श्रीमती राजन—और अब देश के सबसे बड़ी फर्म, आइ मीन हमारी फर्म का बिज़नेस पार्टनर बनेगा।

जो लड़कियां महेश से शादी करने में दिलचस्पी रखती हैं, वहां मौजूद हैं। उनके चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ जाती है। अशोक लिली भी खुश हैं और दोनों भीड़ से हटकर एक तरफ बातें करने लगते हैं।

अशोक—तू अपना ले महेश को और मैं सीमा को। फिर राजन बाबू मेरे साले···

लिली—और तुम राजन बाबू के साले के साले।

अशोक—यू मीन ब्रदर-इन-ला कम्बाइन्ड!

रूपाली—भाभीजी महेश के आने की खबर से आइ वाज़ सो मच एक्साइटेड कि मैं कल रात से सो नहीं सकी।

लिली—आपने स्लीपिंग पिल्स खा ली होतीं।

सीमा जो अभी-अभी एयरपोर्ट पहुंची है उनकी बातों में दखल देती है।

सीमा—शिकार अभी दिखाई नहीं दिया और आप लोग हवा में गोली चला रहे हैं।

अशोक—(फूलों का गुलदस्ता देते हुए) हैप्पी लैंडिंग सीमा जी।

गुड्डी—(बीच में आते हुए) आण्टी नहीं मामा जी आ रहे हैं।

अशोक—हमको तो हर तरफ आप ही आप दिखाई देती हैं सीमा जी।

सीमा—सावन के अन्धे को तो हर तरफ हरा ही हरा दिखाई देता है।

सीमा अशोक पर रिमार्क कसकर आगे बढ़ जाती है और फिर सामने से भय्या को आते देखकर रुक जाती है। उसी वक्त राजन गुस्से में भरा हवाई अड्डे पर दाखिल होता है और बीवी का सामना करता है।

राजन—कमाल है आशा। हरी, पीली, लाल—सातों मोटरें ले आई। एक तो छोड़ दी होती।

श्रीमती राजन—अशोक और लिली ने कहा, न जाने महेश किस रंग के सूट में होगा। शायद उसी रंग की मोटर में बैठना पसन्द करे।

प्लेन सामने आकर रुकता है। मुसाफिर उतरने लगते हैं। एक मुसाफिर का लिबास बड़ा अजीब-सा है। कुरता-पाजामा पहने और हाथ में तंबूरा लिए वह आगे बढ़ता है। गुड्डी उसकी तरफ देखकर इशारा करती है।

गुड्डी—आण्टी वह देखो इण्डियन हिप्पी!

सीमा—वह तो महेश मामा है तेरा।

सीमा महेश को इस लिबास में पहचान लेती है और महेश करीब आते ही अपनी मोटी आवाज़ में कहता है।

महेश—हाय !

राजन—(बीवी से) अब ज़िन्दगी भर हाय-हाय करती रहो। मना करता था कि इस नमूने को अमेरिका न भिजवाओ। अब इसको घर नहीं चिड़ियाघर ले जाना।

राजन महेश को इस लिबास में देखकर गुस्से में वहां से चला जाता है। सभी उसकी अनोखी सूरत देख आश्चर्य करते हैं। गुड्डी अपने मामा को इस लिबास में देखकर बहुत खुश है और सीमा को खींचकर कहती है।

गुड्डी—चलो आण्टी, मामा से मिलें।

लिली—मैं नहीं मिलूंगी इस हिप्पी से।

अशोक—डोन्ट बी सिली। तुम्हें पति नहीं लखपति चाहिए।

महेश उन्हें देखकर हाथ हिलाता है और गुड्डी के करीब आकर रुकता है। श्रीमती राजन भी महेश को इस लिबास में देखकर दुःखी हो गई हैं।

महेश—हाय गुड्डी ! हैलो सीमा सिस्टर···दीदी, वैल वेअर इज़ योर हब्बी ? आइ मीन पतिदेव !

श्रीमती राजन—तेरा ये हुलिया देखकर उनकी तबियत खराब हो गई और वह घर चले गए।

महेश—और वो तितलियां जिनके बारे में दीदी तुम लिखा

करती थीं ?

श्रीमती राजन—वे सारी तितलियां भी उड़ गईं।

महेश—(खुश होकर) चलो अच्छा हुआ हमारा ये बहुरूप किसी काम तो आया। वर्ना हम इन तितलियों को और तुमको समझाने कहां जाते ?

इतने में सभी लड़कियां वापस आ जाती हैं। लिली महेश को लुभाने की कोशिश करती है। महेश गुड्डी की तरफ बढ़ता है।

सभी लड़कियां—वैलकम होम डियर महेश।

महेश—(मुस्कराकर व्यंग्य से) होल्ड आन। तुम बरसाती तितलियां महेश को क्या सारे देश को माला पहना सकती हो। मगर महेश जिन्दगी में एक ही को माला पहनाएगा। जिसको भी हार देना हो—मेरे तम्बूरे में डालो।

लिली—गुड आइडिया महेश !

महेश—होल्ड इट। हमको नहीं हमारे तम्बूरे को।

(गुड्डी से) ओ गुड्डी मैं तेरे को बर्थडे प्रेज़ेण्ट्स दिखाऊंगा।

गुड्डी—थैंक यू मामा।

अशोक—डैमेजिंग एंड डिस्गस्टिंग। कहां गया वह ?

लिली—मुझे क्या मालूम ?

□ □

अनूप की मां घर के काम-काज में मशगूल है और रेखा एक तरफ बैठी एक बच्ची का फ्रॉक काढ़ रही है। तभी बाहर के दरवाजे पर आहट होती है। मां-बेटी दोनों चौंककर अनूप की तरफ देखती हैं, जिसके चेहरे पर थकान और परेशानी झलक रही है।

मां—बड़ी देर कर दी बेटा।

अनूप—हां मां, आज देर हो गई। रेखा, तुमसे जो वादा किया था, उसका इन्तज़ाम नहीं हो सका।

रेखा—कोई बात नहीं भैया, कालिज की फीस तो परसों तक भी भरी जा सकती है।

अनूप—अरे, ये क्या बना रही हो ?

रेखा—फ्रॉक !

अनूप—किसके लिए ?

रेखा—मेरी सहेली सीमा न्यौता देकर गई है अपनी भतीजी की सालगिरह का।

अनूप—बहुत खूबसूरत है। अच्छा यह तो बताओ तुम्हारी सहेली है किस ज़ात की ?

रेखा—तुम्हारी ज़ात-पात के हिसाब से अमीर।

अनूप—अ''ह'''तब उनके यहां इसे कोई नहीं पूछेगा। क्योंकि इस ज़ात के लोग हमेशा यही देखते हैं कि दाम में कौन कितना बड़ा है ?

रेखा—लेकिन वह ऐसी नहीं है। यकीन न आए तो मां से पूछकर देखो, क्यों मां ?

मां—बेटा अगर तू सीमा से मिल लेता तो ऐसा कभी न कहता। वह बड़े घर की लड़की ज़रूर है मगर दिमाग उसे छू नहीं गया। मुझे तो वह बड़ी भली लगी।

रेखा—सुन लिया भैया। सभी अमीर एक-जैसे नहीं होते।

अनूप—लेकिन गरीबों के साथ वो लोग एक जैसे ही हैं। और मां, जिसे तुम उनकी भलमनसाहत कहती हो वह है उनकी मेहरबानी जो और भी बरदाश्त नहीं होती।

रेखा—भैया सीमा ने ज़िद की है कि मुझे गाना भी गाना होगा।

अनूप—(चारपाई पर लेटते हुए) अच्छा, गाना भी गाना होगा। तो ठीक है, वही गाना सुनाना, कहिए कुछ और···तुम्हारी सहेली और सुननेवालों को मजा आ जाएगा।

रेखा—कैसी बातें करते हो भैया ? कभी नहीं गाऊंगा। ऐसा गाना और जन्म-दिन पर ?

□ □

गुड्डी की बर्थ-डे पार्टी पर सब मेहमान जमा हैं। अशोक आगे बढ़कर सीमा से मुखातिब होता है।

अशोक—हैप्पी बर्थ-डे सीमा जी।

सीमा—थैंक यू।

गुड्डी बीच में बोल पड़ती है। और फूलों का गुलदस्ता उसके हाथ से ले लेती है।

गुड्डी—अंकल ये आण्टी की नहीं, ये तो मेरी बर्थ-डे है।

अशोक—ओह ओह हो।

गुड्डी—थैंक यू।

अशोक—बर्थ-डे चाहे किसी की हो हम तो दिन-रात आपकी सलामती की दुआ मांगते हैं।

सीमा—और काम भी क्या है आपका ?

सीमा उससे अलग होकर शहर के चुने हुए मेहमानों की तरफ बढ़ती है। अशोक गुड्डी के रिमार्क का खयाल न करते हुए सीमा का साथ छोड़ना नहीं चाहता। सामने से महेश आता है, जो कुर्ता-पाजामा की जगह आज एक नये

अंदाज में है। यानी मॉडर्न हिप्पी। महेश के आने पर लड़कियां उसकी तरफ बढ़ती हैं। और सीमा उसके अजीबोगरीब जुमले सुनकर लुत्फ उठा रही है।

एक लड़की—हाय, महेश डार्लिंग !

महेश—हाय गिव यू वार्निंग।

दूसरी—हाय !

महेश—बट वाय ?

तीसरी—सुन्दर !

महेश—सपना ! ऐस ?

चौथी—यू आर ए किलर !

महेश—रिअली, दैन होल्ड दिस पिलर।

पांचवीं—हसीन !

महेश—नाज़नीन !

छठीं—यू आर ए बिग गन।

महेश—यू लुक लाइक जोगन।

सातवीं—वाह !

महेश—आह !

लिली—बहुत अच्छे।

महेश—लेकिन सच्चे-सच्चे।

सीमा—महेश भैया जंच रहे हो इस रूप में। है न लिली ?

लिली—हां सीमा। इसीलिए तो सबकी नजरें महेश डार्लिंग पर हैं।

महेश—तभी तो हम चश्मेबद्दूर, बुरी नजरों से दूर जा रहे हैं। चलो सिस्टर।

एक फिल्म डायरेक्टर—कल इंडियन डर्बी में वड़ी कौन-सा घोड़ा

खेला था मि० राजन।

राजन——दो लाख रुपया लायल प्रिंस खेला था, हार गया।

सिन्हा—मि० राजन !

राजन—हैलो मिस्टर सिन्हा।

तभी एक मेहमान दाखिल होता है तो सिन्हा राजन को इशारा करते हैं। वह उसे रिसीव करने आगे बढ़ता है। रेखा जो अन्दर आ रही थी, समझ लेती है कि उसे ही रिसीव करने आ रहा है। मगर राजन उस मेहमान की तरफ बढ़ जाता है।

राजन—आशा, मिसेज सिंह के लिए कुछ ड्रिंक्स का इन्तज़ाम करो। सिंह साहब आप मेरे साथ आइए।

श्रीमती राजन—बड़ी देर कर दी।

श्रीमती सिंह—ये सब मत पूछिए। सारा शहर छान मारा तब जाकर बड़ी मुश्किल से पुरुषोत्तम भाऊ से ये हीरे का हार मिला। वैसे क़ीमत भी ज्यादा देनी पड़ी।

श्रीमती राजन—बहुत खूबसूरत है। जैसी क़ीमत वैसी चीज़।

एक मेहमान—अरे वाह-वाह, क्या नैकलेस का डिज़ाइन है। कितनी खूबसूरत लग रही हो इसमें ?

श्रीमती सिंह—इन्होंने पैरिस से यह डिज़ाइन बनवा के भेजा है।

राजन—आशा !

रेखा—नमस्ते भाभी !

श्रीमती राजन—चलिए आपको बेगम साहिबा अहमदपुरा से मिलवाती हूं।

श्रीमती सिंह—चलिए।

रेखा शरमाई और झेंपी हुई खड़ी है, क्योंकि उसे हर शख्स ने नज़रअंदाज़ कर दिया है। वह श्रीमती राजन को मुबारकबाद देने आगे बढ़ती है। मगर उसकी बेरुखी देखकर झेंप जाती है। पार्टी में उसे कोई भी अहमियत नहीं देता। वह वापस जाने को मुड़ती है कि सीमा उसे देखकर आवाज़ देती है। रेखा उसे देख घबरा जाती है।

सीमा—हाय रेखा।

रेखा—सीमा !

सीमा—तुम तो पसीने-पसीने हो रही हो।

रेखा—हां सीमा, आज पहली बार इतनी बड़ी पार्टी में शरीक हो रही हूं।

सीमा—अरे जा पगली।

रेखा—मैं मुबारकबाद देकर चली जाऊंगी। मुझसे गाना गाया नहीं जाएगा।

सीमा—अरे मैंने सब मेहमानों से वादा कर रक्खा है। तुम ज़रूर गाओगी।

लड़कियां—अच्छा तो यह गाएंगी ?

एक लड़की—तब तो हमें रोना ही पड़ेगा।

राजन—सीमा ! प्रिन्सेस गीता।

सीमा—भाभी ज़रा इनका ख्याल रखना यह मेरी सहेली रेखा है।

रेखा—नमस्ते भाभी।

सीमा रेखा को भाभी के सुपुर्द करके चली जाती है। मगर भाभी फिर उसे नज़रअन्दाज़ कर देती है और दूसरे मेहमानों



अनूप—एक लेखक !



राजन बाबू --अमीरी की शान !



'आप क्या समझती हैं ? 'सॉरी' विलायती साबुन का टुकड़ा है जो मौलाना साहब के कपड़े साफ कर देगा ?'



'मां तो रौशनी की तरह अमर होती है बेटी! वह आंखों से ज़रूर ओझल हो जाती है लेकिन उसकी छाया हमेशा क़ायम रहती है।'



महेश—आज की एक नयी धारा !



रेखा — आज की सभ्यता !



'हैपी बर्थ डे, सीमा जी !'



'अमीरों के दिल की हालत तुम नहीं जानती सीमा ! लेकिन गरीब चोरी का इल्ज़ाम सहकर भी अपना वादा पूरा करता है।'

का स्वागत करने लगती है।

श्रीमती राजन—हैलो मिस्टर आहुजा !

श्रीमती आहुजा—नमस्ते।

श्रीमती राजन—नमस्ते ! आपने कोई ड्रिंक्स नहीं लिया।

एक मेहमान—यह देवी कौन है ?

दूसरा मेहमान—होगी कोई अनाथाश्रम की चन्दा-वन्दा मांगने वाली।

एक औरत—गुड्डी की सालगिरह मुबारक हो।

श्रीमती राजन—थैंक्स।

महेश—एक्सक्यूज़ मी ! गुड्डी कहां है।

एक औरत—देखिए कितना खूबसूरत है।

महेश—ओह ये तो किंग साइज़ इयरिंग है। गुड्डी के लिए है ? दीदी ऐसा लगता है कि ये गुड्डी की नहीं आपकी सालगिरह है।

श्रीमती राजन—चल शरीर कहीं का। ये मेरा भाई है। कल ही अमेरिका से आया है।

महेश—डैना, डन्का।

रेखा झेंपी हुई चुपचाप उस मेज़ तक चली आती है, जहां तोहफों का ढेर लगा हुआ है। मिसेज़ राजन सालगिरह पर आये हुए तोहफे मेहमानों को दिखा रही हैं। रेखा भी अपना तोहफा उन्हें देना चाहती है मगर मेज़ पर रखे हुए दूसरे कीमती तोहफे देखकर वह ठिठक जाती है। उसे अपना तोहफा उनके मुक़ाबले बहुत साधारण मालूम होता है।

औरत—आइ सी। दूसरे प्रेज़ेन्ट तो दिखाइए।

श्रीमती राजन—चलिए।

औरत—आहा कितने कीमती प्रैज़ेन्ट हैं। ये ट्रांज़िस्टर किसने दिया है ?

श्रीमती राजन—राय बहादुर रमाशंकर ने।

औरत—ये घड़ी का सैट कितना लवली है ?

श्रीमती राजन—पद्मश्री एस० एच० मेहता।

औरत—ये हीरे का सैट किसने दिया है ?

श्रीमती राजन—मि० एण्ड मिसेज़ सिंह।

औरत—चांदी का सैट ?

श्रीमती राजन—बेगम साहिबा अहमदपुरा।

औरत—और ये जापानी डॉल ?

श्रीमती राजन—ये हर हायनैस महन्द्र अली ने।

रेखा खामोशी से अपना तोहफा उस मेज़ पर रख देना चाहती है। लेकिन वहां लोगों की मौजूदगी से झिझक रही है। एक बार मौका पाकर अपना तोहफा मेज़ पर रख देती है। मगर भैया की बात याद आते ही उसे दुबारा उठा लेती है।

अनूप की आवाज़—तब तो इसे वहां कोई नहीं पूछेगा। क्योंकि इस ज़ात के लोग हमेशा यही देखते हैं कि दाम में कौन कितना भारी है।

श्रीमती राजन उसे मेज़ पर से कोई चीज़ उठाते देखती हैं और सोचती हैं कि रेखा ने वहां से कुछ चुराया है।

सीमा—चलो रेखा, मेहमान तुम्हारे गाने का इन्तज़ार कर रहे हैं।

श्रीमती राजन—सीमा, ज़रा सुनो।

सीमा—एक मिनट ठहरो। हां भाभी।

श्रीमती राजन—तुम्हारी सहेली रेखा ने सौगात वाली मेज़ पर से ज़रूर कुछ चुराया है।

सीमा—(आश्चर्य से) चुराया है! ये क्या कह रही हो?

श्रीमती राजन—हां तेज़ी से गुप-चुप उठाकर उसने कुछ अपने आंचल में दबा रखा है। मैंने उसे आंखों से देखा है। अब मैं उसकी तलाशी लेना चाहती हूं।

सीमा—(गुस्से में) ये नहीं हो सकता है। तुमने देखने में ज़रूर कोई भूल की है।

श्रीमती राजन—फिज़ूल मत बको।

सीमा—फिज़ूल क्या? मेरी सहेली पर तोहमत लगाना मेरा अपमान करना है। ये तुम्हारा ओछापन है भाभी।

श्रीमती राजन—दुनिया भर के छोटे आदमियों को मुंह लगाती हो और मुझे ओछा कहती हो।

सीमा—छोटे आदमी!

श्रीमती राजन—और नहीं तो क्या?

रेखा—सीमा मैंने सब सुना है। तुम्हारी भाभी मेरी तलाशी लेना चाहती हैं न? आप मेरी तलाशी ले सकती हैं।

श्रीमती राजन—तुम लो सीमा।

रेखा—तुम्हें मेरी कसम, मेरी तलाशी लो।

सीमा उसकी तलाशी लेकर उसका छिपाया हुआ तोहफा निकालती है। अखबार में लिपटा फ्राक खोलती है, और

उसपर का लिखा वाक्य पढ़कर भाभी की तरफ बढ़ा देती है।

सीमा—'प्यारी गुड्डी को, रेखा आण्टी की तरफ से बहुत प्यार के साथ।' आप ही की बेटी के लिए सौगात लाई थी। छोटी सौगात थी बेचारी शर्मा गई। यह लीजिए।

रेखा—(तोहफा वापस ले लेती है) नहीं सीमा तुम्हारी सहेली के नाते जो सौगात मैं प्यार की निशानी की तरह लेकर आई थी, उसे आज अपनी सच्चाई का सबूत नहीं बनने दूंगी।

महेश—देखा दीदी। इन्सान गरीब होने से चोर नहीं बन जाता। ये जितने आपके मेहमान आए हैं क्या आप इनमें से किसी पर शक कर सकती हैं। नहीं। क्योंकि ये अमीर हैं, बड़े घर वाले हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं। अगर इनमें से कोई आपके सामने चोरी भी कर ले तो आप अपनी आंखों के सामने परदा डाल लेंगी। है न?

सीमा—चलो रेखा मैं तुम्हें घर छोड़ आती हूं।

रेखा—नहीं सीमा, तुम भूल गईं—तुमने सबसे क्या वादा किया था कि आज की पार्टी में मैं गाना गाऊंगी।

सीमा—नहीं—तुम यहां नहीं गाओगी।

रेखा—अमीरों के दिल की हालत तो मैं नहीं जानती सीमा। लेकिन गरीब चोरी का इल्ज़ाम सहकर भी अपना वादा पूरा करता है।

आंखों में आंसू लिए रेखा वह गाना गाती है, जिसे अनूप ने पसन्द किया था। गाने के बोल श्रीमती राजन के कलेजे को छलनी कर देते हैं। लेकिन वह मजबूरी के साथ सुनती रहती हैं।

सौ इल्जाम लगाये,
ओ मेरे नाम लगाये,
आपने सौ इल्जाम लगाये।
चुप क्यों हो गये ?
कहिए कुछ और,
चोरों को सारे नजर आते हैं चोर।

मेहरबानी, शुक्रिया,
घर बुला के बेइज्जत किया,
मेरी तलाशी तो ले ली सरकार,
अपनी गिरहबां में भी
झांकिये एक बार
इस बात पे ज़रा कीजिए गौर
कि चोरों को सारे नजर आते हैं चोर।

क्योंकि मैं हूं एक गरीब
बेसहारा और बदनसीब,
ताने हज़ारों सहे होके
मजबूर
पर अब मैं चुप न रहूंगी
ऐ हुजूर,
हां-हां मचा दूंगी मैं आज शोर
कि चोरों को सारे नजर आते हैं चोर।

गाना खत्म होने पर रेखा रोती हुई सीमा का घर छोड़ देती है। सीमा उसे रोकने की कोशिश करती है मगर वह नहीं रुकती।

□ □

रेखा पार्टी से उदास और रंजीदा लौटती है। अनूप उसे जल्दी वापस आते देख आश्चर्य करता है।

अनूप—रेखा, इतनी जल्दी वापस आ गई। क्या बात है। ये तोहफा क्यों वापस ले आई।

रेखा—ऐसे ही भैया।

सीमा रेखा के पीछे ही अनूप के घर में दाखिल होती है। सीमा को देखते ही अनूप को उसकी पहली मुलाकात याद आ जाती है।

सीमा—दरअसल रेखा का हमारे घर में अपमान हो गया था।

अनूप—ओह तो आप हैं दूसरों की इज्ज़त पर कीचड़ उछालने वाली? आज पता चला, आपका तो पूरा घराना ही ऐसा है।

सीमा—मैं अपने घराने की तरफ से आपसे माफी मांगने आई हूं।

अनूप—बिना क़सूर जाने कैसे माफ कर दूं? क्या हुआ था रेखा?

रेखा—(टोकते हुए) वो बाद में सुनना भैया। तू घर जा सीमा।

सीमा—मैं देखते ही समझ गई थी कि तेरे भैया से अच्छे बर्ताव की उम्मीद नहीं।

अनूप—जिनके घर से मेहमानों को ज़लील होकर आना पड़े उनके साथ ये बर्ताव भी कम है।

रेखा—भैया!

सीमा—सारी बातें सुने बिना ही···

अनूप—रेखा के आंखों के आंसू आपके बर्ताव की पूरी दास्तान

कह रहे हैं। आप जा सकती हैं।

सीमा अपना अपमान बरदाश्त न कर सकने के कारण, उसके घर से वापस चली जाती है।

अनूप—रेखा—बताओ क्या बात हुई ?

रेखा—सीमा की भाभी को शक हो गया था कि मैंने मेज़ पर से कोई चीज़ चुरा ली है।

अनूप—(उत्तेजित होकर) चोरी ! यह कलंक एक औरत ने लगाया था—वर्ना···वर्ना क्या कर लेता ? दुःखी मत हो रेखा, ये अपमान सिर्फ हमारा नहीं उस जाति का है जिसे गरीब कहा जाता है।

मां—अनूप, रेखा आ गई क्या ?

अनूप—हां मां आ गई है।

मां की आवाज सुनकर दोनों चुप हो जाते हैं। रेखा गिड़-गिड़ाकर भैया से कहती है।

रेखा—भैया मां से कुछ मत कहिएगा, वर्ना उसका जी दुखेगा।

अनूप अपने बदन की कपकपाहट को समेटे खामोश हो जाता है।

□ □

२

दूसरी सुबह अनूप घर से बाहर जाने की तैयारी में है। रेखा और मां कमरे में आती हैं। अनूप ज़रा ठिठक जाता है।

रेखा—अरे भैया, आज सुबह-सुबह ये बिना खाये-पिये कहां चल दिये।

अनूप—रेखा आज मकान मालिक से वादा किया है, उसे किराया देना है और तुम्हें भी तो पैसे भरने हैं। ज़रा प्रकाश के पास जा रहा हूं···देखूं मेरे उपन्यास का क्या हुआ ?

मां—अनूप !

अनूप—हां मां।

मां—कल पंडित जी की चिट्ठी आई है—उन्होंने रेखा के लिए एक लड़का देखा है—घराना भी अच्छा है और है भी अपनी जाति का। मगर वह लोग अगले महीने ही शादी का मुहूर्त निकलवाना चाहते हैं।

अनूप—अगले महीने मां ?

मां—यह रिश्ता हाथ से नहीं जाना चाहिए।

अनूप—मां, इतनी जल्दी सारा इन्तज़ाम कैसे होगा ?

रेखा—मां मैं इतनी जल्दी शादी नहीं करना चाहती।

मां—तू चिन्ता न कर बेटा, मैंने सब सोच लिया है। गांव वाली ज़मीन जो रेहन पड़ी है, उसे बेचकर रेखा के हाथ पीले कर देंगे।

रेखा—अब मैं तुम दोनों पर इतना बोझ बन गई हूं कि भैया···

अनूप—पगली, बहन और बेटी भी भला किसी पर बोझ बनी हैं। मगर ज़माने का दस्तूर तो निभाना ही पड़ता है।

मां—हां बेटी।

अनूप—मां, पंडित जी को चिट्ठी लिख दो कुछ न कुछ इन्तज़ाम हो जायेगा।

वह यह कहकर बाहर जाने को बढ़ता है। रेखा उसकी कमीज़ देखती है, जो कालर पर फटी है, तो उसे टोक देती है।

रेखा—तुम्हारी कमीज फट गई है भैया। उतार दो मैं अभी सिये देती हूं।

अनूप—पगली, सुई-जैसे हथियार से कहीं गरीबी-जैसे दुश्मन का मुकाबला हुआ है? यही ठीक है।

वह यह कहकर चला जाता है। लेकिन उसके मुंह से निकली सच्चाई रेखा को खामोश कर देती है। न जाने इस हकीकत में डूबी वह कब तक गुम-सुम खड़ी रहती है।

अनूप वहां से सीधे अपने दोस्त प्रकाश के पास जाता है, जो एक पुस्तकालय का मैनेजर है। प्रकाश अपने आफिस में बैठा है। अनूप को देखते ही उसका स्वागत करता है।

प्रकाश—आओ भई अनूप आओ। आजकल तो तुम्हारे दर्शन ही नहीं होते।

अनूप—अब तो सुबह से शाम तक दर्शन ही दर्शन होंगे।

प्रकाश—मतलब ?

अनूप—दिल की आवाज़ ज़ुबान तक आ गई, अखबार 'आवाज' वालों ने छुट्टी कर दी।

प्रकाश—यार अनूप इस तरह कब तक काम चलेगा। आखिर अपनी बूढ़ी मां और जवान बहन का तो ख्याल करो। पिछली बार तुम कहते थे कि रेखा की शादी तय हो रही है।

अनूप—यही जिम्मेदारी तो मुझे आज यहां खींच लाई है। अच्छा मेरे उपन्यास का क्या हुआ ?

प्रकाश—'ज़िन्दगी में सबका एक-सा हक है, सब तसलीम करेंगे। सारी खुशियां सारे दर्द बराबर हम तकसीम करेंगे।' तुम्हारी ये इन्कलाबी दो लाइनें पढ़ते ही हर पब्लिशर इसे छापने से इन्कार कर देता है। मेरी एक बात मानोगे अनूप ?

अनूप—बोलो !

प्रकाश—तुम अपने लिखने का ढंग बदल दो।

अनूप—तुम भी यही कह रहे हो प्रकाश ? जिनके सुख-दुःख की कहानी आज हमें दुनिया को सुनानी है, अगर उनकी ज़िन्दगी के साथ पढ़नेवालों की सही जान-पहचान न हुई तो लिखना, लिखना नहीं—महज़ कलम घिसाना होगा।

प्रकाश—खैर बहस के लिए तो सारी ज़िन्दगी पड़ी है। फिलहाल ये लो डेढ़ सौ रुपये—तुम्हारे पिछले आर्टिकल का मेहनताना।

अनूप—शुक्रिया।

प्रकाश—और हां, मॉडर्न इन्डस्ट्रीज़ को एक पब्लिसिटी ऑफिसर की ज़रूरत है।

अनूप—लेकिन यह नौकरी मुझे नहीं मिलेगी।

प्रकाश—भई कोशिश करने में तो कोई नुकसान नहीं न ! यह

नो पता।

अनूप—राजन चौधरी।

वह हाथों में राजन चौधरी का कार्ड थामे उसका पता गौर से पढ़ता है।

□ □

महेश राजन के ऑफिस में जाना चाहता है, मगर उसकी सेक्रेटरी उसे रोकती है। वह उससे अपना परिचय कराना चाहता है, लेकिन वह उसकी एक नहीं सुनती। महेश एक बार फिर कोशिश करता है तो वह झुंझलाती है।

रिसेप्शनिस्ट—आज मिस्टर राजन किसी से नहीं मिल सकते।

महेश—लुक मिस, हम किसी-विसी में नहीं। आइ ऐम ए डिफरैन्ट थिंग।

रिसेप्शनिस्ट—आप कोई भी हों आज उनसे मुलाकात नहीं हो सकती।

महेश—और जब तक हम उनसे नहीं मिलेगा, हम नहीं जायेगा। इधर धरना मारकर बैठ जायेगा।

रिसेप्शनिस्ट—ये क्या बदतमीजी है? धरना देना है तो सड़क पर जाकर बैठो, यू हिप्पी।

महेश—लुक मिस, हम इंडियन हिप्पी है, इसलिए कपड़ा पहनकर बैठा है अगर हम फॉरेन हिप्पी होता तो नंगा बैठता।

रिसेप्शनिस्ट—यू शट् अप।

महेश—लवली। ब्यूटीफुल, वन, टू, थ्री।

रिसेप्शनिस्ट—ये क्या गिन रहे हो?

महेश—आपके खूबसूरत पेट का बल गिन रहा हूं।

रिसेप्शनिस्ट—ये क्या बदतमीज़ी है ?

महेश—लुक मिस, हम ये समझा कि आप अपना खूबसूरत पेट दर्शन का वास्ते खुला रक्खा। अगर हम दर्शन नहीं करेगा तो शायद आप बुरा मान जायें।

तभी राजन की आवाज़ डिक्टाफोन पर सुनाई देती है और वह उसे जवाब देने लगती है।

राजन की आवाज़—मिस रीटा, वह लैटर टाइप हुआ ?

रिसेप्शनिस्ट—यस सर, वो लैटर मैं अभी टाइप करती हूं।

जैसे ही डिक्टाफोन की आवाज़ बन्द होती है, वह उस हिप्पी पर नज़र डालती है तो कांप उठती है। उसकी व्यस्तता का फ़ायदा उठाकर महेश बिना इजाज़त अन्दर घुस जाता है।

महेश छिपता हुआ अन्दर दाखिल होता है। जहां मॉडर्न इन्डस्ट्रीज़ के डायरेक्टरों की मीटिंग हो रही है। वह चुपचाप एक कोने में बैठकर उनकी बातचीत सुनने लगता है। राजन बाबू के तेवर देखकर उसे कुछ अजीब-सा लगता है।

राजन—जैन्टलमैन ये है चैरिटेबल हॉस्पिटल का मॉडेल जो कि हमारी ज़मीन पर, जहां गरीबों की बस्ती आबाद है, बीस लाख रुपये की लागत से बनाया जायेगा और इसके लिए सिर्फ आप लोगों को दो-दो लाख रुपयों का दान देना होगा।

एक डायरेक्टर—हं हं हं, आप कुछ बीमार मालूम होते हैं मिस्टर राजन ?

दूसरा—लेकिन आप तो इस बस्ती में रेस के घोड़ों का अस्तबल बनाना चाहते थे ?

तीसरा—इसी एश्योरैंस पर हमने रेस-कोर्स के आक्शन में दस लाख के घोड़े खरीदे।

चौथा—हम यहां रुपया कमाने के लिए जमा हुए हैं, खैरात करने नहीं।

पांचवां—'हमको हॉस्पिटल से नहीं, पैसे से मोहब्बत है।

राजन—आपकी यह मोहब्बत नई-नई है। मेरी रुपये से खैंदायशी मोहब्बत है। बाप-दादा के वक्त से चली आ रही है। लेकिन आजकल रुपया कमाने के ढंग बदल गये हैं। आप लोग अपने दिमाग के दरवाजे खुले रखिए। गरीबों की ये बस्ती जो हमारी ज़मीन पर आबाद है, उससे हमें क्या मिलता है—दो हज़ार रुपया महीना ?

पहला डायरेक्टर—लेकिन यह हॉस्पिटल बनने से पहले ही दो-दो लाख रुपया हमारी जेब से लिया जा रहा है।

राजन—लेकर जायेगा कहां ? मिस्टर शर्मा हॉस्पिटल के लिए किस-किस चीज़ की ज़रूरत होती है ?

डायरेक्टर—डॉक्टर और बीमार लोग।

राजन—छी ! और जो ये फॉरेन ड्रग्स, और सर्जिकल इन्स्ट्रूमैन्ट्स का लाइसेन्स मिलेगा, उसका क्या होगा ?

डायरेक्टर—समझा। आपका मतलब है खुले बाज़ार में···

राजन—मुंहमांगे दामों पर बेचा जायेगा।

डायरेक्टर—मिस्टर राजन क्या हम देश के हर बड़े शहर में इस तरह चेन आफ़ हॉस्पिटल नहीं बना सकते ?

राजन—श्योर, वाइ नॉट।

आहूजा—राजन, इन रेस के घोड़ों के अस्तबल का क्या होगा ?

राजन—आहूजा, यू हैव गाट ए मिनी ब्रेन। हॉस्पिटल के लिए

इतनी जमीन चाहिए। और जो बाकी इतनी बड़ी ज़मीन बच जायेगी उसका क्या होगा ? वहां पर घोड़ों का स्टैंड तो क्या, हम एक मिनी रेस-कोर्स बना सकते हैं।

एक डायरेक्टर—वन्डरफुल, जवाब नहीं आपके दिमाग का। मेरे ख्याल में तन्दुरुस्त घोड़ों की आबोहवा से हॉस्पिटल के मरीज़ बगैर दवाई के अच्छे हो जायेंगे।

अचानक वे लोग अपने सामने महेश को देखकर घबरा जाते हैं। महेश उनकी कपकपाहट का एहसास करके मुस्करा देता है।

महेश—घबराइये नहीं, मैं एनफोर्समैन्ट वाला नहीं, मैं इनका साला हूं, यानी कि आधा घरवाला।

सभी डायरेक्टर—मिस्टर राजन कल तक हम लोगों के चैक पहुंच जायेंगे।

राजन—थैंक यू जैण्टलमैन, गुड लक टू ऑल ऑफ़ अस।

बारी-बारी से सब डायरेक्टर ऑफिस से बाहर चले जाते हैं और राजन बाबू फिर अपने काम में मशगूल हो जाते हैं। महेश गौर से उनके चेहरे का रंग देखने लगता है। तभी राजन मेज पर रखा एक कार्ड देखकर सेक्रेटरी को आगाह करता है।

राजन—सैण्ड हिम इन।

थोड़ी ही देर में सामने के दरवाजे से अनूप अन्दर आता है। राजन बाबू के ठाठ देखकर एक क्षण वह रुकता है। राजन

बाबू पहले उसे फिर उस कार्ड को दुबारा देखते हैं।

राजन—'श्री अनूप लेखक।' लेखक ! ये सर नेम तो पहले कभी नहीं सुना।

अनूप—जी लिखना मेरा पेशा है। शर्मा या वर्मा लिखने से ये ज़ाहिर नहीं होता कि कलम का मजदूर हूं। इसलिए लिखता हूं लेखक !

महेश—क्या बात है। जैसे जयपुरी, सुल्तानपुरी, लुधियानवी लिखने से ये ज़ाहिर नहीं होता कि वहां के सब लोग राइटर ही होते हैं—अरे, फ़ाइटर भी हो सकते हैं।

राजन—लेकिन यह नाम से पहले इतनी बड़ी श्री किसलिए लगा रक्खी है ? इसका भी कोई खास मतलब है क्या ?

अनूप—जी हां ज़रूर है। देखिये ज़िन्दगी में और कहीं तो श्री रही नहीं, रह गई है तो सिर्फ नाम के साथ। इसलिए बड़े हर्फ़ों में लिखता हूं ताकि लोग इज्ज़त के साथ नाम लें। शायद आप बैठने के लिए नहीं कहेंगे—इजाज़त हो तो बैठ जाऊं ?

राजन—हां-हां, ज़रूर बैठिये। कैसे तशरीफ लाये ?

अनूप—जी, नौकरी की उम्मीद में।

राजन—लेकिन कल तक तो आप अखबार 'आवाज़' में रिपोर्टर थे ?

अनूप—अरे आप तो पहचान गये। अब तो यकीनन आप मुझे बाहर जाने के लिए कहेंगे। बैठने से दोनों का वक्त ज़ाया होगा।

राजन—अजी, बैठिये न !

महेश—प्लीज़ सिट।

राजन—प्लीज़ सिट डाउन। आपका ढंग तो कुछ ऐसा है कि गोया हुआ हुआ, नहीं हुआ तो कोई पर्वाह नहीं। काम मिलने पर

कीजिएगा तो तबीयत से ?

अनूप—काम मेरे लिए पूजा है। मैं हमेशा लगन से करता हूं।

राजन—दरअसल मुझे भी लिखने-पढ़ने से दिलचस्पी है।

महेश—इनकी भी एक शानदार लायब्रेरी है।

राजन—मैंने आपकी चीजें पढ़ीं, कल आपके ख्यालात भी सुने। मुझे बहुत पसन्द आये। नौकरी आपको मिल सकती है। हमारे बैंक, कॉटन मिल्स, पेपर मिल्स, टी एस्टेट्स, कोल माइन्स—इन सबकी पब्लिसिटी के इन्चार्ज आप हैं।

अनूप—फिर अपनी नौकरी के बारे में आप ही की बात आखिरी समझूं ?

राजन—ऑफ़ कोर्स !

महेश—इन सब कम्पनियों के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं आपके पिताजी जो आजकल वर्ल्ड टूर पर हैं। और इसलिए आजकल सारा कारोबार सम्भाल रहे हैं मेरे जीजा जी।

अनूप—नियोग-पत्र तो मिलेगा न ?

महेश—प्रेम-पत्र तो सुना था, ये नियोग-पत्र क्या होता है ?

राजन—नियोग-पत्र, यू मीन एपाएन्टमैन्ट लैटर। क्या आप अंग्रेज़ी के अल्फ़ाज़ बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करते।

अनूप—भगवान की कृपा से अंग्रेज़ी भी बोलता हूं—चूंकि दोनों ज़बानें अच्छी तरह जानता हूं, इसलिए मिलावट की ज़रूरत नहीं समझता।

राजन—ठीक है। आप कल से ज्वायन कर सकते हैं।

तभी सेक्रेटरी की आवाज़ डिक्टाफोन पर सुनाई देती है और अनूप राजन से जाने की इजाज़त मांगता है। राजन उसे ठहरने के लिए इशारा करता है।

रिसेप्शनिस्ट—सर, मिस्टर साठे आपसे मिलना चाहते हैं।

अनूप—(जाने की मुद्रा में) नमस्ते।

राजन—सुनिये—किस मुश्किल में डाल देते हैं ये लोग ? कह रहे हैं कि कल नशाबन्दी जलसे में मुझे सदारत करनी होगी। अब आप ही बताइये कि मैं प्रोहिबिशन पर बैठकर स्पीच लिखूं या अपना काम-काज देखूं।

अनूप—यह तो सच बात है।

राजन—ऐसा कीजिए ना...आप ही लिख डालिए एक जोशीली-सी स्पीच।

अनूप—जी !

राजन—जी हां। दो-चार जगह दौलत और दौलतमन्दों को गालियां सुनाते हुए खासी बड़ी-बड़ी बातें झाड़ दीजिए।

अनूप—लेकिन गालियां तो सिर्फ आप ही पर पड़ेंगी।

राजन—पड़ने दीजिए। पाप्युलर होने के लिए सब कुछ करना पड़ता है।

अनूप—गालियां खुद अपने-आपको दे लीं या किसी दूसरे ने दीं। दिमाग तो कोई छीनता नहीं।

राजन—इसी दिमाग से तो समाज की चोटी पर हम ही हम नजर आते हैं।

अनूप—दिमाग हो न हो लेकिन दिमाग खरीदने की हैसियत जरूर है आप लोगों में।

महेश—मुझमें नकद खरीदने की हैसियत नहीं, मुझे थोड़ा-सा उधार दीजिएगा मैं आपको अपना गुरु मान लूंगा।

अनूप—जी, आपको भाषण कल मिल जायेगा। नमस्ते।

राजन—थैंक यू।

महेश—ओ के जीजा जी !

जैसे ही अनूप बाहर जाता है राजन बाबू खुश होकर अपनी सेक्रेटरी से बात करते हैं।

राजन—मिस्टर साठे से बोल दो कि हम सभापति बनेंगे।

अनूप और महेश राजन के ऑफिस से बाहर निकलते हैं। अनूप के जाने से पहले ही महेश उसका रास्ता रोक लेता है।

महेश—आइये गुरुजी। आपने तो कमाल कर दिया। जिस आदमी की उंगली पर सारी मार्किट नाचती है, आपने उसको नचा दिया ?

अनूप—देखिए, ना मैं किसी को नचाता हूं और ना ही किसी के इशारे पर नाचता हूं।

रिसेप्शनिस्ट—(महेश को पुकारती है) मिस्टर महेश !

महेश—एक्सक्यूज़ मी। तो आपने मेरे को पहचान लिया ?

रिसेप्शनिस्ट—आइ ऐम सॉरी। आपका फोन—मिस्टर अशोक आपसे बात करना चाहते हैं।

महेश—अरे बाप रे !

महेश घबरा कर भागने लगता है। अनूप उसे पकड़ लेता है।

अनूप—इन्सान या तो किसी चीज़ के लिए भागता है या किसी चीज़ से डरकर भागता है। आप ?

महेश—मैं ! मैं झूठ नहीं बोलूंगा गुरुजी, मैं डरकर भाग रहा हूं।

अनूप—तब तो दिमाग उधार देना ही पड़ेगा। मर्द वह जो हालात का मुकाबला करे।

महेश—मर्द वह…

अनूप—जो हालात का मुकाबला करे।

महेश—थैंक यू गुरुजी। मिस कह दो कि मर्द आ रहा है।

जैसे ही अशोक राजन बाबू की सेक्रेटरी का फोन सुनता है वह खुश होकर लिली को महेश के पार्टी में आने की खुशखबरी सुनाता है। लिली की आंखें भी चमक उठती हैं।

अशोक—ओह दैट्स सो वन्डरफुल न्यूज। महेश हमारी पार्टी में आ रहा है। मिस रीटा तुम भी हमारी पार्टी में ज़रूर आना। वाव वाव यू आर लुकिंग ए किलर। अरे ये ड्रेस में तुम कितनी जंच रही हो ?

लिली—भैया, दौलतमन्द हसबैंड पाने के लिए उसी के रंग में रंगना पड़ता है। देख लेना आज मैं उस हिप्पी को अमेरिका भुला दूंगी।

अशोक—आइ गैट इट, आइ गैट इट, आइ गैट इट। याद है गुड्डी की बर्थ-डे पार्टी में सीमा महेश की पर्सनैलिटी की तारीफ करती थी।

लिली—तो तुम भी क्यों नहीं बदल जाते। एक तरफ महेश भी खुश हो जायेगा और दूसरी तरफ सीमा।

अशोक—इट इज़ सम थिंग। सम थिंग—ग्रेट आइडिया !

महेश सीमा से अशोक की पार्टी में चलने की विनती करता है। जब वह नहीं मानती तो उसे वहां जाने की अहमियत समझाता है।

महेश—समझीं ?

सीमा—नहीं महेश भया नहीं, मैं इस हिप्पी पार्टी में नहीं जाऊंगी।

महेश—ओह सीमा, क्या तुम भी मुझे सचमुच ही हिप्पी समझती हो ? देखो लिली की इस पार्टी में तुम्हें जरूर जाना होगा···प्लीज़।

सीमा—नहीं भैया मैं नहीं जाऊंगी।

महेश—अरे मेरी बात तो सुनो। सीमा, एक बार मेरी मदद करो उसके बाद देखो। मेरे गुरु की कसम, वो लिली हमेशा के लिए मेरा पीछा छोड़ देगी और वो डैमेजिंग डिस्गस्टिंग अशोक तुम्हारे साये से दूर भागेगा।

सीमा—वह कैसे ?

महेश—कैसे क्यों कर—मुझ पर छोड़ो। लेकिन एक शर्त है।

सीमा—क्या ?

महेश—जैसा देश···

आखिर महेश सीमा के साथ जब उस पार्टी में पहुंचता है तो सीमा के दिल को एक धक्का-सा लगता है। आज वह भी इन जानवरों के साथ मिलने के लिए भेष बदलकर आई है। वहां का रंग-ढंग देख वह घबरा जाती है। महेश उसको हिम्मत बंधाता है, और उसे खींचकर गाने लगता है। अशोक और लिली उसकी दी हुई ताल पर नाचने लगते हैं। सीमा भी उस रंग में रंग जाती है।

तू···
आ गया···
वाह अरे वाह वाह···
अरे वाह रे वाह रे वाह

वाह् रे नौजवान आजकल के •
रंग रूप अपना बदल के
अरे देखो रे देखो,
अरे देखो रे देखो
आ गये बहुरूपिये।
वाह् रे···

जीते नहीं, मरते नहीं
काम कोई करते नहीं
इनकी है कहानी ये ही
इनकी है निशानी ये ही
बिखरी जुल्फें और दुपट्टे ढलके
वाह् रे···

हाय रे हाय जिया बल खाये
हाय सीधा सादा छोरा···आ
बन गया परदेसी गोरा···आ
हाय सीधी सादी नारी
बन गयी तिरछी कटारी
निम्बोली, इमपो पोड़ी
इंग नापा पाली पाली परदे से बाहर निकलके
वाह् रे·········

जिनकी ये तहज़ीब है वो
आप ही पछता रहे हैं
वो इधर को आ रहे हैं
ये उधर को जा रहे हैं
रोयेंगे एक रोज़ हाथ मल के,
वाह् रे······

गाते-गाते लिली एक धक्का देती है। महेश गाना बन्द करते ही झुंझला जाता है।

अशोक—क्या है?

लिली—भैया इन्होंने झूठ-मूठ का हिप्पी बनकर हम दोनों को धोखा दिया।

सीमा—नहीं आज तुम दोनों खुद अपने धोखे में फंस गए। महेश भैया तो तुम लोगों से जान बचाने के लिए हिप्पी बने हुए थे।

महेश—हुं···आज मुझे मालूम हुआ कि दौलत के लिए तुम लोग हिप्पी और जिप्पी तो क्या बल्कि सिप्पी भी बन सकते हो।

महेश—चलो सिस्टर।

सीमा—बाय बाय हिप्पी।

महेश—बाय बाय सब।

लिली—भैया।

अशोक—ना रो, ना ना ना, ना रो। अप्लाई अप्लाई नो रिप्लाई हुई तो क्या हुआ, लेकिन इस अप्लाई पर मैं रिप्लाई देके रहूंगा। रो रों, ना ना।

□ □

उसी रात अनूप अपने छोटे से मकान में अकेला बैठा राजन बाबू के लिए भाषण लिखने में लीन है। तभी उसकी मां और रेखा सत्यनारायण की पूजा से लौटती हैं और अनूप को अपने काम में लगा देखकर क्षणभर के लिए रुकती है।

मां—अनूप!

अनूप—हां मां।

मां—तू सत्यनारायण की कथा में नहीं आया बेटा। बस्ती के सभी

लोग तेरी राह देख रहे थे।

अनूप—मां मैं ज़रा नये काम में उलझ गया था।

रेखा—भैया सुना तुमने। बस्ती में एक चैरिटेबल हॉस्पिटल बननेवाला है।

अनूप—अच्छा।

रेखा—हूं।

मां—शुक्र है भगवान का, धनवानों को गरीबों के इलाज का ख्याल तो आया।

अनूप—हां मां इन धनवानों को गरीबों के इलाज का ख्याल तो कभी-कभी आता है मगर ग़रीबी के इलाज का ख्याल कभी नहीं आता।

मां—प्रसाद ले।

रेखा अनूप को एक भाषण लिखते देख आश्चर्य करती है, और झुककर लिखे भाषण को पढ़ने की कोशिश करती है।

रेखा—भैया यह लिखकर भाषण देना कब से शुरू कर दिया ?

अनूप—पगली मैं लिखकर भाषण नहीं, बल्कि भाषण लिखकर दे रहा हूं—अपने नये मालिक को।

रेखा—इसका मतलब यह हुआ कि तुम दिमाग बेचकर आए हो ?

अनूप—नहीं, मैंने मंजिल नहीं बदली, हां रास्ता बदल दिया है। आवाज़ उनकी ख्यालात मेरे।

मां—अरे तुम दोनों बहन-भाई खाना भी खाओगे या बातें ही करते रहोगे ? एक बज चुका है बेटा।

अनूप—तुम खाना लगाओ, मैं एक काम करके आता हूं।

रेखा—जल्दी आना।

अनूप पीछे के दरवाजे से मकान मालिक के घर की तरफ जाता है।

□ □

दूसरे दिन राजन दफ्तर में बैठा अपने काम में लगा है। कम्पनी का एक डायरेक्टर उसे गिरते हुए बाजार-भाव की जानकारी देता है। फिर भी राजन उसकी बात से बिल्कुल घबराता नहीं।

डायरेक्टर—(घबराकर) आपने चावलों के स्टाक के बारे में क्या सोचा ?

राजन—हूं।

डायरेक्टर—अबकी फसल बहुत अच्छा हुआ।

राजन—हूं।

डायरेक्टर—मार्केट तेजी से नीचे जा रहा है।

राजन—हूं।

डायरेक्टर—सस्ते दामों पर बेच डालिए नहीं तो भारी नुकसान रहेगा।

राजन—हम नुकसान बरदाश्त नहीं कर सकते। कितने गोदामों में चावल भरे हैं ?

डायरेक्टर—बीस गोदामों में।

राजन—दस को आग लगा दीजिए।

डायरेक्टर—जी !

राजन—इन्श्योरेन्स से सारे पैसे क्लेम कर लीजिए। भाव नहीं गिरना चाहिए। जाइए जला दीजिए।

उसी वक्त अनूप वहां प्रवेश करता है, और उनकी बात-चीत

के आखिरी वाक्य सुन लेता है। दोनों उसे देखकर चौकन्ने हो जाते हैं।

अनूप—जलने-जलाने की बातें इस गर्मी में। खैरियत तो है राजन बाबू ?

राजन—मिस्टर अनूप ! देश में भूख बढ़ती जा रही है। हर साल मैं कुछ चावल स्टाक कर लेता हूं जो कि गरीबों में बांट दिए जाते हैं।

अनूप—अच्छा।

राजन—इस साल उनकी किस्मत देखिए। चावलों में कीड़ा लग गया है—बीमारी का डर है। इसलिए मैं चावलों को जलवाने के लिए कह रहा था। गरीब भी आखिर इन्सान होते हैं हमारी और आपकी तरह ?

अनूप—इन्सान अपनी तरह तो जानता हूं। लेकिन आपकी तरह मैं नहीं जानता।

राजन—देखिए आपका ये जो बात-चीत करने का तरीका है, इससे पिताजी के सामने आपकी नौकरी दम भर भी नहीं टिकेगी। वह तो मालूम नहीं क्यों इन्टेलेक्चुअल्स के लिए मुझमें एक कमज़ोरी-सी है।

अनूप—ये रहा आपका भाषण ! देख लीजिए कहीं कोई कमज़ोरी न रह गई हो।

राजन—डैम गुड स्टार्ट। दोस्तो, दुनिया में तरह-तरह के ज़हर होते हैं लेकिन इनमें सबसे खतरनाक ज़हर है शराब—

तालियों की गूंज के साथ ही नज़ारा बदलता है, और हम राजन बाबू को स्टेज पर खड़े शराबबन्दी पर भाषण देते हुए सुनते हैं। वह ही इस सभा के सभा-पति हैं। श्रीमती राजन, सीमा, अशोक, लिली, महेश, मिल-मज़दूर और दूसरे कई

लोग जलसे में मौजूद हैं। सभी राजन के भाषण से प्रभावित होते हैं। खासतौर से महेश को भाषण बहुत पसन्द आता है। वह बार-बार उसके बारे में सोचने लगता है।

राजन—दोस्तो, दुनिया में किस्म-किस्म के जहर होते हैं और उनमें सबसे ज्यादा खतरनाक जहर है शराब—

फारसी में शर का मतलब है फसाद और आब का मतलब है पानी। शराब यानी फसाद का पानी। यह वो समुन्दर है जिसका कोई किनारा नहीं। यह वो भंवर है जिससे कोई छुटकारा नहीं। यह वो बददुआ है जिसके लग जाने के बाद इन्सान का कोई सहारा नहीं। पहले इन्सान शराब पीता है, फिर शराब इन्सान को पीती है।

अगर दुनिया में सचमुच कोई अछूत है, तो वह इन्सान नहीं, शराब है, सिर्फ शराब। बदतमीजी इसका जेवर है—बदनसीबी इसका लिबास और बदचलनी इसका ओढ़ना-बिछौना। जैसा कि एक शायर ने कहा है—

सबको मारा 'जिगर' के शेरों ने।
और 'जिगर' को शराब ने मारा॥

उसी भाषण से प्रभावित होकर महेश घर लौटता है तो सीधा अपने जीजा जी के बार-रूम में आता है। शराब की खूबसूरत और रंगीन बोतलों को देखकर एक बार फिर से राजन बाबू के शब्द उनके कानों में गूंजने लगते हैं। और न जाने क्या सोचकर वह उन बोतलों को फर्श पर पटकने लगता है।

महेश—वाह वाह वाह वाह ! दुनिया को मारा जीजा जी के

लैक्चर ने और जीजा जी के बार को महेश ने मारा।

लिली—(प्रवेश करती है) ये क्या है ? ये इतनी सारी बोतलें कैसे टूटीं ?

महेश—ऐसे ।

वह महेश पर गुस्सा करती है और अपने भाई अशोक को आवाज देती है।

लिली—इतनी कीमती शराब की बोतलें, ये तुम क्या कर रहे हो ?

महेश—शर और आब, यानी फसाद का पानी।

लिली—अशोक भैया !

महेश—दुनिया का सबसे खतरनाक जहर है शराब ।

अशोक उसी घबराहट में अन्दर दाखिल होता है। और एक टूटी हुई बोतल उठाना चाहता है तो महेश एक डंडा उसके हाथ पर मारता है, वह दर्द से कराह उठता है।

अशोक—अरे, आज की पार्टी का क्या होगा ?

महेश—इस दुनिया में अगर कोई अछूत है तो वह इन्सान नहीं, बल्कि शराब है। आ···

श्रीमती राजन—महेश ! ये सब क्या कर रहे हो ?

महेश—यह वो बद्दुआ है बहन जिसके लग जाने के बाद इन्सान का कोई सहारा नहीं।

शोर-गुल सुनकर राजन अपने बार-रूम में दाखिल होता है।

वह टूटी-फूटी बोतलें और बार-रूम की हालत देख परेशानी में पड़ जाता है, और झुंझलाकर महेश को डांटता है।

राजन—ये क्या बद्तमीज़ी है ?

महेश—बद्तमीज़ी इसका ज़ेवर है और बदनसीबी इसका लिबास और बदचलनी इसका ओढ़ना-बिछौना।

राजन—क्या तुम पागल हो गए हो महेश ?

महेश—जीजा जी ! जीजा जी मैं आपको, मैं आपको इस भंवर से छुटकारा दिलवाना चाहता हूं। अरे यह कैसे बच गई ?

राजन—वह मेरा भाषण दूसरों के लिए था अपने लिए नहीं।

महेश—अपने लिए नहीं ?

राजन—नहीं।

महेश—तो फिर ये माला पहनने का हकदार भी कोई दूसरा है, आप नहीं।

महेश राजन के हाथ से माला छीन लेता है और वहां से चला जाता है। राजन सर पीटकर रह जाता है।

राजन—महेश !

महेश—मैं असली हक़दार को माला पहनाकर आता हूं।

राजन—देख ली अपने भाई की करतूत ?

लिली—मैं तो कहती हूं जल्दी से हमारी मैरिज कर डालो।

अशोक—वर्ना महेश के साथ लिली भी पागल हो जाएगी।

□ □

रेखा सिलाई की मशीन पर अपना ब्लाउज़ सी रही है कि

इतने में दरवाजे पर दस्तक होने से वह चौंकती है, और उलझी नजरों से दरवाजे की तरफ देखती है। पुनः कोई दरवाजा खटखटाता है। वह जल्दी से जाकर दरवाजा खोल देती है। सामने महेश माला लिए खड़ा है, और रेखा को ही अनूप समझकर उसके गले में माला डाल देता है। और फिर घबराकर रेखा की तरफ देखने लगता है।

महेश—गुरु जी की जय! ना-ना!

रेखा—(क्रोध में) ये क्या बद्तमीज़ी है। शरम नहीं आती एक गैर लड़की के गले में माला डालते हुए। कौन हैं आपके गुरु?

महेश को जब अपनी ग़लती का एहसास होता है तो वह कांप उठता है। घबराहट में उसका बदन पसीने से शराबोर हो जाता है।

महेश—मैं गुरु जी का चेला हूं।

रेखा—गुरु जी का चेला?

महेश—आपका साला हूं।

रेखा—जी?

महेश—नहीं, मैं राजन बाबू का जीजा जी हूं।

रेखा—ये आप क्या बक रहे हैं?

महेश—हां मैं बक रहा हूं। मैं नहीं, देखिए, देखिए वो मेरे जीजा जी हैं। मैं उनका जीजी जी नहीं हूं। उस दिन, आप, आपके बर्थ-डे पर, सीमा जी ने गाना गाया था आपके घर में।

रेखा—मेरे घर में?

महेश—हं, नहीं आपके घर में नहीं हमारे घर में—मेरी दीदी के

घर में—मेरी भांजी की बर्थ-डे पर आपने गाना गाया था और मैंने ताली बजाई थी। हां ताली…

रेखा अब उसे पहचान जाती है।

रेखा—हां, लेकिन उस दिन आपका हुलिया कुछ और…

महेश—हां, शुक्र है, आपने मुझे पहचाना तो सही। जी अनूप बाबू ने मुझे हिप्पी से इन्सान बना दिया। उस दिन मेरी बहन ने एक गल्ती की थी आज मैंने गल्ती की। देखिए, आप मुझे माफ कर दीजिए।

महेश रेखा से माफी मांगने के लिए उसके पैर छूने के लिए झुकता है। रेखा पीछे हट जाती है, और उसकी इस अदा पर कुछ परेशान-सी होती है।

रेखा—ये आप क्या कर रहे हैं? क्या कर रहे हैं आप?

महेश—जी मैं वह ही कर रहा हूं जो मैंने आज तक नहीं किया। आज तक मैंने किसी लड़की के पैरों पर गिरकर माफी नहीं मांगी और न ही किसी लड़की को गलती से माला पहनाई है मैंने।

रेखा—भैया बाहर गए हैं।

महेश—लेकिन आप ये माला क्यों वापस कर रही हैं। भाई-बहन में क्या फर्क पड़ता है। देखिए न मेरी बहन की तरफ से मैंने आपसे माफी मांगी। आप अपने भाई की तरफ से ये माला पहन सकती हैं। पहनिए न!

रेखा—ये माला मैं कैसे…

महेश—प्लीज़ पहनिए न!

रेखा—मैं कैसे पहनूंगी?

महेश—पहनिए न !

रेखा—मैं कैसे ?

महेश—(माला पहनाकर) थैंक यू।

वह जबरदस्ती उसके गले में माला पहना देता है। रेखा बुत बनी देखती रह जाती है। थैंक यू के शब्द उसके कानों से टकराते हैं। वह सन्न रह जाती है।

□ □

दूसरे दिन राजन बाबू के कहने पर अनूप उनके घर आता है। राजन अपने कमरे में फोन पर बात कर रहा है।

राजन—ओह थैंक यू, आप गवर्नर हाउस जा रहे हैं ? देखिए साहब इस फंक्शन का इन्तजाम बहुत शानदार होना चाहिए। और खर्चे की आप फिकर न करें—वो मुझपर छोड़ दें। मेरी ज़िन्दगी का पहला मौका होगा जहां मैं गवर्नर साहब के सामने अपने ख्यालात का इज़हार कर सकूं। बैस्ट ऑफ लक।

बात-चीत खत्म होते ही राजन की नजर सामने खड़े अनूप पर पड़ती है, तो उसके चेहरे पर रौनक आ जाती है। वह उसे खींच कर अपनी लायब्रेरी की तरफ लिवा जाता है।

दोनों लायब्रेरी में आते हैं। राजन अपनी किताबों का संग्रह उसे दिखाता है। अनूप आश्चर्य से उस शानदार लायब्रेरी को देखता है। चारों तरफ किताबों के ढेर हैं। किताबों की दुनियां में पहुंचकर उसकी आंखें चमक उठती हैं।

राजन—ये है हमारी लायब्रेरी। आइये, यहां आप बड़े सकून और आराम के साथ लिख सकते हैं। यू कैन हैव आल दीज़ रैफरेन्सैस। ह्वाट ए कलैक्शन ? सच तो ये है कि हमने दुनिया का कोई सब्जैक्ट ही नहीं छोड़ा। फिलॉस्फी, साइकॉलोजी, सोशियोलॉजी, एन्थ्योलॉजी, बायोलॉजी, लिटरेचर एण्ड ह्वाट नॉट, ह्वाट नॉट ?

अनूप—आप वाकई काफी पढ़े-लिखे हैं ?

राजन—चाहता तो बहुत हूं, लेकिन वक्त ही नहीं मिलता।

अनूप—किताबें तो काफी इकट्ठी कर रखी हैं। ये साइन्स की किताबों का चुनाव किसने किया ?

राजन—हमने किया है और कौन करेगा ? यहां तक कि कौन-सी किताब किसने लिखी है उन सबके नाम तक याद हैं।

अनूप—सिर्फ नाम तक।

अनूप ऐसी किताबें भी देखता है, जिनके पन्ने तक अभी काट कर नहीं खोले गए हैं। राजन शरमा जाता है और झेंपकर बात बदल देता है।

राजन—देखिए मैं एक नौकर भेज देता हूं। वो दरवाजे पर हाजिर रहेगा। आपको जिस चीज़ की जरूरत हो, वो ला देगा। आप यहां आराम से लिख सकते हैं। नो बाडी टू डिस्टर्ब यू।

राजन चला जाता है। अनूप इस अमीर आदमी की अदा पर अपने-आप मुस्करा देता है। उसके कानों में उसके आखिरी शब्द पड़ते हैं, जब वह अपनी खुदगर्जी के लिए अपने नौकर को उसके आराम की हिदायत दे रहा है।

राजन—रामू।

रामू—जी साहब !

राजन—तुम लायब्रेरी में जाओ। जो साहब अन्दर हैं उनको कोई डिस्टर्ब न करे।

अनूप मेज पर बैठकर लिखने लगता है। उसी वक्त सीमा लायब्रेरी में किताबें रखने आती है। वहां अनूप को देखती है तो आश्चर्य और खुशी से उसका चेहरा खिल उठता है। अनूप उसकी आहट से उसे नौकर समझता है।

अनूप—एक प्याली चाय ले आओ। ज़रा जल्दी और गरम-गरम लाना।

सीमा नौकर से चाय लाने का इशारा करती है। और थोड़ी ही देर में चाय की ट्रे लिए स्वयं लायब्रेरी में प्रवेश करती है।

अनूप—बड़ी जल्दी चाय ले आए। इस घर में क्या चौबीस घंटे चाय पकती रहती है। और सुनो दूर मत जाना, करीब ही रहना। ताकि पुकारूं तो सुन सको'''ज़रा चाय बना देना। शक्कर सिर्फ एक चम्मच, राशन का ज़माना है।

सीमा चाय बनाती है। अनूप लिखने में मशगूल है। सीमा बगैर शक्कर की चाय बनाकर उसकी तरफ बढ़ा देती है। अनूप एक बार चुस्की लेकर प्याला मेज पर रख देता है।

अनूप—ये क्या, शक्कर बिल्कुल नहीं डाली।

सीमा—राशन का जमाना है, सोचा आज फीकी ही पिला दूं।

सीमा की आवाज़ पर वह चौंककर मुड़ता है, और सीमा को वहां देख अचम्भे में पड़ जाता है। वह भी घबरा-सी जाती है।

अनूप—(आश्चर्य से) आप ?

सीमा—जी, मैं।

अनूप—आप यहां कैसे ?

सीमा—क्योंकि यह मेरा घर है।

अनूप—राजन बाबू !

सीमा—मेरे भाई साहब हैं !

अनूप क्रोध में आकर खड़ा हो जाता है।

अनूप—ओह तो इसी घर में मेरी बहन की दावत हुई थी ?

सीमा—आप अभी तक भूले नहीं उस बात को।

अनूप—जी, कुछ बातें ऐसी होती हैं जो कम से कम हम इज़्ज़त-वालों से तो नहीं भुलाई जा सकतीं। अरे सुनो, ज़रा राजन बाबू को बुलाओ। सीमा देवी ! आपने बिना जाने मेरी बड़ी भलाई कर दी। पेट की खातिर नौकरी छोड़ी तो नहीं जा सकती, लेकिन आपने सब कुछ आसान कर दिया।

सीमा—(ज़ोर देकर) आप चाय तो पी लीजिए न !

अनूप—जी, मैं इस घर की चाय नहीं पी सकता।

सीमा—जी !

अनूप—क्यों ताज्जुब हो रहा है आपको ? मुझसे भले बर्ताव की

उम्मीद नहीं की जा सकती। ये तो आपने उसी दिन जाहिर कर दिया था जिस दिन दावत के बाद रेखा को घर छोड़ने आई थीं।

राजन उन दोनों की बात-चीत सुनकर अन्दर आ जाता है, और वस्तु-स्थिति को समझने की कोशिश करता है।

राजन—रेखा आपकी बहन है, ये हमें आज ही मालूम हुआ। न जाने उस दिन इतनी बड़ी भूल हमसे कैसे हो गई?

अनूप—राजन बाबू, अब मेरे लिए यहां काम करना नामुमकिन है।

राजन—भूल तो किसी से भी हो सकती है। लैट्स फार्गिव एण्ड फारगैट।

अनूप—अब नहीं हो सकता।

राजन—अजी एक दफा ज़रा ठण्ड दिल से सोचिए तो सही। क्या इस तरह ज़रा ज़रा-सी बात पर नौकरी छोड़ देंगे। ज़िन्दा रहने के लिए रुपये की भी ज़रूरत होती है अनूप बाबू!

अनूप—भूखा रहने से खाने-पीने में ज़्यादा मज़ा है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। आपको उपदेश देने की ज़रूरत नहीं।

राजन—लेकिन इसके अलावा एक बात और भी है।

सीमा—इतनी खुशामद करने की क्या ज़रूरत है भैया, रुपया फेंकने से आदमियों की भीड़ लग जाती है।

अनूप—(क्रोध में) भीड़ नहीं लगती सीमा देवी। साड़ी, गाड़ी, मुंशी और मुख्तयार की तरह हर चीज़ को सस्ती मत समझिए। रुपया फेंकने से बेकार मिलते हैं साहित्यकार नहीं।

इसी क्रोध में अनूप बाहर निकल जाता है। दोनों देखस

नजरों से उसे देखते रह जाते हैं। राजन सीमा को क्रोध में कहता है।

राजन—रुपया फेंकने से क्या मिलता है क्या नहीं, यह मैं तुमसे ज्यादा जानता हूं। तुम्हें यहां लायब्रेरी में आने की क्या ज़रूरत थी ?

सीमा—मैं किताबें रखने आई थी।

राजन—किताबें रखने आई थीं ? अब जाओ, जितना चाहो रुपया फेंककर लौटा लाओ उस भले आदमी को तब जानूं। कहा है तो साबित करके भी दिखाओ।

सीमा राजन की बात सुनकर सोचने लग जाती है और फिर वहां से चली जाती है।

□ □

अनूप सड़क के किनारे-किनारे बढ़ता जा रहा है। वह अभी तक परेशान है। सीमा ठीक अनूप के पास कार लाकर रोकती है, और बाहर निकलकर अनूप के पास आती है, तथा विनयपूर्वक उससे कहती है—

सीमा—सुनिए···सुनिए अनूप बाबू।

अनूप—अच्छा तो आप आई हैं खुशामद करने ?

सीमा—भैया ने आपको बुलाया है, कोई ज़रूरी···

अनूप—मैं आपके भैया का नौकर नहीं।

सीमा—कुछ देर पहले तो थे।

अनूप—लेकिन अब नहीं।

सीमा—कमाल है, आजकल जितना प्यार से बोलो उतना ही नौकर सर पर चढ़ जाते हैं।

सीमा गुस्से में भरकर कार में बैठ जाती है, और ड्राइवर को वापस चलने का हुक्म देती है। अनूप उसी तरह उसे देखता रह जाता है।

□ □

जैसे ही राजन टेलीफोन का रिसीवर उठाता है, उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती हैं। मीटिंग में गवर्नर साहब पधार रहे हैं, यह जानकर तो उसकी परेशानी और बढ़ जाती है। वह मीटिंग में भाषण देने का वादा कर लेता है और फोन का रिसीवर रखता है, तभी सीमा अन्दर प्रवेश करती है। उसे देखते ही वह और अधिक परेशान हो उठता है।

राजन—मुझे मालूम था तुम अकेले ही लौटोगी। वह रुपये के पीछे दौड़नेवाला नहीं। अब तुम ही बताओ इतनी इम्पारटैण्ट स्पीच कब और कैसे बैठकर लिखूंगा ? परसों गवर्नर साहब आने वाले हैं।

सीमा—अच्छा तो अब मालूम हुआ कि नशाबन्दी का भाषण भी अनूप बाबू का लिखा हुआ था।

राजन—तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब ? हर बात में कूदोगी ?

सीमा—सॉरी भैया। मेरा तो खयाल है कि कोशिश करो तो तुम खुद भी लिख सकोगे।

राजन—कोशिश, व्हाट यू मीन ? इतने बड़े बिज़नैस को मैं अकेला चला रहा हूं—इतनी मामूली-सी स्पीच भी नहीं लिख सकता हूं ?

सीमा—लिखो न।

राजन—हां लिखता हूं, तुम जाओ।

सीमा—बाय।

सीमा के चले जाने के बाद राजन खुद भाषण लिखने की कोशिश करता है और अपने सामने किताबों का ढेर लगा लेता है। लाख कोशिश करने के बावजूद भी वह लिख नहीं पाता, बल्कि क्रोध में आकर लायब्रेरी में फटे हुए कागजों का ढेर लगा देता है। अचानक महेश अन्दर आता है और जीजा जी को इस कदर परेशान देख क्षण भर चुप-चाप खड़ा इनका तमाशा देखने लगता है।

राजन—(झुंझलाकर) एक कप चाय लाओ।

महेश—जीजा जी, चाय से काम नहीं चलेगा। आप तो अपने लिए ठण्डा बर्फ मंगाइये बर्फ !

राजन—यू शट-अप !

महेश—शट-अप से मेरा मुंह तो बन्द हो जायेगा, लेकिन अनूप बाबू के भाषण के बिना आपका मुंह कैसे खुलेगा ? आप शराफत से जाइये। उनसे माफी मांगकर उन्हें वापस ले आइये।

राजन—क्या—मैं वहां जाऊं—छोटे आदमियों के यहां—नैवर ?

३

महेश को अकड़ दिखाने पर भी राजन मजबूर होकर अनूप के घर जाता है। वह वहां अनूप की मां और रेखा से मिलता है, और उन दोनों से उस दिन की बेइज्जती के लिए माफी चाहता है।

मां—इतनी-सी बात के लिए आपने क्यों तकलीफ की ?

राजन—दरअसल मुझे बहुत पहले माफी मांगने के लिए आना चाहिए था। अगर मैं अनूप बाबू की जगह होता और कोई मेरी बहन की बेइज्जती करता तो मैं भी वह ही करता जो अनूप बाबू ने किया। रेखा तुम्हें हमारे इस कसूर को भूल जाना होगा।

रेखा—आप बार-बार माफी मांगकर मुझे शर्मिन्दा क्यों कर रहे हैं ?

राजन—लेकिन हमें दु:ख तो इस बात का है कि अनूप बाबू ने हमसे ताल्लुकात ही तोड़ दिये।

मां—अनूप को गलत मत समझिये। वह दिल का बुरा नहीं।

रेखा—अगर भैया की नावेल छप जाये तो सब जान जायेंगे कि भैया किस मिज़ाज के हैं।

राजन—(चौंककर) नावेल ?

रेखा—हां। लेकिन कोई छापने को तैयार नहीं।

राजन—लाइए मैं छपवाये देता हूं। यह मेरी ज़िम्मेदारी है।

रेखा—आप छपवायेंगे ?

राजन—क्यों नहीं। ये तो एक आर्टिस्ट से पूछिये कि लेखक क्या होता है। वो तो एक किस्म का भगवान होता है जो अपनी कलम से समाज की बुराइयों का ऑपरेशन करके उसे एक नया जन्म देता है।

रेखा राजन की बातों में आ जाती है और लपक कर नाविल का स्क्रिप्ट उठा लाती है। अनूप की मां उसके इस तरह के व्यवहार को देखकर आंखों में आंसू लिये कह उठती हैं।

मां—जीते रहो बेटा।

रेखा—यह रहा नाविल !

राजन—शुक्रिया। यह नाविल इसी महीने में छप जायेगा। और हां अनूप बाबू पूना से वापस आ जायें तो उन्हें हमारे घर भेजना न भूलियेगा। अब मैं इजाज़त चाहता हूं।

रेखा—(रोकने की कोशिश में) कॉफी तो पीते जाइये।

राजन—कॉफी क्या एक दिन तुम्हारे हाथ का पका हुआ खाना खायेंगे।

उसी वक्त महेश अनूप के घर आ जाता है। राजन उसे देख आश्चर्य प्रकट करता है।

महेश—सॉरी।

राजन—तुम यहां कैसे ?

महेश—आप माफी के लिए, मैं कॉफी के लिए।

राजन—आई सी।

यह कहते हुए राजन चला जाता है । महेश होठों पर हंसी छिपाये उसे देखते लगता है, और फिर मां व रेखा को देखकर चौकन्ना हो उठता है।

महेश—नमस्ते रेखा जी, नमस्ते मां जी, नमस्ते जीजा जी, जीजा गुल।

मां—तो यह तुम्हारे जीजा जी हैं ?

राजन—हां मां जी।

मां—बड़े अच्छे आदमी हैं।

महेश—हां मां जी आदमी तो अच्छे हैं, लेकिन वक्त पड़ने पर और भी अच्छे बन जाते हैं। अनूप बाबू कहां हैं ?

मां—वह तो पूना गया हुआ है।

महेश—पूना ! तो तो मैं मारा गया।

मां—क्या हुआ ?

महेश—मां जी, मैं बगैर गुरुजी के मशविरे के कोई काम नहीं करता।

महेश रेखा की मां को लड़कियों के बहुत से फोटो दिखाता है जो उसकी बहन ने उसे शादी के लिए पसन्द करने को दिये हैं।

महेश—ये देखिये न ! ये रहे ताश के बावन पत्ते। और मैं एक जोकर। दीदी ने शादी के लिए नाक में दम कर दिया है। शहर भर की जितनी ब्यूटी क्वीन्स हैं सबको इकट्ठा किया हुआ है। लेकिन मां जी मैं शादी करना चाहता हूं ऐसी लड़की से जो ज़रा पढ़ी-लिखी हो, सीधी-सादी हो। आखिर यह दो ज़िन्दगियों का सवाल है, कोई मज़ाक थोड़ी है ?

मां—सच कह रहे हो बेटा। एक बार जिसके गले में माला डाल

दो फिर तो ज़िन्दगी भर निभाना ही पड़ता है।

महेश—मां जी आपने तो मेरे मन की बात कह दी। इसीलिए तो मैं आप लोगों के पास आया हूं।

रेखा—कॉफी ?

महेश—कॉफी।

तभी रेखा कॉफी का कप लिये आती है, और महेश की तरफ बढ़ाती है और हैरान-सी हुई मां के हाथों में पकड़ी हुई तस्वीरों को देखती है।

मां—रेखा इन तस्वीरों में से कोई लड़की तू ही इन्हें पसन्द कर दे—मुझे तो ठीक से दिखाई ही नहीं देता।

रेखा—लेकिन मां मुझे इनकी पसन्द क्या मालूम ?

महेश—सिर्फ मेरी पसन्द का सवाल होता तो मैं आज ही शादी कर लेता। आपको तकलीफ क्यों देता ? रेखा जी आप फैसला सोच-समझ के कीजिएगा। अब मेरी ज़िन्दगी आपके हाथ में है।

रेखा—लेकिन एक अजनबी लड़की जिसको आप अच्छी तरह जानते ही नहीं वह आपकी क़िस्मत का फैसला कैसे कर सकती है ?

महेश—देखिये न, देवी-देवता को किसने देखा है लेकिन फैसला लोग उन्हीं पर छोड़ देते हैं। मैं तो आपसे दो-तीन बार मिल चुका हूं।

रेखा अब फोटो गौर से देखने लगती है।

रेखा—मेरा ख्याल है आप घाटे में रहेंगे। इनमें से तो मुझे एक भी लड़की पसन्द नहीं आई।

महेश—शुक्र है किसी न किसी मोड़ पर हम दोनों मिले तो सही।

मेरा मतलब पसन्द के सिलसिले में। इनमें से मुझे भी तो कोई पसन्द नहीं।

महेश, जो रेखा में दिलचस्पी रखता है, इस बात से बहुत खुश होता है। वह सब फोटो रेखा से लेकर बाहर फेंक देता है। उसी वक्त एक पंडित अन्दर दाखिल होते हैं और गरजते हुए उससे कहते हैं—

पंडित—और पसन्द के सिलसिले में पंडित से कोई मनुष्य टक्कर नहीं ले सकता। भगवान पाण्डूरंगा, वासूदेवा हरी। मां जी अब जल्दी से मुहूर्त निकलवाइये। इससे अच्छा वर रेखा देवी के लिए मिलना असम्भव है। हीरा है हीरा—लाखों में एक। महाशय आप भी देख लीजिए। तबीयत हरी हो जायेगी। बड़ी कठिनाई से यह वर मिला है मां जी।

मां—आपने यह नहीं बताया पंडित जी कि लड़का काम-काज क्या करता है ?

पंडित—श्री पांडूरंग हरी ! मां जी बड़े आदमी भला कहीं काम करते हैं। लाखों की जायदाद, बहुत बड़ा बंगला, आलीशान मोटर—नौकर-चाकर, राज करेगी आपकी बेटी। बस इकलौता भांजा है अपने लखपति मामा का।

रेखा—इसका ये मतलब हुआ कि मामा के टुकड़ों पर पलते हैं, खुद कुछ नहीं करते। सुन लिया मां तुमने ?

महेश नहीं चाहता कि रेखा की शादी कहीं और हो। पंडित की बातें सुनते ही वह परेशान हो उठता है। लेकिन रेखा के

जवाब पर उसके चेहरे पर रौनक आ जाती है, और वह गौर से उनकी बहस सुनने लगता है।

मां—पंडित जी आपने ये सब बातें खत में तो नहीं लिखीं ?

रेखा—भैया कहते हैं कि अगर बेकार आदमी फरिश्ता भी हो तो उसे कभी मनुष्य मत मानो।

महेश—और, और गुरुजी की बात सोलह आने पक्की होती है। है न मांजी ? सोलह आने पक्की होती है। देखिये महाशय जी आप यह रिश्ता-विश्ता छोड़िये और रास्ता नापिये।

पंडित—मां जी आप एक बार सोच लीजिए अच्छे रिश्ते बार-बार······

महेश—आप समझने की कोशिश कीजिये। प्लीज़ आप जाइये। आप अपना टाइम बरबाद न कीजिए, जाइये-जाइये।

महेश फुरती से पंडित जी को बाहर निकाल देता है और खुद नोट बुक निकाल कर रेखा की मां की बातें नोट करने लगता है कि वह रेखा के लिए किस किस्म का लड़का चाहती है।

रेखा—आप कॉफी पी लीजिए—

महेश—कॉफी···अ···बोलिये मां जी अब, आपको कैसा लड़का चाहिए ? मैं लड़का ढूंढ़ लाऊंगा।

मां—अरे बेटा, अच्छे घराने का सीधा-सादा लड़का हो।

महेश—मेरे जैसा, हां···सीधा-सादा।

मां—कुछ काम-काज भी करता हो।

महेश—अच्छा।

मां—और अपने पैरों पर भी खड़ा हो सकता हो।

महेश—धत् तेरे की। स्याही खतम हो गई। लेकिन मां जी मैंने

आपकी आखिरी बात अपने दिल पर लिख ली है। लड़का अपने पैर पर खड़ा होना चाहिए।

उसके पेन की स्याही खत्म हो जाती है, और वह झुंझला जाता है। मगर मां की बातें याद कर लेता है कि रेखा के लिए वह किस किस्म के लड़के की तलाश में हैं।

□ □

उसी दोपहर को सीमा अपने पियानो पर बैठी उसके सुर ठीक कर रही है। अशोक, जो वहां पहले से मौजूद है, बार-बार सीमा से इस तरह पेश आता है जैसे वह अपने-आपको उसकी नजरों में जंचा रहा हो। वह उसे उल्लू बनाते हुए बात को ढील दिये जाती है।

अशोक—डिस्गस्टिंग एण्ड डैमेजिंग। अगर मैं काम करने लगूं तो ?

सीमा—पढ़े-लिखे लोग बेकार हो जायेंगे। और महीने में तीस दिन पार्टियां कौन मनायेगा ?

अशोक—हां, पार्टी से याद आया कि आज शाम आप सब लोग हमारे घर लिली के बर्थ-डे पर आ रहे हैं। लिली की हमारे घर में यह आखिरी बर्थ-डे पार्टी है।

सीमा—क्यों ?

अशोक—एक फार्चून टैलर मिला था। कह रहा था कि इस साल दो सैंसेशनल बातें होने वाली हैं।

सीमा—हूं हूं।

अशोक—लिली आपके घर आ जायेगी और आप इस नाचीज के यहां।

सीमा—हं हं हं हं। अच्छा उनसे ये भी पूछ लीजिएगा ये फोर-कास्ट अगले जनम की है या पिछले ?

उसी वक्त ड्राइवर के साथ गुड्डी वहां आती है और अशोक से कहती है—

गुड्डी—अंकल आप हंस क्यों रहे हैं ?

सीमा—गुड्डी समझ में नहीं आता कि सच बोलो तो लोग बिगड़ते हैं। और ये गैरतदार—हंस रहे हैं।

सीमा अशोक को छोड़कर ज्यों ही दूसरे कमरे में बढ़ने लगती है, गुड्डी के हाथ में एक रजिस्टर देखकर पूछ बैठती है।

सीमा—ये क्या स्कूल से हाज़िरी का रजिस्टर लाई हो ?

ड्राइवर—नहीं मेम साहब, ये छोटे सरकार ने लायब्रेरी में रखने के लिए भेजा है।

सीमा गुड्डी के हाथ से रजिस्टर ले लेती है, और उसे खोलकर पढ़ती है। वह अनूप का नावेल 'नया जमाना' है। वह अनूप का नाम देखकर मुस्करा उठती है। उसके होंठ यह पढ़कर थरथरा उठते हैं—

नया ज़माना

लेखक : अनूप

सीमा—ज़िन्दगी पे सबका एक-सा हक है सब तसलीम करेंगे।
सारी खुशियां सारे दर्द बराबर हम तकसीम करेंगे ॥

'नया जमाना' नावेल लिये वह सोने के कमरे की तरफ चली जाती है, और नावेल पढ़ने में मग्न हो जाती है। दोपहर से शाम और शाम से रात हो जाती है, फिर भी उसकी आंखें अनूप के नावेल से नहीं हटतीं। रात के पहले पहर जब श्रीमती राजन गुड्डी के साथ सीमा के पास आती हैं तो सीमा को अभी तक नावेल में खोया हुआ देखकर नाराज होती हैं।

श्रीमती राजन—अरे ये क्या ! अभी तक तुम तैयार नहीं हुई। लिली के घर पार्टी पर जाना था न ?

सीमा—ओह् माई गाड ? मैं तो भूल ही गई थी। तुम्हीं चली जाओ न भाभी गुड्डी के साथ।

श्रीमती राजन गुड्डी को लेकर अकेली ही चली जाती हैं। लेकिन सीमा भाभी की नाराजगी की परवाह न करते हुए फिर नावेल में खो जाती है।

□ □

दूसरे दिन जब अनूप और प्रकाश पूना से वापस आते हैं तो उन्हें जल्दी वापस आये देख रेखा ताज्जुब करती है।

रेखा—अरे भैया, तुम लोग पूना से इतने जल्दी आ गये ? काम बन गया क्या ?

प्रकाश—अरी रेखा तुम्हारा भैया जाये और काम न बने ? अनूप के एक ही लैक्चर से मिल मजदूरों ने हड़ताल खत्म करने का फैसला कर दिया।

अनूप—अच्छा अपनी नहीं कहेगा। रेखा, कारखाने के मालिक के दिमाग को ऐसा रोशन किया, ऐसा रोशन किया कि वह मजदूरों

की तमाम शर्तें मान गया।

रेखा अनूप को नावेल छपने की खुशखबरी सुनाती है। वह यह बात सुन भौंचक्का-सा हो जाता है, जैसे अचानक किसी ने उसे नींद से जगा दिया हो।

रेखा—हमने भी वह काम किया है कि सुनोगे तो दोनों उछल पड़ोगे। भैया वह तुम्हारी नावेल जो प्रकाश भैया न छपवा सके छपने चली गई है।

अनूप—कहां ?

रेखा—राजन बाबू आये थे। मुझसे माफी भी मांग गये हैं। तुम्हें बुलाया है और वही तुम्हारा नावेल भी छपवाने ले गये हैं।

वह राजन का नाम सुनकर गुस्से में भर जाता है और गरजते हुए अपनी बहन को डांटने लगता है।

अनूप—राजन बाबू को मेरा उपन्यास देने के लिए तुम्हें किसने कहा था ?

प्रकाश—बेकार क्यों बिगड़ते हो यार ? कम से कम तुम्हारा नावेल छपेगा तो।

अनूप—मैं उन बड़े आदमियों का एहसान नहीं लेना चाहता प्रकाश ! अपना उपन्यास मैं अभी वापस लाऊंगा।

वह उसी वक्त राजन के पास जाने के लिए घर से निकल पड़ता है। रेखा व प्रकाश बेबस हुए उसे देखते रह जाते हैं।

□ □



'इसी दिमाग़ से तो समाज की चोटी पर हम-ही-हम नज़र आते हैं…।'



जैसा देश···



वैसा भेष।





'नहीं, आज तुम दोनों खुद अपने धोखे में फंस गए। महेश भैया तो तुम लोगों से जान बचाने के लिए हिप्पी बने हुए थे।'



'कोशिश'''ह्वाट यू मीन ? इतने बड़े बिज़नेस को मैं अकेला चला रहा हूं। इतनी मामूली सी स्पीच भी नहीं लिख सकता ?'



'अगर दुनिया में सचमुच कोई अछूत है तो वह इंसान नहीं शराब है—सिर्फ़ शराब ! बत्तमीज़ी इसका ज़ेवर है—बदनसीबी इसका लिबास···।'



'अगर बेकार आदमी फरिश्ता भी हो, उसे कभी मनुष्य मत मानो...।'



'पिछले साल भी एक साला पकड़ा गया था, वो भी यही कहता था कि मैं करोड़पती का साला हूं ।'



'कितने दिन आंखें तरसेंगी,
कितने दिन ये दिल तरसेगा...'



'सोच लीजिए—शौक़ बड़ा खतरनाक है।'



'अगर कोई सम्भालने वाला नज़दीक हो तो गिरना अच्छा ही लगता है...।'





'जब बरखा अगिन लगाये।'





'आगे बढ़िए अनूप बाबू'''दुनिया के सामने दौलत के चेहरे से सोने-चांदी से चमकती हुई उस नकाब को खींच लीजिए।'

सीमा अनूप के ख्यालों में खोई, उसका लिखा गीत बड़ी तन्मयता से गाये जा रही है। वह गीत गाते-गाते मदहोश-सी हो जाती है। उसी वक्त अनूप वहां दाखिल होता है, लेकिन सीमा को पता नहीं चलता। गीत की मधुर आवाज से अनूप का क्रोध पिघलने लगता है, और वह उसकी जादू भरी आवाज में खो जाता है।

कितने दिन आंखें तरसेंगी
कितने दिन यूं दिल तरसेंगे,
एक दिन तो बादल बरसेंगे
ऐ मेरे प्यासे दिल !
आज नहीं तो कल, महकेगी ख्वाबों की महफिल !
कितने दिन...

सूने-सूने से,
मुर्झाये से हैं क्यों
उम्मीदों के चेहरे
कांटों के सर पे ही
बांधे जायेंगे
फूलों के सेहरे
नया ज़माना आयेगा, नया ज़माना आयेगा !!
कितने दिन...

ज़िन्दगी पे सबका एक-सा
हक है
सब तसलीम करेंगे,
सारी खुशियां सारे
दर्द बराबर
हम तकसीम करेंगे
नया ज़माना आयेगा, नया ज़माना आयेगा !!!
कितने दिन...

गाना खत्म होते ही अनूप यह महसूस करता है कि वह सीमा की आवाज के जादू में खिंचा उसके कमरे तक चला आया है। वह घबराकर उसकी तरफ देखने लगता है। सीमा भी उसकी मौजूदगी का एहसास कर हैरत में पड़ जाती है।

सीमा—आप ! और यहां ?

अनूप—जी ! माफ कीजिएगा, दरअसल आपकी आवाज़ ने मुझसे ये गुस्ताखी करवा दी।

सीमा—हो सकता है कसूर आपकी कविता का हो।

अनूप—अच्छा आप जानती हैं मैं यहां किसलिए आया था ?

सीमा—चोरी-चोरी मेरा गाना सुनने।

अनूप—जी नहीं। दरअसल मैं लड़ने आया था।

सीमा—क्या आपको लड़कियों से भी लड़ने का शौक है ?

अनूप—आपसे नहीं आपके भाई साहब से लड़ने आया था, जो रेखा से मेरा उपन्यास बिना मेरी मर्ज़ी छपवाने ले आये।

सीमा—चलिये इस बहाने किसी ने पढ़ी तो आपकी किताब ! क्या आप नहीं चाहते आपका यह पैगाम दुनिया वालों तक पहुंचे ?

अनूप—आपको कैसी लगी यह किताब ?

सीमा—गरीब मज़दूरों के दुःख-दर्द की जो तस्वीर आपने खींची है उसे पढ़ते-पढ़ते आंखें भर आती हैं। बस्ती के लोग वाकई ऐसी ज़िन्दगी बसर करते ?

अनूप—सीमा देवी, ये बस्ती आप ही की ज़मीन पर आबाद है। मगर अफसोस की बात है इस आलीशान बंगले के इस ठंडे कमरे में बैठकर आप उनके बारे में कुछ भी नहीं सोच सकतीं। बहरहाल मुझे खुशी हुई कि यह किताब पढ़कर आप उनके बारे में सोचने पर मजबूर हो गईं।

सीमा—बड़े घमण्डी हैं आप ?

अनूप—गहराई तक सोचने वाला हर आदमी घमण्डी होता है। कोई अन्दर से कोई बाहर से।

तभी राजन अन्दर आता है और अनूप से फौरन दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए एक नई चाल चलता है। वक्त आने पर झुकना वह अच्छी तरह जानता है। इसलिए आते ही कह उठता है—

राजन—अनूप बाबू, मैं आपसे माफी चाहूंगा कि आपकी गैर-हाज़िरी में मैं आपका नावेल छपवाने के लिए ले आया।

अनूप—राजन बाबू आपको ये तकलीफ करने की ज़रूरत नहीं। आपका काम मैं यूं भी कर दूंगा।

राजन—अजी छोड़िये न इन बातों को। सीमा अनूप बाबू के लिए लायब्रेरी में चाय भिजवा दो।

सीमा—पहले पूछ लीजिए हमारे घर की चाय अच्छी भी लगेगी इनको ?

अनूप—अगर फीकी न भिजवायें तो।

राजन—अनूप बाबू कल गवर्नर साहब आ रहे हैं। भाषण आज ही लिखना है। चलिये लायब्रेरी में चलें।

राजन अनूप को लिये लायब्रेरी की तरफ बढ़ जाता है। सीमा चाय लेने अन्दर चली जाती है।

□ □

सीमा दिल में अनोखी गुदगुदाहट लिये बड़े हाल से निकलती है। बगल वाले कमरे में एक जौहरी कुछ जेवरात लिये

उसके इन्तजार में है। उसे देखते ही वह आगे बढ़ता है। पर, सीमा जेवरात में कोई दिलचस्पी नहीं लेती।

जौहरी—सीमा जी, मैं आपके लिए लेटेस्ट डिज़ाइन के ये जेवर लाया हूं।

सीमा—मुझे अब इन जेवरों की ज़रूरत नहीं।

जौहरी—तो क्या कोई बढ़िया जेवर खरीद लिए हैं ?

सीमा—खरीदा नहीं, मिल गया है।

जौहरी—ठीक है, ज़रा ये भी देख लीजिए।

उसी वक्त श्रीमती राजन गुड्डी के साथ वहां आती हैं और जौहरी से कहती हैं।

श्रीमती राजन—इसे यहीं रखिए, मैं इत्मिनान से देखती हूं। अच्छा वो मेरे कंगन ?

जौहरी—हां-हां वो कंगन भी साफ करके लाया हूं बहूरानी ! मगर बहूरानी ये तो निहायत ही पुराने ज़माने के मालूम होते हैं।

श्रीमती राजन—ये हमारे खानदानी कंगन हैं तोलाराम जी।

गुड्डी—मम्मी मैं ये कंगन पहनूंगी।

श्रीमती राजन—नहीं बेटी ये तो मामी के हैं।

गुड्डी—मामी के ?

श्रीमती राजन—अच्छा तोलाराम जी, मुझे कम से कम ग्यारह सैट और चाहिए, महेश की शादी के लिए।

गुड्डी मां से कंगन लेकर बाहर भाग जाती है और सीधी महेश के कमरे में घुस जाती है। महेश अपने कमरे में सोफे

पर खड़ा रेखा की मां की बातें दोहरा रहा है। पहले तो गुड्डी खामोश हुई उसकी हरकतों को देखती है। फिर कंगन लेकर उसके पास आती है और उसे पुकारती है। वह अपनी ही धुन में खोया है और गुड्डी की बातें नहीं सुनता।

महेश—लड़के को अपने पैर पर खड़ा होना चाहिए।

गुड्डी—मामा !

महेश—और नौकरी करनी चाहिए।

गुड्डी—मामा !

महेश—मांग के नहीं खाना चाहिए।

गुड्डी—मामा ! मामा तुम मामी को कब लाओगे ?

महेश—जब मैं अपने पैर पर खड़ा हो जाऊंगा तब।

गुड्डी—तो क्या अभी आप सर पर खड़े हैं मामा ?

महेश—सर पर नहीं, अब तक मैं अपने जीजा जी के दर पर खड़ा हूं।

गुड्डी—तो मामी के ये कंगन मैं पहनूंगी।

महेश—मामी के कंगन !

गुड्डी—हां।

महेश—समझ गया। छोटी मेमसाहब, अपनी माताजी से कह दो कि तुम्हारी होनेवाली मामी उनके ये कंगन नहीं पहनेगी।

गुड्डी उसे कंगन दिखाती है, और वह कीमती हीरों के कंगन देखकर खुश हो जाता है और सोचने लगता है। जब यह पहेली उसकी समझ में नहीं आती तो श्रीमती राजन उसे समझाती हैं।

श्रीमती राजन—कैसे नहीं पहनेगी ? ये मेरे नहीं हमारी माता जी के हैं।

महेश—मां ? ये कंगन माताजी के हैं ? यानी कि ये अपना माल है—जीजा का नहीं।

श्रीमती राजन—हां। उस ज़माने में बीस हज़ार के थे। ब्लू डायमण्ड्स के कंगन हैं।

महेश—ब्लू डायमण्ड्स ? वाह वाह वाह तब तो मेरा काम बन गया। अब बहन मैं पैरों पर तो क्या, ब्लू स्काई पर फ्लाई कर सकता हूं। मैं जा रहा हूं। कहा सुना माफ कर देना।

श्रीमती राजन—अरे अरे ये कंगन लेकर कहां जा रहे हो ? शादी के दिन खुद अपने हाथ से तेरी बीवी को पहनाऊंगी। अब इसे तिजोरी में रख देती हूं, कल लॉकर मैं रखवा दूंगी। चल गुड्डी।

महेश—अरे......

महेश अपनी बहन के हाथ से कंगन लेकर बाहर जाने लगता है। श्रीमती राजन उसे रोक उसके हाथ से कंगन लेकर चली जाती हैं। महेश मजबूर होकर उसे देखता रह जाता है। और फिर अपनी मां के फोटो के पास जाकर गिड़गिड़ाने लगता है।

महेश—मां, अब तुम ही फैसला करो। रेखा की मां कहती है कि लड़के को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। दीदी कहती है कि मैं शादी के बाद कंगन पहनाऊंगी। मेरा काम कैसे बनेगा ?

अकस्मात् वह किसी सोच में डूब जाता है और एक तरकीब निकालता है।

महेश—मैं तुम्हारे कंगन चोरी करके उन्हें गिरवी कर देता हूं, और फिर अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊंगा, उसके बाद तुम्हारे कंगन भी छुड़ा लाऊंगा। तुम्हारी बहूरानी को भी ले आऊंगा। तुम चुप हो मां, इसका मतलब है तुम खुश हो...है न मां ? आशीर्वाद दो।

उसी शाम को जब महेश एक टेलिग्राम और एक कैमरा लेकर श्रीमती राजन के कमरे में आता है तो उसकी चाल-ढाल देख, उसे आश्चर्य होता है। लेकिन वह बहन को अपनी तरफ झुका लेता है, और वह तार दिखाता है। श्रीमती राजन उससे तार लेकर पढ़ना चाहती हैं, मगर वह उनसे तार छीन लेता है। गुड्डी भी मां के साथ है।

महेश—हाय सिस्टर !

श्रीमती राजन—हाय !

महेश—आज तुम्हें मालूम हो जायेगा कि तुम्हारा भाई अमेरिका से क्या सीख कर आया है ? ये टेलिग्राम देखा। ह्वाट एन आनर ? अरे सिस्टर टेलिग्राम क्या देखती हो—'न्यूयार्क टाइम्स' ने लिखा है कि उन्हें एक इण्डियन फोटो चाहिए।

गुड्डी—मामा मेरी भी फोटो खींचो। खींचो न।

महेश—बेटी अकेली नहीं। बेटी के साथ मां का होना बहुत ज़रूरी है। जभी तो मेरा काम बनेगा।

श्रीमती राजन—ठहर अपने जीजा जी को तो आने दे।

महेश—तब तो दीदी बनता हुआ काम बिगड़ जायेगा। मुझे सैंटिमैन्टल पोज़ चाहिए, विलेन का पोज़ नहीं चाहिए।

कंगन चुराने का प्रोग्राम बनाकर वह बहन से सेफ की चाबी

हासिल करना चाहता है। इसके लिए कैमरा खराब होने का बहाना करता है। श्रीमती राजन और गुड्डी पोज़ खिचवाने के लिए एक-दूसरे की आंखें बन्द करके बैठ जाती हैं और महेश तिजोरी खोलने लगता है।

महेश—कैमरा बिगड़ गया है दीदी। कोई स्क्रू-ड्राइवर है ?

श्रीमती राजन—स्क्रू-ड्राइवर ?

महेश—हां।

श्रीमती राजन—जा गुड्डी अन्दर से स्क्रू-ड्राइवर ले आ।

महेश—अरे नहीं गुड्डी नहीं, टाइम वेस्ट होगा। चाभी है चाभी ?

श्रीमती राजन—चाबी ?

महेश—कोई भी चाबी। हां···वैरी गुड। कैमरा तैयार नहीं मगर मैं तैयार हूं। कैमरा तैयार हो गया, गुड्डी। चलो तैयार हो जाओ—पलंग के पास जाओ।

श्रीमती राजन—मम्मी, तुम भी चलो ना।

गुड्डी—मामा !

महेश—हां।

गुड्डी—मामा ये पोज़ ठीक है ?

महेश—नहीं नहीं, अ···बेटा ये तो बड़ा थर्ड क्लास पोज़ है। मेरे को प्योर इंडियन पोज़ चाहिए। बेटी मां की आंख बन्द कर रही हो—मां बेटी की आंख बन्द कर रही हो। एक-दूसरे को कुछ नहीं दीखना चाहिए। चलो—आंख बन्द करो। आंख बन्द करो, एकदम। और ज़ोर से, बिल्कुल। एकदम···देखो जब तक मैं नहीं बोलूं आंख नहीं खोलना।

रेडी, स्टडी, वैरी गुड, वन, टू···

तिजोरी में से कंगन निकालकर वह उसे बन्द करने लगता है। उसी वक्त लिली वहां आ जाती है। महेश उसे देखकर घबरा जाता है, और उसका बुशर्ट सेफ के दरवाजे में फंस जाता है।

लिली—हैलो दीदी !

महेश—अरे ! यू सिली !

लिली—ह्वाट ?

महेश—आइ मीन लिली !

श्रीमती राजन—लिली बहुत खूबसूरत लग रही हो। आओ मैं तुम दोनों की तस्वीरें खींचूंगी।

महेश घबराहट में बात बराबर करने की कोशिश करता है।

महेश—नहीं नहीं दीदी, नहीं। आप अपनी जगह से मत उठिये। मैं फंसा हुआ हूं। आइ मीन मैं अटका हूं। दीदी मेरा मतलब, फोकस आउट ऑफ फोक्स हो जायेगा। डार्लिंग तुम जाकर दीदी के पास बैठो न। मैं एक फैमिली पोज़ ले लूं। जाओ।

लिली—लेकिन मैंने तो कोई जेवर ही नहीं पहने हैं।

श्रीमती राजन—महेश तिजोरी खोल के कंगन और हार निकाल के दे दे।

महेश —नहीं-नहीं दीदी तिजोरी खोलूंगा तो सब कुछ खुल जाएगा। आजकल अमेरिका में जेवर पहनना आउट ऑफ डेट हो गया है। वो लोग बोलते हैं कंगन-बंगन बजाय तिजोरी में रखने के गिरवी रखकर उनसे धन्धा करना चाहिए। चलो डार्लिंग एक पोज़ ले लूं। जाओ। जाओ। वाह वाह वाह वाह। कितना अच्छा लगेगा, होने वाली बहू

होने वाली ननद के पैर छू रही है। अरे बैठ के पैर छूओगी? खड़ी होओ, अब झुक के पैर छुओ। और झुको। अरे गई क्या कमर? अच्छा तुम बैठ जाओ। बैठ जाओ। वैरी गुड। अब मेरी तरफ क्या देख रही हो। तुम्हारे थोबड़े से तुम्हारी बैक ज़्यादा अच्छी है। उस तरफ घूमो। दीदी मेरी तरफ क्यों देख रही हो। आशीर्वाद दो न। अरे उसके सर पे मारो न ऐसे हाथ! और आंखें बन्द। गुड्डी तू भी आंख बन्द कर। रेडी, स्टडी, अरे, कट। हो गया। आखें खोलो सब। ये लो आपकी चाभी। खेल खतम पैसा हजम।

लिली भी आंखें बन्द करके श्रीमती राजन के पास बैठ जाती है। वह उसके पैर छूती है और श्रीमती राजन आंखें बन्द करके उसे आशीर्वाद देती हैं। इसी खेल-खेल में महेश बु-शर्ट निकालकर सेफ का ताला बन्द कर देता है और बहन को चाभियों का गुच्छा देकर वहां से भाग जाता है।

□ □

कंगन बेचकर महेश एक चलता-फिरता होटल खरीद लेता है। वह रेखा की मां की बात पूरी कर देना चाहता है। वह अपनी ही पूंजी से अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है और अपना चलता-फिरता होटल लिए शहर के कॉलिजों, स्कूलों और सड़कों पर गाता हुआ बढ़ता जा रहा है। जब रेखा के कॉलिज के बाहर वह होटल लेकर पहुंचता है तो सामने से सीमा को आते देख चिल्ला उठता है और गाने लगता है।

हो···
स्टूडन्ट्स,
कॉलिजियन्स,
अरे पलट···
आया मैं लाया
चलता फिरता होटल
गरम गरम पकौड़े
ठण्डी-ठण्डी बोतल
आया मैं···

हक्का बक्का,
तीन तलक्का
लयम लाठी
ठयम् ठुस्स
बिस्कुट नरम करारे
टाफी मीठी-मीठी
लालीपाप लो मजा करो
खाओ बजाई सीटी
फुर-फुर जो सीटी बोले
बोले बाग में जैसे कोयल,
आया मैं···

इसी तरह गाते हुए वह गुड्डी के स्कूल में पहुंच जाता है। गुड्डी अपने मामा के साथ उसके होटल पर सवार हो जाती है। वह गुड्डी को लिए हुए कई जगह जाता है। गुड्डी होटल में बैठी रहती है और महेश चीजें बेचता है। इस तरह मामा के साथ घूमते हुए वह उसका खेल देखती रहती है।

□ □

शाम को जब गुड्डी स्कूल से नहीं लौटती तो घर वाले सब परेशान हो उठते हैं। ड्राइवर गुड्डी के गायब होने की खबर देता है।

श्रीमती राजन—ईडियट, गुड्डी को कोई स्कूल से उठाकर ले गया। तुम कहां पर गए थे ? अब क्या होगा ?

अशोक—दीदी ये तो बहुत बुरा हुआ। हां, ये बदमाश बच्चों को उठाकर ले जाते हैं। उनको अन्धा कर देते हैं—उनके हाथ-पांव तोड़ देते हैं। उनसे भीख मंगवाते हैं।

राजन—अशोक विल यू कीप क्वायट ?

अशोक—हां-हां।

राजन—हैलो, इन्सपेक्टर मैं राजन चौधरी बोल रहा हूं। मेरी बच्ची को कोई स्कूल से उठाकर ले गया है। फौरन उसकी तलाश की जाए। यस, मैं उसकी फोटोग्राफ भेजता हूं। थैंक यू।

महेश गुड्डी को साथ लिए जुहू पर आइसक्रीम बेच रहा है और गा-गा कर लोगों का दिल बहला रहा है।

अरे आवा भैया,
खावा समोसा
नहीं तो खावा इडली डोसा
हाय ठेलेवाले
खा ले हलवा पूरी,
काम है तेरा बहुत
मगर इतनी कम मजदूरी

लेकिन प्यारे गम न कर
मेहनत का फल मिलेगा
आज नहीं तो कल
आया मैं···

अरे रूठी हो मेहबूबा
तो फौरन मान जाये
हाय हाय अम्मा हाय हाय
हाय हाय बाबा हाय हाय
आइसक्रीम तू मेरी अगर
बाबू इसे खिलाये
हाय हाय हाय हाय हाय !
फिर से गले में डालें
बैयां कोमल कोमल
आया मैं······

अचानक पुलिस की एक जीप आती है और इन्सपेक्टर तस्वीर से गुड्डी को पहचानकर महेश को गिरफ्तार करने का हुक्म देता है।

इन्सपेक्टर—ऐ चलो तुम्हें हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा।

महेश—चलिए इन्सपेक्टर साहब। क्या मेरा चलता-फिरता होटल इतनी जल्दी पापुलर हो गया कि इसकी खुशबू आप पुलिस वालों तक भी पहुंच गई ?

इन्सपेक्टर—तुम इस बच्ची को भगाकर लाए हो।

महेश—क्या कह रहे हैं इन्सपेक्टर साहब ? हमने तो सुना है आप बेवड़ा पीने वालों को पकड़ते हैं। मगर आपकी तबीयत तो ठीक है न ?

इन्सपेक्टर—शट अप।

गुड्डी—ये तो मेरे मामा जी हैं।

महेश—सुना आपने। मैं इसका मामा हूं। इसकी सगी मां का भाई—इसके सगे बाप का साला।

इन्सपेक्टर—पिछले साल भी एक साला पकड़ा गया था वह भी यही कहता था कि मैं एक करोड़पति का साला हूं।

महेश—तो कोई नकली साला होगा। मैं तो असली साला हूं। आमचूर की खटाई में घुला हुआ—चमको टिनोपाल···टिनोपाल··· टिनोपाल।

इन्सपेक्टर—शट अप। हवलदार तुम इस बदमाश को ले जाकर हवालात में बन्द कर दो। मैं इस बच्ची को राजन बाबू के घर ले जाता हूं—आओ बेटी।

जब पुलिस वाले महेश को गिरफ्तार किए जीप गाड़ी में ले जा रहे हैं तो बस स्टाप पर खड़ी रेखा उसे पुलिस की हिरासत में देख आश्चर्य में पड़ जाती है।

□ □

पुलिस इन्सपेक्टर गुड्डी को लिए राजन के पास आता है। श्रीमती राजन दौड़कर गुड्डी को अपनी गोद में उठा लेती हैं और उसे सीने से चिपका कर रोने लगती है।

श्रीमती राजन—गुड्डी···मेरी बच्ची !

गुड्डी—मम्मी।

श्रीमती राजन—मेरी बच्ची भगवान का शुक्र है उसने तुझे सही-सलामत पहुंचा दिया। तुझे कुछ हुआ तो नहीं बेटी ?

गुड्डी—नहीं मम्मी, मैं तो बिल्कुल अच्छी हूं। मामा—मामा को

पुलिस ने क्यों पकड़ लिया ?

श्रीमती राजन—तेरा मतलब है महेश मामा को ?

गुड्डी—हां डैडी।

अशोक—ये बदमाश बच्चों को ना जाने आइस्क्रीम में मिलाकर क्या खिला देते हैं कि उन्हें मामा ही मामा नज़र आते हैं। मैं टेलिफोन करके डाक्टर को बुलाता हूं।

अशोक डॉक्टर को फोन करने जाता है और राजन इन्सपेक्टर का शुक्रिया अदा करने लगता है।

राजन—थैंक यू इन्सपेक्टर। देखियेगा कि किडनैपर को सख्त से सख्त सज़ा मिले।

इन्सपेक्टर—येस सर !

श्रीमती राजन—इनको फांसी दे देनी चाहिए।

गुड्डी—नहीं-नहीं मम्मी मामा को बचाओ।

लिली—गुड्डी को डोप दिया गया है। नशे की आइस्क्रीम का नशा अभी तक नहीं उतरा।

गुड्डी—नहीं।

गुड्डी उनको समझाने की पूरी कोशिश करती है, लेकिन उसकी बात कोई नहीं मानता। उसी वक्त सीमा कॉलेज से घर आती है। वह आश्चर्य से पुलिस वालों को देखती है, और लिली के आखिरी शब्द सुन लेती है। वह भैया से कह उठती है।

सीमा—क्या हुआ गुड्डी को भैया ?

राजन—गुड्डी को कोई आइस्क्रीम बेचनेवाला बदमाश किडनैप करके ले गया था।

गुड्डी—देखो न आण्टी ये लोग मेरी बात मानते ही नहीं। आण्टी वह आइस्क्रीम बेचने वाला बदमाश नहीं, मामा था मामा।

अशोक—हाऊ डिस्गटिंग एण्ड डूमेंजिंग ? इतने बड़े आदमी का साला आइसक्रीम बेचेगा ?

सीमा—गुड्डी सच कह रही है। महेश भैया ने आज ही एक चलता-फिरता रेस्टोरन्ट खोला है।

राजन—व्हाट नॉन्सैन्स ? अमेरिका रिटर्न होकर वह आइसक्रीम बेचेगा ? इम्पासिबल।

सीमा—उनमें इतनी शरम तो पैदा हुई कि अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं।और···

सीमा से अपने महेश के बारे में यह सब सुनकर श्रीमती राजन घबरा जाती हैं और चिल्लाने लगती हैं।

श्रीमती राजन—हाय राम ! तुम सबने मिलकर मेरे भाई को जेल भिजवा दिया। कुछ कीजिए ना।

इधर महेश क्रोध में भरा जेल की कोठरी में टहल रहा है और अपने-आप बातें किए जा रहा है।

महेश—आज भारत में पचास करोड़ इन्सान कन्धे से कन्धा मिलाकर, कदम से कदम मिलाकर पंचवर्षीय योजना को सफल करने के लिए अपना खून तक देने को तैयार हैं, लेकिन इन कमीनों ने मुझे कटघरे के अन्दर बन्द कर रखा है। अरे अपने पैरों पर खड़ा होना कोई

गुनाह है क्या ?

तभी पुलिस कांस्टेबल की आवाज सुनकर वह चौंक जाता है। पलटकर उससे इस तरह आंख मिलाता है मानों खयालों में ही उससे किसी ने कह दिया हो।

कांस्टेबल—साहब आपकी फैमिली ने आपकी ज़मानत दे दी है, आप जा सकते हैं।

वह यह सुनकर खुश हो उठता है। लेकिन फिर कुछ सोचकर रुक जाता है।

महेश—थैंक यू सर। थैंक यू। लेकिन हवलदार साहब आप जाकर मेरी दीदी और जीजा को यहां ले आइए। साथ में फोटोग्राफर भी लाइए। जाइए, आज मैं असली फोटो निकलवाऊंगा। कल दुनिया वालों को यह मालूम हो जाए कि जेल में मैं अकेला नहीं था, मेरे साथ वो लोग भी थे।

रेखा और प्रकाश वहां दाखिल होते हैं। महेश अपने जीजा जी की जगह उन्हें देख अचम्भे में पड़ जाता है। यह जानकर कि इन लोगों ने उसकी जमानत दी है, शर्म से वह नजर नहीं मिलाता है।

रेखा—महेश जी !

महेश—आप, ओह आप ! आप यहां कैसे ? आप लोगों ने मेरी ज़मानत दी ?

प्रकाश—तो कौन-सी बड़ी बात हो गई। इन्सान ही इन्सान के काम आता है।

रेखा—मैं माफी चाहती हूं। मेरा समझाना आपने कुछ इतना सीरियसली ले लिया कि आपको बेकार—बेकार तकलीफ उठानी पड़ी।

महेश—आप कैसी बातें कर रही हैं? आपका यहां आना तो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। मुझे तो ऐसा लगता है कि दुनिया में—मैं आपसे क्या कहूं—शब्द ही नहीं मेरे पास। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

प्रकाश—आओ महेश घर चलो।

महेश—हां जी, चलिए।

> **महेश रेखा और प्रकाश के साथ इंसपेक्टर के कमरे में प्रवेश करता है। जहां राजन, उसकी बहन आशा, अशोक और लिली पहले से ही मौजूद हैं। उन सबको एक साथ वहां देख वह प्रसन्न हो उठता है।**

राजन—इन्सपैक्टर साहब, यह तो कुछ अजीब सी गलतफहमी हो गई। महेश, सचमुच मेरा ब्रदर-इन-ला है।

महेश—एक्सक्यूज़ मी सर! मैं मि० राजन चौधरी का ब्रदर-इन-ला नहीं बल्कि आज से ये मेरे ब्रदर-इन-ला हैं।

> **आशा क्रोध और नफरत से रेखा की तरफ देखती है और फिर नाक सिकोड़कर महेश पर बिगड़ती है।**

श्रीमती राजन—अच्छा तो आजकल यह है तुम्हारी कम्पनी? इसीलिए आइसक्रीम बेचने का धन्धा शुरू किया है।

महेश—ओह सिस्टर गरीबों का खून चूसने से या ब्लैक

मार्किटिंग का धन्धा करने से तो आइसक्रीम का धंधा अच्छा है। कम से कम गरीबों का दिल तो ठण्डा होता है।

राजन—महेश, इसीलिए तुम्हें अमेरिका भेजा था।

महेश—माई डियर ब्रदर-इन-ला, अमेरिका जाकर देखिए वहां किसी पेशे को बुरा नहीं समझते। दिन में जो नौकर आपका काम करता है वो ही क्लब में रात को आपके साथ बिलियर्ड खेलता है।

श्रीमती राजन—महेश, आज से मैं तुम्हारे लिए मर चुकी हूं।

महेश—लेकिन सिस्टर महेश तो आज से ज़िन्दा हुआ है और महेश की बहन महेश के लिए कभी नहीं मर सकती।

अशोक—महेश तुम अपने करोड़पति जीजा जी को छोड़कर ज़िन्दगी की सबसे बड़ी मिस्टेक कर रहे हो।

महेश—चुप बे चमचे ! मैं तेरे जैसे चमचों के कहने का बुरा नहीं मानता। बेगैरती लादते-लादते तुम चिकने घड़े और तुम्हारी बहन चिकनी घड़ी बन गई।

लिली—शट् अप।

राजन—आओ आशा घर चलें। महेश अब हमारे घर नहीं रह सकता।

महेश—जीजा जी वह घर आप लोगों का है। भगवान ने चाहा तो महेश एक-न-एक दिन अपना घर ज़रूर बसा लेगा।

राजन—आओ आशा।

रेखा महेश के विचार जानकर खुश भी है और यह सोचकर रंजीदा भी है कि उसकी वजह से महेश अपने खानदान से रिश्ता तोड़ रहा है। वह उसे कोई राय देने से मजबूर है,

ग्रौर खामोश खड़ी महेश की बहन को देखे जा रही है। जिसे उसका पति क्रोध के साथ लिवा कर चला जाता है। वह दुबारा महेश से ग्रांख मिलाती है। उसकी ग्रांखों में एक ग्रनोखी चमक है ग्रौर मन में इरादों का एक मजबूत इशारा!

□ □

४

जहां महेश को जीने की नयी उम्मीद नजर आई वहां सीमा को भी एक नयी धुन सवार हो जाती है—वह धुन है गरीबों की बस्ती को देखने की। वह अनूप के मकान वाली गली के नुक्कड़ पर ही अपनी कार छोड़ देती है और धीरे-धीरे सरकती हुई अनूप के मकान की तरफ चली जाती है।

अनूप की मां घर के काम-काज में लगी है। सीमा चुपके से अन्दर आकर मां तक पहुंच जाती है।

सीमा—मां!

मां—(सीमा को देखकर अत्यंत गद्‌गद हो उठती है) सीमा बेटी, तुम! बहुत दिनों के बाद आई हो?

सीमा—आप लोगों को देखने को जी चाहा, चली आई। रेखा कहां है?

मां—ज़रा बाहर गई है। आती ही होगी। बैठो। मैं तुम्हारे लिए चाय लाती हूं।

सीमा—आप क्यों तकलीफ उठाती हैं?

मां—मां के हाथ की चाय नहीं पिओगी? बैठो, अभी लाती हूं।

मां उसके लिए चाय लाने चली जाती है। सीमा पलंग पर

बैठकर कोई पत्रिका पढ़ने लगती है। तभी अनूप घर में दाखिल होता है। और कंधे से थैला उतारकर खूंटी पर लटका देता है। सीमा को देखे बिना उसे रेखा समझकर कह उठता है।

अनूप—रेखा ! कल पहली बार तुम्हारी सहेली सीमा को गौर से देखने का मौका मिला। बड़ी भली लगी। काफी समझदार लड़की है। लगता है नई रौशनी का हल्कापन उसके लिबास तक ही जाकर रुक गया है—उसके मन तक नहीं पहुंचा।

सीमा उसकी गलतफहमी से प्रफुल्लित होती है। ज्यादा देर तक अपने-आपको चुप न रख सकने के कारण बोल उठती है।

सीमा—अच्छा तो अब मन तक भी पहुंच गए हैं आप ?

अनूप—(चौंककर) अरे आप ?

सीमा—खैर इतने दिनों के बाद मेरी तरफ गौर किया, शुक्रिया।

अनूप—(झेंपकर) देखिए कितना भला आदमी हूं—पीठ पीछे किसी की बुराई नहीं करता।

सीमा—इसका पता तो पहली ही मुलाकात में चल गया था। अब तो आपकी किताब भी पढ़ ली है। हीरो के कैरेक्टर में आप ही आप जंचते हैं। लेकिन नावेल की हीरोइन जया की तसवीर जो आपने खींची है, वह क्या बिल्कुल ख्याली है ?

अनूप—कहानी तो ख्याली ही होती है।

सीमा—जया जैसी लड़की का होना, आप नामुमकिन नहीं समझते

हैं ? एक भले घर की लड़की सेवा करने के लिए गरीबों की बस्ती में वक्त-बेवक्त किस तरह जा सकती है ?

अनूप—माना ऐसी हिम्मतवाली लड़कियां नहीं होतीं। अगर हों तो कैसा हो ?

सीमा—यही तो मैं सोचती हूं कि क्या आप मुझे वह बस्ती दिखाने ले जाएंगे ?

अनूप—सोच लीजिए, शौक बड़ा खतरनाक है।

इतने में चाय का प्याला लिए मां आ जाती है और अनूप को देखकर पूछ बैठती है।

मां—कब आए बेटे ?

अनूप—अभी आया हूं मां।

मां—तुझे कितनी बार कहा कि नई प्यालियां लेकर आ, देख न एक का भी हाथ पैर सलामत नहीं है।

सीमा—कोई बात नहीं मां।

सीमा चाय का प्याला लिए उसे घुमा-फिरा कर देखती है। प्याले का हैंडिल टूटा हुआ है। उसकी समझ में नहीं आता कि वह किस तरफ पकड़े। ज्यों ही वह प्याले से घूंट भरना चाहती है, प्याला गरम होने की वजह से उसके हाथ से छूटकर गिरते-गिरते बचता है। अनूप उसकी हालत देख-कर मुश्किल से अपनी हंसी रोक पाता है।

अनूप—आप बस्ती देखना चाहती थीं न ? यह है उसकी पहली कसौटी। □ □

आसमान में घटा छाई हुई है। सीमा उस मौसम की ठंडक का एहसास करती हुई गुदगदा उठती है। वह अनूप के साथ कदम मिलाए उस बस्ती में प्रवेश करती है जिसका नक्शा, अनूप का उपन्यास पढ़कर उसने मस्तिष्क में खींचा हुआ था।

अनूप—सीमा जी, यह रहा हमारा देश—जो आपकी दुनिया से बिल्कुल अलग है।

एक औरत अपने बच्चे को मार रही है। यह देखते ही अनूप और सीमा तेजी से वहां पहुंचते हैं। सीमा फौरन ही उस बच्चे को मां की मार से बचाने की कोशिश करती है।

सीमा—बच्चे को मार क्यों रही हो बहन ?

मां—मारूं नहीं तो क्या गले लगाऊं ? पड़ोसी से उधार मांगकर अनाज पकाने लाई थी, इसने गिरा दिया।

सीमा उस औरत की बेबसी देख उसे कुछ पैसे देने लगती है। लेकिन वह पैसे लेने से इन्कार कर देती है। सीमा आश्चर्य से अनूप की तरफ देखती है, जो उस गरीब औरत पर नाज करने लगता है।

मां—हमको भूखा रहने की आदत है—भीख मांगने की आदत नहीं।

अनूप—इनकी हालत बदलने के लिए अमीरों का दिल बदलने की ज़रूरत है सीमा जी—दया, धर्म की नहीं।

बढ़ते-बढ़ते वे एक बुढ़िया की आवाज सुनकर रुक जाते हैं। अनूप मुस्कराकर उस ओर देखता है।

बूढ़ी औरत—अरे सुखिया की मां आज क्या बाटलियां बेचने नहीं चलोगी ?

बाटलीवाली—चाची जरा ठहरो, बस अभी चलती हूं।

अनूप—चाची कल तो तुम्हें बुखार था, आज सब्जियां बेचने जा रही हो ?

बूढ़ी औरत—बुखार तो मेरा खाली तन जलाएगा बेटा, मगर जब बच्चों के पेट में आग लगेगी तो उसे कौन बुझाएगा ?

सीमा—(अफसोस करते हुए) बेचारी !

अनूप—मिल में इसका बेटा और बहू काम करते थे। बस्ती में बीमारी फैली और दोनों मर गए। मगर बुड्ढी मरी नहीं, जी रही है और उनके बच्चों को पाल रही है।

सीमा—क्या भगवान ऐसे भी निर्दयी हो सकते हैं ?

अनूप—भगवान को क्यों दोष दे रही हो ? यह गरीबी तो चन्द सरमायदारों की देन है।

सीमा किसी की कड़क दार आवाज सुनकर रुक जाती है।

एक औरत—अरे ओ अनूप के बच्चे ! ये चिड़िया कहां से पकड़ लाया। कहां रखेगा इसे ? जा छोड़ आ बिचारी को, देख तो कैसे घबड़ा रही है।

वह पलटकर देखती है कि एक बच्चा पिंजरे में एक चिड़िया बन्द किये हुए भागा जा रहा है। उस बच्चे का नाम भी

अनूप है। अनूप लपककर उस बच्चे को पकड़ लेता है।

अनूप—क्या बात है अनूप ?

औरत—अनूप भैया अपने इस हमनाम को समझाओ। नाम रखा था तुम्हारे नाम पर अनूप—कि बड़ा होकर तुम्हारी तरह विद्वान् बनेगा। यह निकला चिड़ीमार। सारा दिन चिड़ियां पकड़ता रहता है।

अनूप—क्यों रे मेरे नाम को बट्टा लगायेगा ? जा तैयार होकर जल्दी से पाठशाला जा। मां का कहा मान।

वह बच्चा अनूप की बात मान जाता है और अपनी मां का कहना मानकर उसके साथ चला जाता है। दोनों आगे बढ़ते हैं। सीमा देखती है कि बस्ती का हर व्यक्ति अनूप को मान देता है। जैसे वह उनके लिए भगवान हो। उसे बस्ती के जीवन की हकीकत का एहसास होने लगता है। अचानक ही वह फिर रुक जाती है। सामने ही एक चबूतरे पर दो आदमी जुआ खेलते-खेलते आपस में झगड़ने लगते हैं।

मैकू—अरे जा जा बेइमान कहीं के। पहले दांव लगाता है, फिर रोने लगता है। रख दे माल नहीं तो चाकू अन्दर कर दूंगा।

सीताराम—तेरी कसम मैकू, अब घर में माल नहीं।

मैकू—राजा नल ने बीवी लगायी थी, तू बेटी लगा दे।

सीताराम—खबरदार जो बेटी का नाम लिया।

मैकू—आज तेरी मौत आई है।

सीताराम—किसी की इज्ज़त-आबरू का पास नहीं तुझे ?

अनूप तेजी से बढ़कर उन दोनों को अलग कर देता है।

सीमा उनकी गाली-गलौज सुनकर डरने लगती है।

अनूप—इज्ज़त हो तो सही सीताराम। जिस दिन होगी, कोई इतनी बात नहीं करेगा।

लड़की—अनूप भैया इस गुण्डे ने बापू की सारी तनख्वाह जुए में जीत ली।

सीताराम की लड़की की बात सुनकर अनूप मैकू को मारता है और उसे मजबूर कर देता है कि वह जुए में जीता हुआ माल सीताराम को लौटा दे।

अनूप—मैकू पैसे वापिस कर दे।

मैकू—नहीं दूंगा।

अनूप—जा बहन के पैसे वापस कर दे।

मैकू—बहन ये लो अपने पैसे।

सीताराम—माफ करना अनूप बाबू जवान बेटी के ब्याह की फिक्र ने मुझे अन्धा कर दिया था। सोचा दो के चार बना लूं।

लड़की—दहेज का बहाना करते-करते घर के बर्तन तक बेच दिए हैं तुमने बापू!

सीताराम—बक-बक मत कर। तू चुप हो जा।

अनूप—जुए से बेटी का दहेज तो नहीं बनेगा सीताराम! मुझे डर है किसी दिन यह जुआ तुम्हारी जान न ले ले।

ज्यों ही बाप-बेटी से ये लोग अलग होते हैं। सीमा कह उठती है।

सीमा—देखती हूं, ये लोग आपको बड़ा मान देते हैं।

अनूप—हम सब मज़दूर जो ठहरे—कोई कारखाने का, कोई कलम का।

सीमा बिना पलक गिराये अनूप को देखने लगती है। वह भी नजर मिलते ही अपने-आपको सिमटने की कोशिश करता है। सीमा निगाह फेर लेती है, और कुछ दूर पर खड़े महेश और रेखा को देख ताज्जुब करती है।

सीमा—रेखा और महेश भैया ?

अनूप—जी हां, रेखा अपनी पढ़ाई से जो वक्त बचता है, बस्ती के बच्चों को पढ़ाती है। और महेश जो मेहनत से कमाता है, उसका इन बच्चों को दूध बांट देता है।

सीमा—अब समझी कि महेश भैया में यकायक यह परिवर्तन कैसे आया।

अनूप—कैसे ?

सीमा—रेखा के प्यार से।

अनूप—लेकिन रेखा ने तो मुझे कभी कुछ नहीं कहा।

सीमा—ऐसी बातें कही नहीं जातीं। छुपाई जाती हैं।

सीमा उसकी आंखों में झांकती है।

उसी वक्त बस्ती के कुछ बच्चे एक गधे पर सवार होकर आते हैं। सीमा गधे की टक्कर से बचते-बचते ठोकर खा

जाती है और धड़ाम से जमीन पर गिर जाती है। उसे यों गिरते देख पहले तो अनूप हंसने लगता है, फिर मदद के लिए अपना हाथ बढ़ा देता है।

अनूप—जान पड़ता है हाथ-पैर तोड़े बिना आप मानेंगी नहीं।

सीमा—अगर कोई सम्भालने वाला नजदीक हो तो गिरना अच्छा ही मालूम होता है।

सीमा की बात सुनकर अनूप के बदन में एक झुरझुरी-सी दौड़ जाती है। वह सहारे के लिए अपना हाथ उसकी पकड़ में देता है। दोनों की उंगलियां टकराते ही सीने की धड़कन बेकाबू हो उठती है। ज्योंही वह सीमा को खींचकर ऊपर उठाता है, सीमा के गरम सांसों की भाप अनूप के चेहरे पर अपनी छाप छोड़ जाती है।

बादलों की गरज के साथ ही दोनों जिस्मों में एक बिजली-सी कौंधती है। धीमी-धीमी बारिश होने लगती है, और वे बरखा के छींटों से बचने के लिए तेजी से सामने के झोंपड़े में जाकर पनाह लेते हैं।

बरखा और तेज हो जाती है। दोनों बौछार से बचने के लिए अपने-आपसे सिमटे जा रहे हैं, तभी उस झोंपड़े में रहने-वाली एक नौजवान लड़की बदन को देहाती साड़ी से लपेटे बाहर निकलती है। दोनों को इस तरह सिमटा हुआ देख वह मुस्करा देती है, और शरारत भरी निगाहों से सीमा के सहमे हुए चेहरे का जायजा लेने लगती है।

दोनों के दिलों की हालत देखकर अचानक वह फुलझरी की तरह हंसते हुए बारिश में भीगते हुए निकल पड़ती है। अनूप उसे रोकने की नाकाम कोशिश करता है, लेकिन वह यौवन की मस्ती लिए बरखा के छींटों से खेलने लग जाती है।

बस्ती के दूसरे लड़के-लड़कियां भी उस उभरते हुए यौवन के साथ नाच उठते हैं। सीमा उसके थिरकते बदन को गौर से देखती है तथा उसे महसूस होने लगता है जैसे बरखा के छींटे उसके बदन में लगी यौवन की आग बुझाने की कोशिश कर रहे हों।

रामा रामा, गजब हुई गवा रे
हाल हमरा अजब हुई गवा रे
रामा रामा······

आई ऋतु ये सुहानी,
बरसा पहले भी पानी,
ये हुआ न जो अब—
हुई गवा रे,
रामा रामा······

दिल मचल-सा गया है,
कुछ बदल-सा गया है,
जाने कैसे ये सब—
हुई गवा रे,
रामा रामा······

कैसा जादू चलाया,
बरसों में जो हो न पाया,
ऐसा कल में वो सब—
हुई गवा रे,
रामा रामा……

अचानक एक शोर उठता है जो बस्ती की युवा धड़कनों को दबोच लेता है। यह शोर बादलों की गड़गड़ाहट से भिन्न था। सीमा अपने सपनों की दुनिया से जग जाती है और सामने बस्ती वालों की भीड़ देखकर अपने-आपको छिपाने की कोशिश करने लगती है।

उसी भीड़ में जब वह अपने भैया के मैनेजर मेहता जी को देखती है तो कांप उठती है।

बिहारी—अनूप बाबू, अनूप बाबू—ये देखिये न, नोटिस फिर आ गया।

अनूप—किस बात का नोटिस ?

मेहताजी—बस्ती खाली कराने का। अगर पन्द्रह दिन के अन्दर-अन्दर ये बस्ती खाली न हुई तो ज़बर्दस्ती खाली करवा देंगे। यह रहा कोर्ट का आर्डर—यही राजन बाबू का हुक्म है।

जब सीमा बरदाश्त नहीं कर सकती तो लपक कर उन लोगों के सामने आ जाती है, और गरजकर मेहता जी से कह उठती है।

सीमा—यह बस्ती खाली नहीं होगी—यह नोटिस मुझे दो।

मेहताजी—लेकिन सीमा देवी···

सीमा—कहा न मेहताजी—जाओ! मैं खुद बात कर लूंगी भैया से।

बिहारी—आप!

अनूप—सीमा देवी राजन बाबू की बहन हैं बिहारी।

मेहता जी अपना-सा मुंह लिए चले जाते हैं। सीमा हाथ में वह नोटिस थामे बस्ती वालों को विश्वास दिलाने की कोशिश करती है।

सीमा—आप लोगों को चिन्ता नहीं करनी चाहिए। मैं मना लूंगी भैया को। वह इतने पत्थर-दिल नहीं कि आपके बसे हुए घर उजाड़ दें।

□ □

राजन मेहता जी की बात सुनकर आग-बबूला हो जाता है। यह जानकर कि सीमा अनूप के साथ रंग-रेलियां मना रही थी, वह तड़प उठता है।

राजन—क्या कहते हो मेहता जी?

मेहता—हां, छोटे सरकार! अगर वहां सीमा देवी अनूप बाबू के साथ न आई होतीं तो हमने आज सारी बस्ती को नोटिस सर्व कर दिया होता।

श्रीमती राजन—सुन ली अपनी बहन की करतूत! और बुलाओ उसे अपने घर में।

□ □

अनूप—(सीमा के साथ आते हुए) हम दोनों अलग-अलग दुनिया के रहने वाले हैं। साथ चलते-चलते एक दिन तो अलग होना ही पड़ेगा।

फिर भी आज की यह बात मुझे हमेशा याद रहेगी।

सीमा—सिर्फ बात ही, और कुछ नहीं ?

तभी अशोक उन्हें खामोश रहने के लिए इशारा करता है और खिड़की से वह नज़ारा दिखाता है जहां अनूप सीमा को घर के फाटक तक छोड़ने चला आया था। राजन क्रोध में बल खाता है। अशोक मौके का फायदा उठाता है।

अशोक—लीजिए वो फटीचर उन्हें छोड़ने के लिए यहां भी आ गया।

श्रीमती राजन—तबाही में जो कसर बाकी रह गई है, वह भी पूरी हो जायेगी।

अशोक—मैंने तो पहले ही कहा था, इस लड़के का चाल-चलन अब्सोल्यूटली डैमेजिंग है।

राजन—मेहता जी आप जा सकते हैं।

अशोक—राजन भैया !

राजन—अशोक तुम भी।

अशोक—जी !

श्रीमती राजन—जल्दी बाबू जी को तार देकर बुला लीजिए। अब यह लड़की तुम्हारे बस की नहीं रही।

मेहता जी और अशोक चुपचाप वहां से खिसक जाते हैं। सामने से सीमा अन्दर आती है। अशोक और मेहता जी को इस तरह खिसकते देख, उसे दाल में कुछ काला नज़र आता है। फिर भी वह आगे बढ़ती है। भैया का सामना होते ही फिर रुक जाती है।

राजन—सीमा, इतनी रात गये तुम कहां गई थीं ? और इस लिबास में ? ज़रूर तुम बड़े आदमियों के बीच नहीं हो सकती।

सीमा—बड़े नहीं—भले लोगों के बीच में ! मेहताजी ने तुमसे सब कुछ कह दिया होगा। यह नोटिस ले लो भैया। प्लीज़।

राजन—ये नोटिस तुमने सर्व होने क्यों नहीं दिया ?

सीमा—जिनको पेट भर रोटी न मिलती हो, उनसे सर छिपाने की जगह तो न छीनो भैया !

राजन—सीमा हमने नहीं, भगवान ने उनके मुकद्दर में यही लिखा है।

सीमा—बस्ती वालों के लिए तुम ही भगवान हो भैया—इसलिए नहीं कि सारी खुशियां समेटकर अपनी किस्मत में लिख लो और सारे ग़म उन्हें बांट दो।

राजन—लेकिन गरीबों के लिए इतना दु:ख-दर्द तुम्हारे दिल में कब से पैदा हो गया ?

सीमा—भैया, एक दिन हर धनवान के दिल में गरीबों के लिए ऐसा ही दर्द पैदा हो जायेगा, जब अनूप बाबू की किताब 'नया ज़माना' छप जायेगी। नया ज़माना आयेगा—ज़माना जाग जायेगा।

सीमा यह कहते हुए अन्दर की तरफ बढ़ जाती है। लेकिन उसके कहे शब्द राजन के दिल और दिमाग में खलबली मचा देते हैं। वह बार-बार 'नया ज़माना' के बारे में सोचने लगता है। उस नावेल में ऐसी क्या बात है, जिसे पढ़ते ही सीमा के सोचने का ढंग बदल गया। यह जानने को वह उत्सुक हो उठता है।

वह सीधा लायब्रेरी में प्रवेश करता है। और उस कोने तक

चला जाता है जहां 'नया ज़माना' का स्क्रिप्ट रद्दी की टोकरी में रखा हुआ है। वह कुछ देर तक खड़ा उसे देखता है, फिर झुककर टोकरी में से उसे निकालता है।

राजन की आवाज़—नया ज़माना।
लेखक : अनूप।

उसके खुश्क होठों पर एक शोख मुस्कराहट पैदा होती है।

कुछ दिनों बाद ही वह किताब छप जाती है। सीमा उछलती हुई लायब्रेरी में आती है और वहां 'नया ज़माना' नाम की किताब उठाती है। टाइटिल पृष्ठ पर लेखक के नाम की जगह अनूप की बजाय राजन का नाम देखकर उसके विचार को एक झटका-सा लगता है।

सीमा—नया ज़माना ? अनूप बाबू की जगह भैया का नाम !

उसकी आंखों की चमक धुंधली हो जाती है। खुशी के जज़बात सीने के अन्दर घुटकर रह जाते हैं।

□ □

अनूप ज़िन्दगी के इस अनोखे नाटक से बेखबर बैठा अपने कमरे में किसी किताब को पढ़ रहा है। उसी वक्त उसका मकान-मालिक अन्दर आता है।

मकान मालिक—ह ह ह ह ! शायद आप अपनी लिखी हुई

किताब पढ़ रहे हैं अनूप बाबू। लाइये मुझे भी एक कापी दीजिए। मेरी चम्पाकली का दिल बहल जायेगा।

अनूप—धर्मदास जी यह मेरा लिखा हुआ नहीं। हां जिस दिन मेरा उपन्यास छप गया तो एक नहीं दो-दो भिजवा दूंगा।

मकान मालिक—अजी कौन पढ़ेगा यह आपकी रद्दी किताब? कहो किराया कब दे रहे हो? पहले कहते थे नौकरी लगने पर दूंगा—बाद में रट लगायी किताब छपने पर दूंगा। पिछले तीन महीने का किराया दिया नहीं है—चौथा महीना सर पर चढ़ बैठा है। तीन सौ की इकट्ठी रकम तुम राइटर लोग कहां से दोगे?

उसी वक्त सीमा अन्दर जाते-जाते रुक जाती है। और बाहर खिड़की का सहारा लेकर उनकी बातें सुनने लगती है।

मकान मालिक—अनूप बाबू, आज ही मुझे किराया मिलना चाहिए, नहीं तो कल सुबह मकान खाली करो। बड़े राइटर बने फिरते हैं। जेब में पैसे नहीं और राइटर बने फिरते हैं।

मकान मालिक गुस्से में बड़बड़ाता हुआ बाहर निकल जाता है। सीमा तेजी से हटकर अपनी कार में जा बैठती है। और जाते हुए मकान मालिक को पुकारती है।

सीमा—सुनिये तो।

इस सुरीली आवाज को सुनते ही उसके कदम रुक जाते हैं और वह दायें-बायें देखने लगता है। एक नौजवान और खूबसूरत लड़की देखकर वह बौखला जाता है।

मकान मालिक—जी ! आपने मुझे पुकारा ?

सीमा—जी हां। ये लीजिए पांच सौ रुपये। अनूप बाबू के किराये के हिसाब में जमा कर लीजिएगा।

वह मकान मालिक को पांच सौ रुपये के नोट देती है। मकान-मालिक हिचकिचाते हुए रुपये लेता है, और चापलूसी करने लगता है।

मकान मालिक—लेकिन···आप···

सीमा—जी मैं···देखिये ये बात अनूप बाबू से न कहिएगा। किसी से नहीं। समझ गये न ?

मकान मालिक—भला यह भी कोई कहने की बात है। आपकी बात भला कोई टाल सकता है।

सीमा—चलो ड्राइवर।

सीमा की कार आगे बढ़ जाती है, और मकान-मालिक खुशी के साथ दुबारा अनूप के मकान में दाखिल होता है।

मकान मालिक—अनूप बाबू !

अनूप—क्यों कुछ और कहना बाकी है क्या ?

मकान मालिक—मुझे माफ कीजिए अनूप बाबू। मैंने अभी-अभी आपसे बहुत कड़ी-कड़ी बातें कीं।

अनूप—कड़ी-कड़ी बातें तो आप हमेशा किया करते हैं धर्मदास जी ! मीठी बातें तो सिर्फ उस दिन सुनने को मिली थीं जिस दिन आपका यह मकान मैं किराये पर लेने आया था।

मकान मालिक—आखिर हम भी तो इन्सान हैं अनूप बाबू !

अनूप—कम से कम इस वक्त तो ऐसा ही लग रहा है। मगर इतनी जल्दी आप इन्सान बन कैसे गये ?

मकान मालिक—देखिये अनूप बाबू आप आदमी तो खराब नहीं लेकिन आपके बात करने का ढंग ? ये दीवारें बिल्कुल मैली हो गई हैं, कहो तो दीवाली के पहले साफ-सफाई करवा दूं। साफ-सुथरे कमरे में बैठकर आप आराम से लिखिये। आप जैसा आदमी और चाहे जो करे, लेकिन किराया दबाकर कभी न भागेगा। मैं आदमी पहचानता हूं अनूप बाबू— जब मर्ज़ी आये किराया दीजिए।

अनूप मकान-मालिक की बातें सुनकर आश्चर्य में पड़ जाता है। वह समझ नहीं पाता कि अचानक उसके व्यवहार में यह तब्दीली कैसे आ गई। इस नरमाई से वह कौन-सा मतलब निकालना चाहता है।

अनूप—देखिये आपकी कड़ी बातें सुनने की मुझे आदत है और सुनकर बुरा भी मानता हूं। मगर आज ये आपकी मीठी बातें सुनकर वाकई मुझे डर लग रहा है। ज़रा साफ-साफ बतायेंगे बात क्या है ?

मकान मालिक—नहीं-नहीं अनूप बाबू। ये आप मुझ से मत पूछिये, मैं वादा कर चुका हूं। उन्होंने आपसे कहने के लिए साफ-साफ मना किया है। भला औरतों की बात कोई भला आदमी टाल सकता है ?

अनूप—(क्रोध के साथ) धर्मदास जी ! साफ-साफ बताइये न बात क्या है ?

मकान मालिक—अच्छा सिर्फ आप ही से बताता हूं। लेकिन यह बात आपके पेट में हजम होगी ? अगर आप ही ने न जानी तो आपके साथ भलाई क्या हुई ? सुनिये तो एक निहायत खूबसूरत लड़की है,

क्या लम्बी-चौड़ी मोटरगाड़ी है उसकी। वह आपकी कोई रिश्तेदार या दोस्त···बहुत ही गहरी दोस्त होगी। वह आपके किराये के बाबत मुझे ५०० रुपये दे गई। और यह भी कहा कि आइन्दा मैं आपको परेशान न करूं।

अनूप—लेकिन आपने उनसे मेरे हिसाब में रुपये क्यों लिये? आप जाइये इसी समय वापस कीजिए उन्हें।

मकान मालिक—अजी पागल हो गये हैं आप? आई हुई लक्ष्मी को कोई वापस लौटाता है। न जाने कौन है—कहां रहती है?

अनूप—आप आइये मेरे साथ।

मकान मालिक—बाप रे बाप! कहीं मार तो नहीं बैठियेगा? अभी तक तो लम्बे-लम्बे भाषण दे रहे थे—आज हाथ भी लम्बे हो गये? जाइये जाइये मैं इस झमेले में पड़ने वाला नहीं।

अनूप—धर्मदास जी!

अनूप चिल्लाता है। मां उसकी आवाज सुनकर रसोई-घर से बाहर चली आती है।

मां—क्या हुआ अनूप?

अनूप—देखा मां, सीमा ने क्या किया है? मुझ बिना बताये मकान का किराया चुका दिया है। इस तरह खैरात बांटने की उसमें हिम्मत कैसे हुई? हम—हम कोई भिखमंगे नहीं? मैं अभी जाकर उससे पूछता हूं।

अनूप गुस्से में भरा घर से बाहर निकल जाता है।

वहां से सीधे राजन के घर चला आता है, और सीमा के

कमरे में दाखिल होते ही उस पर बरस पड़ता है।

अनूप—शर्म आनी चाहिए आप बड़े लोगों को। गरीबी की दहकती हुई आग को अपने दौलत के दामन से हवा देना शायद आप लोग अपनी शान समझती हैं।

सीमा उसके दिल की हालत पहचान लेती है और गम्भीरता से उसे समझाने की नाकाम कोशिश करती है।

सीमा—आप मुझे गलत मत समझिये अनूप बाबू !

अनूप—आखिर आपने मुझे समझ क्या रक्खा है ? मेरे मकान का किराया चुकाने की हिम्मत कैसे हुई ?

सीमा—किराया के अलावा भी कुछ देने से यह कर्ज़ा नहीं चुकाया जा सकता अनूप बाबू ! आपकी इतनी बड़ी दौलत, इतना बड़ा नाम जो रुपयों के ज़ोर से छीन लिया जाय।

वह उसका मतलब नहीं समझ पाता और उलझी हुई नज़रों से उसके परेशान चेहरे को देखता है।

अनूप—सीमा देवी आखिर आप कहना क्या चाहती हैं ? मैं कुछ समझा नहीं।

सीमा—आप मेरे साथ चलिए।

वह उसे साथ लिये लायब्रेरी की तरफ बढ़ जाती है।

जब अनूप राजन की लायब्रेरी में पहुंचता है तो यह देखकर

हक्का-बक्का रह जाता है कि शहर भर के लेखक, कवि और अखबारों के रिपोर्टर राजन की किताब 'नया ज़माना' की कामयाबी पर उन्हें बधाई देने आये हुए हैं। अशोक और श्रीमती राजन भी शहर के मशहूर लोगों के साथ वहां मौजूद हैं।

•

अशोक—थ्री चियर्स फॉर दी राइटर ऑफ 'नया ज़माना'।

लायब्रेरी में एक रिवालविंग बुक स्टेन्ड पर 'नया ज़माना' की एक कापी रखी हुई चक्कर काट रही है। अनूप उस पर राजन का नाम देखता है। और उसे सारा कमरा ही चक्कर काटता हुआ नज़र आता है। तभी एक लेखक आगे बढ़कर उसका स्वागत करता है।

एक लेखक—अहा अनूप बाबू आइये-आइये, बड़ी उमर है आपकी। आप ही को याद कर रहा था क्योंकि बरसों बाद किसी ने आप ही के रंग में आपको पीछे छोड़ दिया है।

अशोक—और किसने? एक सरमायेदार ने, इतने बड़े बिज़िनेसमैन ने?

लेखक—मुबारक हो राजन बाबू!

एक लेखक आगे बढ़कर राजन को बधाई देता है। बधाई के वे शब्द अनूप के कानों को छेद देते हैं। वह पीछे मुड़कर राजन का सामना करता है। राजन कंपकंपा कर रह जाता है।

राजन—थैंक यू।

लेखक—(अनूप की तरफ इशारा करके) हम सब अदीबों की तरफ से हमारे माने हुए इन्कलाबी शायर और लेखक अनूप बाबू आपको मुबारकबाद पेश करेंगे।

दूसरा लेखक—चलिए अनूप बाबू, राजन बाबू आपकी ज़ात के न सही, मगर अपने हसीन लफ्ज़ों से मोती बरसा दीजिए इनकी शान में !

उसी वक्त महेश वहां दाखिल होता है। उसके हाथ में अनूप के असली नावेल का मसवदा है। वह मसवदा अनूप को देता है। राजन के चेहरे का रंग उड़ जाता है।

महेश—लवली, अनूप बाबू किस्मतवालों को ऐसा मौका मिलता है। कोई कसर उठा न रखियेगा। ये लीजिए !

महेश—आज बड़ी मुश्किल से अमीरी का गिरहबान गरीबी के हाथ आया है। रस्मे दुनिया भी है, मौका भी है, दस्तूर भी।

सीमा—आगे बढ़िये अनूप बाबू। दुनिया के सामने दौलत के चेहरे से सोने-चांदी की चमकती हुई इस नक़ाब को खींच लीजिए।

अनूप राजन की तरफ बढ़ता है। उसी वक्त गुड्डी वहां आ जाती है। उसकी आवाज़ से अनूप के कदम चन्द मिनटों के लिए बंध जाते हैं।

गुड्डी—डैडी ! डैडी !! टीचर कह रही थी आपने एक भारी किताब लिख दी है। मगर मैंने तो आपको कभी लिखते हुए नहीं देखा। क्या आप चोरी-चोरी लिखते हैं ?

एक लेखक—हर महान् लेखक चोरी-चोरी लिखता है गुड्डी !

ताकि उसकी रचना कोई चुरा न ले।

श्रीमती राजन—जाओ गुड्डी अपने कमरे में जाओ।

दूसरा लेखक—राजन बाबू एक महान् राइटर ही नहीं महान् इन्सान भी हैं जिन्होंने इस किताब की रायल्टी अपाहिज बच्चों के स्कूल में देकर लेखकों की दुनिया में एक नई मिसाल कायम कर दी है। क्यों अनूप बाबू ?

अनूप—(अपने आप से) चलो मेरी मेहनत गरीब बच्चों के काम तो आई। वाह दुनिया तेरा जवाब नहीं।

वह दिल का दर्द दबाने की कोशिश करता है लेकिन उसकी भावनाएं एक गीत का रूप ले लेती हैं।

दुनिया, ओ दुनिया, तेरा जवाब नहीं।
तेरी जफाओं का बस कोई हिसाब नहीं॥
तू छांव है या है धूप, खबर किसको
क्या है तेरा असली रूप खबर किसको
आये नज़र कैसे तू आंसू है ख्वाब नहीं।
दुनिया...

तेरी जुबां पे है ज़िक्र सितारों का
तेरे लबों पे है नाम बहारों का
पर तेरे दामन में कांटे हैं, गुलाब नहीं
दुनिया...

ये किन ख्यालों में खो गये हैं आप
क्यों कुछ परेशां से हो गये हैं आप
आपसे तो मुझको कुछ शिकवा जनाब नहीं
दुनिया, ओ दुनिया तेरा जवाब नहीं।

गाना खत्म होते ही अनूप अपने नावेल का मसवदा आतिश-दान की जलती हुई आग में फेंक देता है। सीमा हैरत में यह सब देखती है।

सीमा—यह क्या किया अनूप बाबू ?

अनूप—सीमा देवी मुझे इस बात की खुशी है कि हम गरीबों की बात दुनिया के कानों तक तो पहुंची—मेरे नाम से पहुंची या किसी के नाम से पहुंची !

सीमा—फिर भी अनूप बाबू···

अनूप—आपकी आंखें आंसुओं से भर उठीं, यही मेरे लिए सब कुछ है।

वह अपना दर्द सीने में दबाए चला जाता है। सीमा की भीगी आंखें उसे देखती रह जाती हैं। कल तक अनूप उसकी आंखों में समाया हुआ था लेकिन आज वह उसके दिल में बैठ गया।

□ □

जब रेखा और मां को पता चलता है तो रेखा का दिल रो पड़ता है। वह समाज की इस ना-इन्साफी पर झुंझलाती है। अनूप चुपचाप बैठा अपने नसीब को कोस रहा है। लेकिन मां तसल्ली देती है।

मां—उदास न हो बेटी। विद्या को कोई छीन नहीं सकता। जीता रहे मेरा अनूप, इससे अच्छी-अच्छी किताबें लिख लेगा।

रेखा—आदमी इतना नीच हो सकता है—ये बात मेरे ख्याल में भी नहीं आ सकती थी, मां ! नहीं भैया नहीं, तुम सब अखबारों में ज़ाहिर

कर दो कि यह किताब तुमने ही लिखी है। अच्छा ज़ुल्म है। अमीर हैं तो क्या जो जी में आयेगा कर गुज़रेंगे ?

उसी वक्त सीताराम बस्ती के लोगों के साथ भागा हुआ अनूप के घर में दाखिल होता है, और अनूप के आगे गिड़गिड़ाता है।

सीताराम—हम लोग बर्बाद हो गये अनूप भैया !

अनूप—क्या हुआ ?

सीताराम—राजन बाबू और उनके आदमी बस्ती उजाड़ने आ गये।

अनूप—बस्ती उजाड़ने ?

सीताराम—वे वहां अस्पताल बनाना चाहते हैं।

अनूप—लेकिन सीमा तो कह रही थी कि उन्होंने अपना फैसला बदल दिया।

महेश—(बीच में दखल देता है) ये भी जीजा जी की एक चाल है। अस्पताल बस्ती खाली कराने का एक बहाना है।

सीताराम—हम लोग तो बेघर हो जायेंगे।

अनूप—फिक्र न करो सीताराम। बस्ती मिटाने से पहले उन्हें हमें मिटाना होगा।

□ □

एक बुलडोजर बस्ती के झोंपड़े रौंदने के लिए आगे बढ़ रहा है। अशोक और मेहता जी बुलडोजर पर बैठे हैं। राजन अपनी कार के पास खड़ा है और अपनी ताकत का करिश्मा देखना चाहता है। उसी वक्त अनूप बस्ती के लोगों के साथ भागा हुआ आता है। वह बुलडोजर की तरफ झपटता है।

अनूप—इसको रोको। मैं कहता हूं इसको रोको, नहीं तो अच्छा न होगा।

राजन—तुम कानून अपने हाथ में नहीं ले सकते। तुम जमाने की धारा नहीं बदल सकते, अनूप !

अनूप—जमाने की धारा बदल सकती है—हवाओं के रुख बदल सकते हैं, मगर सच्चाई के रास्ते पर चलनेवाले इन्सान के इरादे नहीं बदल सकते।

राजन—तुम बीच में क्यों आ रहे हो ? तुम्हारा इस बस्ती से क्या वास्ता ?

अनूप—जो शरीर को जान से, ईमानदार को ईमान से, और इन्सान को इन्सान से है।

राजन—यह जानते हुए भी कि ये हमारी बस्ती है।

अनूप—अब ये गरीबों की बस्ती है, जो पल भर में उजड़ती है, मगर बड़ी मुश्किल से बसती है।

राजन—बुलडोज़र चलाओ।

अनूप—इसके लिए तुमको मेरी लाश पर से गुज़रना पड़ेगा।

राजन—हट जाओ बीच से, नहीं तो मिटा दिये जाओगे अनूप।

अनूप—हमको मिटा सके, ये ज़माने में दम नहीं।
हमसे ज़माना खुद है, ज़माने से हम नहीं॥

राजन—याद रक्खो, तुम्हारी ये आरज़ू खाक में मिला दी जायेगी।

अनूप—मैंने परवाह नहीं की जब तुमने मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी आरज़ू मेरी किताब अपने नाम से छपवा दी। लेकिन अगर तुम इन गरीबों की ज़िन्दगी से खेलोगे तो तुमको खाक में मिला दूंगा।

बस्ती वाले—भाइयो घेर लो।

बिहारी—दुश्मन बच के जाने न पाये।

बस्ती के लोग उन लोगों पर हमला करना चाहते हैं। मगर अनूप उन्हें रोक देता है।

अनूप—खबरदार अगर कोई एक भी कदम आगे बढ़ा। यह अमीर लोग तो हमें कभी जीने का मौका नहीं देंगे। लेकिन हम गरीब इन्हें एक मौका जरूर देंगे। जाइये राजन बाबू—चले जाइये! कहीं ऐसा न हो हम गरीबों का गुस्सा भगवान का क़हर बनकर आप पर टूट पड़े।

महेश अशोक की घबराहट देखकर उसे और डराता है।

महेश—अशोक बाबू, जीजा जी को घर ले जाइये। बस्तीवालों के इरादे डैमेजिंग एण्ड डिस्गस्टिंग मालूम होते हैं।

राजन, अशोक और अपने साथियों को लिये वहां से चला जाता है। बस्ती के लोगों में खुशी की लहर दौड़ जाती है और वे अनूप की जयजयकार के नारे लगाने शुरू कर देते हैं। महेश अनूप की कामयाबी पर खुशी से झूमने लगता है।

□ □

सीताराम डरते-डरते राजन के आफिस में दाखिल होता है। राजन सिगार पी रहा है। वह उसे देखकर उसकी तरफ बढ़ता है। आज अचानक किसलिए मालिक ने याद किया—यह बात सीताराम की समझ में नहीं आ रही थी। इसी उलझन में वह उसके करीब चला जाता है।

राजन—सीताराम!

सीताराम—माई बाप।

राजन—इधर आओ !

सीताराम—हाज़िर हुज़ूर। वह तो अनूप बाबू की शरारत थी। मैंने कुछ नहीं किया हुज़ूर।

राजन—लेकिन सुना है तुम करना बहुत कुछ चाहते हो।

सीताराम—जी !

राजन सीताराम की कमज़ोरी से फायदा उठाना चाहता था। वह कुछ क्षण उसके चेहरे को गौर से पढ़ता है।

राजन—मेहताजी कह रहे थे कि तुम्हारी बेटी की शादी है और तुम्हें कुछ रुपयों की ज़रूरत है।

सीताराम—जी हां माई बाप।

राजन—कुछ इन्तज़ाम हुआ ?

सीताराम—कहां से होता सरकार। मेहता जी ने कहा था आपने इन्कार कर दिया। बीवी के गहने बेचे तब भी सिर्फ चार सौ मिले।

राजन—पांच हज़ार रुपया काफी होगा ?

सीताराम—जी !

राजन—तुम हमारे अपने आदमी हो—शादी धूम-धाम से होनी चाहिए।

सीताराम—माई बाप—इन्सान के रूप में भगवान हैं आप !

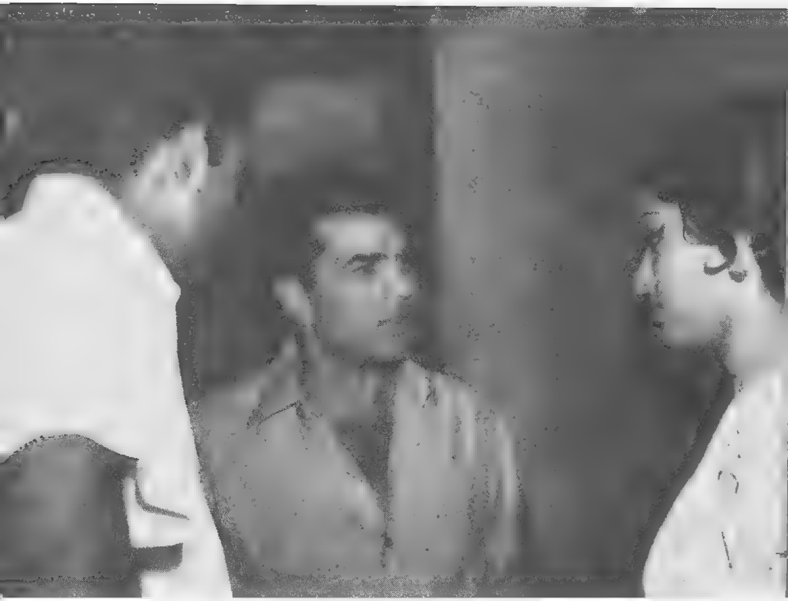
राजन—अपने भगवान की आरती उतार सकते हो ?

सीताराम—जान दे सकता हूं हुज़ूर।

राजन—कल दिवाली का शुभ दिन है—बस्ती खाली होनी चाहिए।

सीताराम—जी हुज़ूर···लेकिन मैं अकेला आदमी···ये काम ?

राजन—जलाना जानते हो ?



डायरेक्टर प्रमोद चक्रवर्ती— अनूप और सीमा के जज़्बात से उलझ रहे हैं।



हमको मिटा सके, ये ज़माने में दम नहीं।
हमसे ज़माना खुद है, ज़माने से हम नहीं।।



'सॉरी—रांग नम्बर !'



दीवाली की रात !



'मैं आज भी तुम्हारे लिए जान दे सकता हूं, मगर तुम्हारी भलाई के लिए। याद रक्खो ताकत, ताकत से नहीं सिर्फ़ सच्चे उसूलों से दबाई जा सकती है।'



'मैं तुम्हें आग नहीं लगाने दूंगा।'



'लोग मरने के बाद ज़लाए जाते हैं—लेकिन मेरी माँ तो जलकर मर गई है।'



'तो क्या एक गरीब के लिए तुम इस घर की इतनी बड़ी मान-मर्यादा और दौलत को छोड़कर चली जाओगी ?'

वह सिगरेट लाइटर जलाकर सीताराम को इशारे से समझाता है। पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आता, लेकिन फिर फौरन ही समझ कर वह होंठों पर एक भद्दी मुस्कान ले आता है।

सीताराम—क्यों नहीं हुजूर।

□ □

आतिशबाजी के अनार दीवाली की रात की कालिमा छेद रहे हैं। बस्ती के लोग बाहर मैदान में जमा दीपावली का उत्सव मना रहे हैं। पूरी बस्ती रोशनी से जगमगा उठी है। लड़के-लड़कियां नाच-गाने में मस्त हैं। रेखा सामने से आकर सीमा को देखती है, जो बस्ती के बच्चों को फुलझड़ियां बांट रही है। वह उसे खींचकर, उस नाच-गाने में शरीक होने के लिए ले जाती है।

गाने के दौरान सीताराम देखता है कि बस्ती के सब लोग नाच-गाने में मस्त हैं।

ओ चम्पा, ओ चमेली, ओ सुनवा, ओ रुकबा
डस गई, तू ई
नैना कजरारे मैं हारी, का करूं जानू ना···जानू ना।
जाओ रे जाओ किसी वैद्य को बुलाओ,
वैद्य न मिले तो मेरे साजन को लाओ
छोटी-सी बाली उमर में मैं मुश्किल में फंस गई।
डस गई······

सीताराम चोरों की तरह धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ बस्ती के पिछवाड़े की तरफ चला जाता है और चुपके से बस्ती के छप्परों में आग लगा देता है। नाच-गाना उसी प्रकार चल रहा है—

तन का तो घाव इक रोज भर जाये।
मन हुआ घायल तो राम ही बचाये।
ओ चंपा, ओ चमेली, तेरी सहेली बस फंस गई।
डस गई···

हाल जो सुने मेरा वो ही मुस्काये।
प्रेम का लगा है मोहे रोग हरजाये।
बैरन ये मस्त पवन भी आके मुझपे हंस गई।
डस गई···

बस्ती जल रही है। मगर लोग उत्सव मनाने में मग्न हैं। अचानक आग के शोले आसमान को रोशन कर देते हैं। लोग 'आग-आग' कहकर उत्सव से उठ खड़े होते हैं। एक खलबली-सी मच जाती है। वे सब बस्ती की तरफ भाग पड़ते हैं। उनकी खुशियों को बदनसीबी की चिनगारी लग चुकी है।

अनूप दूसरे लोगों के साथ आग से गिरे बच्चों को बचा रहा है। औरतें अपने-अपने बच्चों के लिए चीख रही हैं। हर कोई किसी न किसी तरह उस आग से बाहर निकलने की कोशिश करता है। अनूप की मां आग में गिरे हुए एक बच्चे को नीचे अनूप की गोद में फेंक देती है मगर खुद आग से बुरी तरह झुलस जाती है।

अनूप 'मां' चिल्लाकर रह जाता है और घबरा कर मां को बचाने के लिए भागता है।

□ □

इधर आग से गरीबों की बस्ती जल रही है, उधर अमीरों के सीने शराब से दहक रहे हैं। राजन अपने फैमिली फ्रेन्ड्स के साथ दीवाली मना रहा है। वह व्हिस्की पीता हुआ उन लोगों के साथ ताश खेल रहा है।

राजन—फाइव हण्ड्रेड ब्लाइंड।

एक आदमी—पैक।

उसी वक्त टेलीफोन की घंटी बजती है। राजन रिसीवर उठाता है। फोन पर सीताराम की आवाज सुनाई देती है।

सीताराम—राजन बाबू।

राजन—येस !

सीताराम—राजन बाबू मैं सीताराम बोल रहा हूं। आपने हुक्म दिया था मैंने बस्ती में आग लगा दी। किसी को कानों कान खबर भी नहीं हुई। दिवाली मुबारक हो !

राजन यह खुशखबरी सुनकर खुश होता है।

राजन—रांग नम्बर।

रिसीवर रखकर खेल में व्यस्त हो जाता है और अपने चेहरे का रंग फौरन बदल लेता है।

सीताराम टेलीफोन कट जाने से सोच में पड़ जाता है। वही नम्बर, वही आवाज़, यह सोचकर वह चकरा जाता है। उसी वक्त महेश जो बूथ के बाहर खड़ा सीताराम की बात सुन रहा था, झपटकर सीताराम की गर्दन पकड़ लेता है।

महेश—अच्छा तो तूने हमारी बस्ती में आग लगाई ?

सीताराम झटके से अपने-आपको छुड़ाता है, और भाग पड़ता है। महेश उसके पीछे भागता है।

महेश—पकड़ो, पकड़ो। सीताराम तुमने ही हमारी बस्ती में आग लगाई।

महेश की आवाज़ सुनकर बस्ती के दूसरे लोग भी सीताराम का पीछा करते हैं।

लोगों की आवाज़—पकड़ो—पकड़ो।

सीताराम बदहवास होकर भाग रहा है। इसी हड़बड़ाहट और घबराहट में वह एक ट्रक से टकरा जाता है। बस्ती के लोग उसे ट्रक के नीचे से खींच कर बाहर निकालते हैं। वह अपनी उखड़ी सांसों में अपना गुनाह कबूल कर लेता है और वहीं दम तोड़ देता है। उसकी बेटी अपने बापू की लाश देख कर छाती पीटने लगती है।

□ □

५

अनूप की मां, जो आग से बुरी तरह जल गई है, अस्पताल में बिस्तर पर पट्टियों से जकड़ी पड़ी है। उसका बदन ढक कर रखा गया है, वह बेहोश है।

अनूप, सीमा, रेखा और बस्ती के दूसरे लोग वहां मौजूद हैं। डॉक्टर उसे बचाने की पूरी कोशिश कर रहा है। वह जाने से पूर्व नर्स से कहता है—

डॉक्टर—सिस्टर अगर ब्लड प्रेशर लो हो जाए तो मुझे फौरन खबर करना।

सीमा—डाक्टर मां जी की क्या हालत है ?

डॉक्टर—शी इज़ टाक्समिक। उनका जिस्म बुरी तरह जल चुका है। आज की रात गुज़र जाए तो कुछ कहा जा सकता है।

उसी वक्त महेश वहां घबराया हुआ आता है, और सीमा को एक तरफ ले जाकर यह खबर सुनाता है।

महेश—सीमा, सीमा गजब हो गया। सीताराम ट्रक से कुचल कर मर गया। मरते वक्त उसने बयान दिया कि जीजा जी ने उसके ज़रिये बस्ती में आग लगवाई है।

सीमा—(बेचैन होकर) भैया ने आग लगवाई ?

महेश—हां सीमा, बस्तीवाले भड़ककर कारखाने को आग लगाने गए हैं।

अनूप—यह अच्छा नहीं हुआ महेश ! यह तो खतरा मोल लेने वाली बात है। इस तरह इन सरमायेदारों को गरीबों को कुचलने का मौका खुद-ब-खुद मिल जाएगा।

अनूप लोगों को आग लगाने से रोकने जाना चाहता है, पर सीमा उसे रोकती है।

सीमा—अनूप बाबू आप यहीं मां जी के पास रहिए। मैं अभी जाकर उन लोगों को समझाती हूं।

उस बेहोशी में भी मां उसकी बात सुन लेती है और क्षीण स्वर में बेटे को पुकारती है—

मां—अनूप, अनूप !

अनूप—हां मां।

मां—सीमा से काम नहीं बनेगा बेटा—तू भी साथ चला जा।

अनूप—नहीं मां, मैं तुम्हें इस हालत में छोड़कर कैसे जा सकता हूं ?

मां—ज़िद न कर बेटा। मैं वादा करती हूं तेरे आए बिना प्राण न छोड़ूंगी।

अनूप—मां !

मां—तू एक मां के लिए सोच रहा है बेटा ! कारखाना तो हज़ारों मज़दूरों की मां के बराबर है। तू चिन्ता मत कर। रेखा मेरे पास है। तू जा।

अनूप—हां मां !

मां—जा बेटा।

अनूप—महेश। मां का ख्याल रखना।

मां के मजबूर करने पर अनूप खुद मजदूरों को समझाने निकल पड़ता है। महेश और रेखा मां के करीब आ जाते हैं।

□ □

बस्ती के लोग जोश में भरे, हाथों में मशालें लिए, मिल में आग लगाने आगे बढ़ते हैं। चौकीदार उन्हें रोकने की कोशिश करते हैं। लेकिन लोगों की भीड़ उन्हें धकेलते हुए अन्दर चली जाती है। उसी वक्त अनूप सीमा के साथ वहां पहुंच जाता है और चिल्लाकर उन्हें रोकने की कोशिश करता है।

अनूप—रुक जाओ। रुक जाओ। रुक जाओ।

बिहारी—अनूप बाबू यह आप कह रहे हैं ?

अनूप—फेंक दो मशालें।

एक आदमी—जिस कमीने ने हमारी बस्ती में आग लगाई, हम उसकी मिल को जलाकर खाक कर देंगे।

दूसरा—अनूप बाबू आप बीच में से हट जाइए ! हम आग का जवाब आग लगाकर ही देंगे।

अनूप—आग मिल को जलाकर खाक कर सकती है मगर इसके शोले तुम्हारे जले हुए घरों की बहारें वापस नहीं ला सकते।

बिहारी—तुम उस ज़लील आदमी की मिल बचाना चाहते हो, जिसने हमारे घर जला डाले और तुम्हारी मां को जला डाला।

अनूप—मेरी मां तो दुश्मनों की आग में जली—लेकिन तुम—तुम अपने-आप खुद अपनी मां को जलाने जा रहे हो। लेकिन यह याद

रक्खो यह मिल और इस देश की तमाम मिलें सिर्फ पैसे वालों की नहीं हैं, हमारी भी हैं। 'इस देश में जो शै है, जागीर हमारी है।'

तीसरा—हमारे दिल में इन्तकाम के शोले भड़क रहे हैं।

अनूप—दिल के शोलों से ज्यादा बेरहम पेट के शोले हैं। मिल जल जाने के बाद भूख और बेरोजगारी, तुम और तुम्हारे मासूम बच्चों को बेमौत मार डालेगी।

चौथा—हमने कसम खाई है कि हम बदला जरूर लेंगे।

अनूप—किससे बदला लोगे? धनवानों से या अपनी रोजी के इस सहारे से जो तुम्हें पेट भर न सही आधी रोटी हमेशा देते आए हैं।

पांचवां आदमी—तुम तो कहा करते थे कि बरदाश्त का जमाना गुजर गया—हम धनवानों के बेजा जुल्म को खाक में मिला देंगे।

अनूप—मैं आज भी तुम्हारे लिए जान दे सकता हूं। मगर तुम्हारी भलाई के लिए, नुकसान के के लिए नहीं। याद रक्खो ताकत ताकत से नहीं सिर्फ सच्चे उसूलों से दबाई जा सकती है।

वे लोग अनूप की बात मानने को तैयार नहीं हैं। बगावत की आंधी ने उनके दिल व दिमाग को अपनी जकड़ में ले रखा है।

एक आदमी—बहुत देखे हैं तुम्हारे उसूल, अनूप बाबू!

दूसरा—तुम्हारे उसूलों पर से हमारा एतबार उठ गया है।

सीमा—(बीच में दखल देती है) तुम अनूप बाबू को गलत समझ रहे हो!

तीसरा—गलत नहीं, आज हम इस झूठे को असली रूप में देख रहे हैं।

चौथा—हमारा लीडर, लीडर नहीं रहा।

पांचवां—वह बिक चुका है।

रामदास—एक धनवान की बेटी ने उसे अपना रूप दिखाकर उसे मोल ले लिया है।

लोग अनूप पर राजन की तरफदारी करने का इल्ज़ाम लगाते हैं और वह घुटकर रह जाता है।

अनूप—रामदास !

सीमा—यह गलत है, ये झूठ है।

एक आदमी—हमें इसका सबूत चाहिए अनूप बाबू !

दूसरा—जला दो मशाल।

तीसरा—लगा दो आग।

चौथा—दिखा दो कि तुम इनके नहीं हमारे हो।

सीमा—अगर तुम लोगों की यही ज़िद है तो सबसे पहला शोला दौलत के दामन में एक धनवान की बेटी लगाएगी।

सीमा जोश में आकर मशाल अपने हाथ में ले लेती है। और खुद मिल में आग लगानें आगे बढ़ती है। अनूप उसे रोकता है।

अनूप—सीमा, क्या कर रही हो, सीमा ?

सीमा—मुझे मत रोकिए अनूप बाबू !

अनूप—तुम क्या पागल हो गई हो ?

सीमा—हां-हां पागल हो गई हूं।

अनूप—मैं तुम्हें आग नहीं लगाने दूंगा।

सीमा—मुझे कोई नहीं रोक सकता।

अनूप—मैं कहता हूं हट जाओ सीमा !

सीमा—नहीं।

अनूप झपटकर उसे आग लगाने से रोकता है। वह उसके हाथ से मशाल छीन लेता है। धक्का लगने से सीमा ज़मीन पर राजन के पास आकर गिरती है, जो उसी वक्त पुलिस के साथ वहां आया है। सीमा राजन को पुलिस के साथ देखकर घबरा जाती है।

राजन—इन्सपेक्टर यह रहा अनूप जो हमारे मिल के सीधे-सादे वर्कर्स को भड़का कर हमारी मिल में आग लगाने जा रहा था।

सीमा—नहीं भैया ये झूठ है। अनूप बाबू तो मुझे रोक रहे थे। मैं आग लगा रही थी, इन्सपेक्टर !

सीमा कुछ कहना चाहती है, मगर राजन उसे खींचकर कार में ले जाकर बैठा देता है। और उसके पिता के आने की खबर देता है।

राजन—सीमा, बाबूजी घर पर तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।

पुलिस इन्सपेक्टर अनूप के हाथों में हथकड़ी डाल देता है और उसे हिरासत में ले लेता है। बस्ती के लोग चीखते रह जाते हैं। पुलिस इन्सपेक्टर अनूप को जीप में ले जाता है।

□ □

सीमा अपने बाबूजी श्री सचीन चौधरी का सामना करते ही कांप उठती है। उन्हें अपनी बेटी की बेजा हरकतों पर

विश्वास नहीं हो रहा था। सीमा उनकी आंखों में गुस्सा और नफरत देखकर कह उठती है—

सीमा—बाबूजी आपने जो कुछ सुना है वह सब झूठ है। मैं आपको यकीन दिलाती हूं अगर अनूप बाबू न होते तो मैंने गुस्से में आकर आग लगा दी होती।

चौधरी—हमें खुशी होती अगर मिल तुम्हारे हाथों जलकर राख हो गई होती। मगर एक मामूली आदमी घर की खुशियों में आग लगाए, यह हम बर्दाश्त नहीं कर सकते।

सीमा—लेकिन···

चौधरी—हमारी बेटी होकर तुम ऐसे हल्के लोगों के साथ मेल-जोल बढ़ाओ, ये हमारे ख्याल से भी बाहर है।

सीमा—बाबू जी !

चौधरी के सामने वह बेबस हो जाती है।

चौधरी—जस्ट ए मोमेन्ट। यह मत भूलो सीमा कि संगमरमर के ताजमहल में एक मामूली ईंट नहीं लगाई जा सकती।

सीमा—बाबूजी मुझे डर है···मुझे डर है यह बेगुनाह ईंट कहीं कीचड़ में जा पड़ी तो इस भूल के लिए सारी ज़िन्दगी आपके दामन पर धब्बे रह जाएंगे। अनूप बाबू बेकसूर हैं—उनका कोई दोष नहीं। उन्हें छुड़वा दीजिए।

चौधरी—अनूप अगर बेकसूर है तो कानून उसे माफ कर देगा।

सीमा—बाबू जी उनकी मां की हालत नाजुक है। ऐसा न हो बेटे की यह खबर सुनकर आस भरी ममता दम तोड़ दे।

अनूप की मां बेहोशी की हालत में बेटे को पुकारती है। उसकी दर्द भरी आवाज आखिरी सांसों पर है। रेखा, महेश और बस्ती के दूसरे लोग मजबूर और मायूस निगाहों से एक-दूसरे को देखते हैं। मां बार-बार अनूप को देखने को बेचैन है।

मां—अनूप !

नर्स—डाक्टर; ब्लड प्रेशर लो हो रहा है !

डॉक्टर—मार्फिया का इंजेक्शन तैयार करो।

एक आदमी—महेश बाबू, अनूप भैया को पुलिस पकड़ के ले गई।

मां—रेखा, अनूप आया ? जल्दी आ जा, बेटे !

रेखा—मां !

मां—नहीं तो मैं अपना वादा नहीं पूरा कर सकूंगी।

रेखा—भैया अभी आते होंगे मां !

मां—मेरे लाल को कहीं कुछ हो तो नहीं गया ?

रेखा—कुछ नहीं हुआ मां, कुछ नहीं हुआ। तू चिन्ता मत कर। भैया अभी आ जाएंगे।

रेखा रोने लगती है। महेश आंखों में आंसू लिए बाहर चला जाता है।

महेश वहां से सीधा पुलिस चौकी पहुंचता है ताकि अनूप से मां की हालत बयान कर सके। अनूप जेल की कोठड़ी में सलाखों के पीछे खड़ा है। महेश घबराया हुआ वहां आता है।

महेश—अनूप भैया ! अनूप भैया !!

अनूप—महेश !

अनूप उसे इस हालत में देखकर आश्चर्य करता है।

महेश—यह क्या ? यह क्या हुआ ?

अनूप—मां कैसी है ?

महेश—हां भैया, मां की हालत बहुत खराब है।

महेश—(इन्सपेक्टर से बिनती करता है) इन्सपेक्टर साहब इन्हें छोड़ दीजिए। इनकी मां का आखिरी वक्त है—वह अपने बेटे को देखने के लिए तड़प रही हैं।

इन्सपेक्टर—मुझे अफसोस है कि मैं इस मामले में आपकी कोई मदद नहीं कर सकता।

अनूप—(गिड़गिड़ाकर) मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं फरार नहीं होऊंगा। एक बार अपनी मां से मिल लेने दीजिए। आप मेरे साथ किसी हवलदार को भेज दीजिए।

इन्सपेक्टर—मैं मजबूर हूं। कानून को अपने हाथ में नहीं ले सकता।

अनूप—कानून तो क्या, ऐसे मौकों पर कुदरत के कानून भी बदल जाते हैं। बस इतनी दया कीजिए मुझ पर, मैं एक बार अपनी मां के दर्शन कर लूं।

इन्सपेक्टर—आइ ऐम सॉरी !

महेश—ऐसा न कहिए इन्सपेक्टर साहब ! आप मुझे लाक-अप में बन्द कर दीजिए। मगर एक मरती हुई मां को अपने बेटे का मुंह देख लेने दीजिए।

अनूप—मैं बेगुनाह हूं, फिर भी हर इल्जाम कबूल कर लेने के

लिए तैयार हूं। लेकिन मुझे इस गुनाह से बचा लीजिए कि मैं अपनी मरती मां को सूरत न दिखा सका।

इन्सपेक्टर—उस वक्त आपको अपनी मां की याद न आई जिस वक्त मज़दूरों को भड़काकर आप मिल में आग लगाने जा रहे थे ?

अनूप—आप उस वक्त क्या कर रहे थे जब गरीब मज़दूरों की बस्ती जलाई जा रही थी ? जब मेरी मां अपनी जान पर खेलकर बस्ती के बच्चों को बचा रही थी ? क्या इसी दिन के लिए कि आज वह अपने बेटे की सूरत देखने को तरसे ? इन्सपेक्टर साहब ! आप भी इन्सान हैं, आप भी किसी मां के बेटे हैं, आपकी भी मां···

इन्सपेक्टर—जाने दीजिए, जब तक कानूनी कार्रवाई खतम न हो जाए, मैं इन्हें नही छोड़ सकता।

महेश—प्लीज़ इन्सपेक्टर—इन्सपेक्टर !

अनूप—महेश—महेश तुम जाओ ! मां से कह देना मैं नहीं आ सकता। मुझे माफ कर दे। इन दौलतमंदों ने दौलत पर ही नहीं हम गरीबों की किस्मत पर भी पहरा बैठा रक्खा है। मां···

अनूप मां को देखने की उम्मीद में तड़प उठता है। महेश मायूस होकर बाहर चला जाता है। तभी टेलीफोन की घंटी बजती है। इन्सपेक्टर रिसीवर उठाता है और राजन के पिता सचिन चौधरी की आवाज़ सुनकर सचेत हो जाता है।

इन्सपेक्टर—हैलो, येस इन्सपेक्टर मेहरा स्पीकिंग।

अपने घर पर सचिन चौधरी फोन पर पुलिस इन्सपेक्टर से बात कर रहे हैं।

चौधरी—दिस इज़ मिस्टर सचिन चौधरी। सुनिये इन्सपेक्टर ! अनूप के ज़मानत के पेपर साइन करके भिजवा दिये गये हैं। इस बारे में आप आनन्द मोहन, आइ मीन इन्सपेक्टर जनरल से बात कर लीजिए। और सुनिये इन्सपेक्टर, उसे जल्दी छोड़ दीजिए, उसकी मां की हालत बहुत खराब है। थैंक यू !

> **सीमा भी वहां मौजूद है। और बेबस-सी बनी बाप की तरफ देख रही है। बात खत्म होते ही जब वह बेटी की तरफ देखते हैं, तो उसकी रोनी सूरत देखकर कह उठते हैं—**

चौधरी—ये क्या सूरत बना रक्खी है ? अरे इन कीमती आंसुओं को हमारे आख़िरी वक्त के लिए उठा रक्खो।

> **सीमा अपने बाप को शुक्रगुज़ार नज़रों से देखते हुए जाने लगती है। बाबूजी की आवाज़ सुनकर फिर रुक जाती है।**

चौधरी—जाओ मुंह धो लो, और सुनो, आज से तुम इस घर के बाहर कदम नहीं रखोगी।

> **सीमा बाबूजी का यह हुक्म सुनकर वहीं गुम-सुम हो जाती है।**

□ □

> **इन्सपेक्टर जैसे ही अनूप को सचिन चौधरी की ज़मानत पर रिहा करता है, वह दीवानों की तरह भागता और थोड़ी ही देर में अपनी मां को देखने अस्पताल के कमरे में पहुंच जाता है।**

अनूप—मां···मां···

रेखा, महेश और बस्ती के दूसरे लोगों की आंखों में आंसू देखकर वह ठिठक जाता है और फिर मां की तरफ देखता है, जिसका चेहरा कपड़े से ढका हुआ है।

अनूप—मां···चली गई ? मां तुमने कहा था, मुझे छोड़कर नहीं जाओगी। मुझे छोड़कर क्यों चली गई मां। मां···

अनूप मां के चेहरे से कपड़ा हटाकर देखता है। मां मर चुकी है। वह चीख मारकर मां से लिपट जाता है। उस पर ग़म का एक पहाड़ टूट पड़ता है।

अनूप—मुझे छोड़कर क्यों चली गई मां।
रेखा—(रेखा भी फूट-फूटकर रोने लगती है) भैया···

बस्ती वालों का दिल रो रहा था। उन्हें लग रहा था, जैसे आज अनूप की मां का नहीं, बल्कि सारे बस्ती वालों की मां का देहान्त हो गया है।

□ □

दीवाली की रात की फुलझड़ियां चिता के शोलों में बदल गईं। मां की चिता जल रही है। अनूप के साथ महेश, प्रकाश और बस्ती के दूसरे लोग भी मौजूद हैं। अचानक अनूप गुस्से में भरा वहां से चल देता है। वह राजन को अपनी मां की मौत के लिए जिम्मेदार समझता है। राजन को ही अपनी मां का कातिल समझकर वह उसके घर की तरफ चल देता है।

□ □

राजन अपने मकान के सामने खड़ा है। अनूप उसे एक लकड़ी से मारना शुरू कर देता है, और मार-मारकर अधमरा कर देता है, फिर वह राजन को उठाये हुए मां की चिता के पास ले आता है, और उसे चिता को आग में फेंक देना चाहता है।

अनूप—तूने मेरी मां को ज़िन्दा जलवाया। आज मैं तुझको उसी चिता में ज़िन्दा जला दूंगा।

मां—बेटा यह तू क्या कर रहा है?

तभी मां की आवाज़ के साथ वह एक झटके से होश में आ जाता है, और देखता है कि यह सब कुछ उसने ख्वाब में किया है। वह तो कहीं भी नहीं गया। मां की चिता के पास ही खड़ा है और अपनी बेबसी पर आंसू बहा रहा है।

□ □

दूसरे ही दिन शहर के तमाम् अखबारों में सीमा और अनूप की मुहब्बत के समाचार छप जाते हैं। एक अखबार में तो उनका फोटो भी एक साथ छप जाता है। अनूप, राजन और दूसरे लोग अपने-अपने घरों में अखबार पढ़ते हैं। कुछ लोग राजन बाबू के घर हमदर्दी दिखाने आते हैं। सीमा उनकी बातें सुनकर झुंझला उठती है।

राजन—स्कैन्डल, स्कैन्डल! लोगों को मुंह दिखाना मुश्किल हो गया है। तुम्हारी वजह से नाक कट गई है हमारी।

अशोक—लोग तो इस तरह की बातें करते हैं—अब्सोल्यूटली डिस्गस्टिंग एंड डैमेजिंग।

श्रीमती राजन—मैं तो पहले से जानती थी कि तुम किसी न किसी दिन कुछ कर बैठोगी।

एक मित्र—देखो न कितने बड़े घर की लड़की हो—एक आवारा छोकरे के लिए जहां-तहां उछल-कूद करते फिरना तुम्हें शोभा देता है?

राजन—आखिर वह ठहरे हल्के आदमी—जानवर—इन्हें जूतों की ठोकर से चलाना पड़ता है।

□ □

एक आहट पर सब लोग चौंक पड़ते हैं। कदमों की एक बोझिल आवाज हाल की तरफ बढ़ रही है। उसी वक्त सचिन चौधरी वहां आते हैं। उनके कदमों की आवाज से सब मुड़कर देखते हैं; और अदब से उनका स्वागत करने खड़े हो जाते हैं। वह सीमा से कहते हैं—

चौधरी—सीमा मेरे कमरे में जाकर सामान ठीक तरह रखवा लो। तुम्हारे पिताजी कैसे हैं सुनील?

सुनील—जी आपकी मेहरबानी है।

चौधरी—आइ एम ग्लैड! और इन्दिरा तुम्हारे हस्बैन्ड कनाडा से कब लौट रहे हैं?

इन्दिरा—जी अगले महीने में।

अशोक—(बीच में बोल पड़ता है) अठारह तारीख को।

चौधरी—कब? दूसरों के घर की खबर खूब रखते हो, तुम्हारा अपना बिज़नेस ठीक चल रहा है या···?

अशोक—जी!

चौधरी—डैमेजिंग और डिसगेस्टिंग?

अशोक—जी, मैं नये बिज़नेस की कुछ सोच रहा हूं।

चौधरी—आइ एम ग्लैड। (श्रीमती सिन्हा से) और मिसेस सिन्हा,

इस दफे तो इलेक्शन आप जरूर जीतेंगी। सुना है बहुत उछल-कूद की है आपने ?

श्रीमती सिन्हा—जी अबकी बार सेन्ट-परसेन्ट चान्सेस हैं।

चौधरी—आई एम ग्लैड। जिन्दगी खत्म हो जाती है, उम्मीद बाकी रह जाती है। राजन मेरे साथ आओ।

राजन—जी !

चौधरी अपने कमरे की तरफ बढ़ते हैं और राजन उनके पीछे घबराकर चल पड़ता है। बगल वाले कमरे में पहुंचते ही वह बेटे से कह उठते हैं—

चौधरी—लोग इस घर में आकर ऊंची आवाज़ से बोल नहीं सकते थे—और आज देख रहा हूं कि हमारे ही घर में हमारे घर के मामलात को लेकर लोग यहां बहस कर रहे हैं। ये हमें बिल्कुल पसन्द नहीं।

राजन—जी भूल हुई !

चौधरी—कल छुट्टी का दिन है। उस लड़के से कहो कि ऑफिस में हमसे मिले।

राजन—जी आपका मतलब है अनूप से ?

चौधरी—हां अनूप से।

राजन—लेकिन बाबूजी आप जानते हैं उसकी मांगें क्या हैं ? वह गरीबों के जले हुए मकान नये सिरे से पक्के बनवाना चाहता है और बस्तीवालों को कम्पेंसेशन भी दिलवाना चाहता है।

चौधरी—उससे कह दो कि हम उससे मिलना चाहते हैं।

राजन अपना-सा मुंह लेकर चुप हो जाता है, और बाबूजी

के इस फैसले को समझने की कोशिश करने लगता है।

□ □

अगले रोज राजन और उसके बाप चौधरी आफिस में अनूप का इन्तजार कर रहे हैं। अनूप आता है। सचिन चौधरी उसे उखड़ी हुई निगाहों से देखते हैं।

चौधरी—गुड मार्निग।

राजन—हमें आपकी मां के मरने का अफसोस है!

अनूप—राजन बाबू, लोग तो मरने के बाद जलाये जाते हैं··· लेकिन मेरी मां—मेरी मां तो जलाकर मार दी गई।

राजन अनूप की मां की मौत के जिक्र पर डर जाता है और बात बदलना चाहता है।

राजन—आप तो बात को हमेशा घुमाकर उसका नया मतलब निकाल लेते हैं।

अनूप—(गुस्से में) मतलब की बात कीजिए। किसलिए बुलाया है मुझे?

चौधरी—आपकी···तुम्हारी शिकायतें क्या हैं?

अनूप—'तुम' नहीं 'आप' कहिए।

राजन—उम्र में वह आपसे बड़े हैं।

अनूप—उम्र के लिहाज से मुझे तुम नहीं कह रहे हैं इसलिए ऐतराज है।

चौधरी—सुनो! हमें तुम्हारी मांगें मालूम हैं, और वह हम मंजूर भी कर रहे हैं।

राजन—लेकिन किसी डर से नहीं।

अनूप —अच्छा। तो फिर किस खुशी में ?

चौधरी—तुम जैसों को पैरों-तले दबाकर जिस खुशी में रक्खा जाता है, हम अच्छी तरह जानते हैं।

अनूप—तो क्या समझ लिया जाये कि अमीरों के पैर थक चुके हैं जो मुझ गरीब को बुलाया गया है।

चौधरी—नहीं, इस मामले के साथ उलझ गया है हमारी बेटी का नाम और खानदान की इज्जत ! इसलिए इस मामले को हम यहीं रोक देना चाहते हैं। तुम्हारी मांगें हमें मंजूर हैं।

अनूप—शुक्रिया आपने हमारी मांगें मंजूर कर लीं। क्यों और किस लिए, ये जानने की मुझे ज़रूरत नहीं।

चौधरी —तुम्हें जानने की ज़रूरत है। क्योंकि···

राजन—क्योंकि उसके ज़िम्मेदार आप हैं। एक धनी-मानी लड़की से मिलने-जुलने का मौका पाकर आपने उसका कितना नुकसान किया है, ये आप नहीं समझ सकते। सीमा ने अपनी गलती मान ली है, और उसे अपने किये पर अफसोस भी है।

अनूप—फिर आप लोगों को किस बात की फिक्र है ?

राजन—फिक्र ! जो हुआ वही क्या कम है। अखबारों में आपकी तस्वीर साथ-साथ छपी, इसके लिए हम आपको काफी सबक सिखा सकते हैं।

अनूप—आप लोगों ने मुझे डराने के लिए बुलाया है या डर कर बुलाया है। सबक सिखाने का वक्त जा चुका राजन बाबू ! अब आप लोगों के सबक सीखने का वक्त आ गया है।

अनूप वहां से जाना चाहता है, मगर चौधरी उसे रोकते हैं।

चौधरी—जस्ट ए मोमेन्ट ! तुम समझदार मालूम होते हो।

मौका मिले तो बड़े आदमी बन सकते हो।

अनूप—ओह, तो अपनी जात में मिलाना चाहते हैं। यही लालच दिखाकर देश के अच्छे-अच्छे दिमाग खरीद रक्खे हैं आप लोगों ने ! नमस्ते—

राजन—बद्तमीज़।

> **'सीमा अपने किये पर शर्मिन्दा है—' यह सोचकर उसके विचार को झटका लगता है। वह सीमा से बदगुमान हो जाता है, और तेजी से अपने घर की तरफ बढ़ने लगता है।**

> **अनूप जैसे ही दरवाजा खोलकर अपने घर में दाखिल होता है, जमीन पर पड़ा आज का अखबार उठाता है। पहले ही पेज पर अपनी और सीमा की तस्वीर देखकर गुस्से से भर जाता है, और दोनों तस्वीरें बीच में से फाड़कर अलग कर देता है। उसी वक्त वह सीमा को दाखिल होते देखता है। सीमा उसकी गलतफहमी दूर कराना चाहती है।**

सीमा—कैसे हैं आप ?

अनूप—अच्छा हुआ आप आ गईं। मुबारकबाद देने का मौका तो मिल गया।

सीमा—किस बात की ?

अनूप—अपनी नादानी और आपकी जागृति की। मुझ जैसे खोटे आदमी का साथ लेकर आपने अपने-आपको दुनिया भर के बेकार कामों में उलझा लिया था। सुना है उस पल भर की भूल के लिए आपको सख्त अफसोस है। अमीर आदमी की जिन्दगी में अफसोस करने का मौका बार-बार तो आता नहीं, कम से कम इसी बात के

लिए एक बार धन्यवाद तो कह दीजिए। बेशक भूल मेरी ही थी। क्योंकि जिस दुनिया में आप रहती हैं, वहां से इन्सान की हालत पर तरस तो खाया जा सकता है, उसे प्यार नहीं किया जा सकता। फिर भी मेरी एक बात का ख्याल रखिएगा सीमा देवी—चाहे गलती से ही सही, आपने जिस रास्ते पर कदम रखा था, इन्सान के लिए वही सच्चा रास्ता है। कभी गलती से भी उसे गलत न समझिएगा। जी चाहता है जिस तरह पहली बार आपको घर से चले जाने के लिए कहा था, काश···काश आज भी कह सकता !

सीमा—तो फिर कहते क्यों नहीं, मैं आपकी एक भी बात का जवाब देना नहीं चाहती। लेकिन सिर्फ इतना जान लीजिए, आपने जो कुछ सुना है, जो भी समझा है, सब गलत है। सब झूठ है !

अनूप—झूठ है ? गलत है ?

सीमा—हां। तुम तो मुझे गलत न समझो। अपने काम में मुझे भी अपना साथी बना लो।

> **वह अपना सर उसके सीने पर टिका देती है, और अपनी भावनाओं को पिघलने से बचाने की नाकाम कोशिश करती है। वह फैसला दोहराती है।**

अनूप—ज़रा सोच समझकर कहो सीमा ! इतनी बड़ी बात इस तरह जल्दी में नहीं कही जाती।

सीमा—मैंने सोच लिया है। तुम मुझे अपने घर से निकाल सकते हो, लेकिन मैं तुम्हें भूल से भी अपने दिल से नहीं निकाल सकती।

अनूप—सीमा !

सीमा—मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है।

अनूप—कहो।

सीमा—बाबूजी के आने का वक्त हो गया है। कल पांच बजे फिर आऊंगी।

यह कहकर वह तेजी से बाहर चली जाती है अनूप एक अजीब उलझन में पड़ जाता है।

□ □

सीमा सबकी नजर बचाते हुए घर में प्रवेश करती है, और अपने कमरे में जाने की कोशिश करती है लेकिन अचानक सामने खड़े राजन बाबू को देखकर ठिठक जाती है। राजन उससे जवाबतलब करता है।

राजन—कहां गई थी ?···मैं पूछता हूं कहां गई थी ?

सीमा—(निडरता से जबाव देती है) अनूप बाबू से मिलने !

सीमा का गुस्ताख जवाब सुनकर राजन तड़प उठता है। लेकिन धैर्य से काम लेने की कोशिश करता है।

राजन—खैर, मुझको तो तुम कुछ समझती ही नहीं। लेकिन अब तुम्हारी ये हिम्मत हो गई है कि बाबू जी की मर्जी के खिलाफ अनूप से मिलने चली गई ?

सीमा—(वह गौरव से सर ऊंचा कर कहती है) मैंने बाबूजी से कोई वादा नहीं किया।

राजन—(तिलमिलाकर) हमें नीचा दिखाये बिना तुम्हें तसल्ली नहीं होगी। जानती हो क्या पोजीशन है अनूप की ?

सीमा—शराफत के एतबार से बहुत ऊंचे !

राजन—और सोसायटी के एतबार से बहुत नीचा ! इतना गिरा

हुआ कि लोग उंगलियां उठाते हैं उस पर।

सीमा—तुम और तुम्हारी सोसायटी इन्सानियत, विद्या, बुद्धि किसी भी बात में उनकी बराबरी नहीं कर सकते।

राजन—शट-अप !

सीमा गुस्से से अन्दर बढ़ जाती है। राजन की गरजती हुई आवाज बाबूजी के कानों तक जा पहुंचती है। वह बेटे और बेटी की यह तकरार सुनकर झुंझला उठते हैं, और राजन को टोकते हैं।

चौधरी—राजन !

राजन—जी बाबू जी !

चौधरी—हम सोच रहे हैं कि सीमा को यहां से कहीं बाहर ले जायें।

राजन—आप बिल्कुल ठीक सोच रहे हैं। मेरा भी यही खयाल है।

चौधरी—लेकिन उससे पहले तुम्हें एक जरूरी काम करना है।

राजन—जी !

चौधरी—तुम आनन्द मोहन को जानते हो न ?

राजन—अपने आई० जी० पुलिस ?

चौधरी—हां, वह हमारे बहुत अच्छे दोस्त हैं। उनका दोहता सुभाष हाल ही में जर्मनी से इंजीनियरिंग पास करके आया है।

राजन—जी मुझे मालूम है।

चौधरी—वो खुद चाहते थे कि उनके बेटे के साथ हमारी बेटी का रिश्ता हो जाये। और अब हम चाहते हैं कि हमारी तरफ से यह बात पक्की हो जानी चाहिए।

राजन—वेरी गुड आइडिया !

चौधरी—उनसे जाकर कहो कि परसों सीमा की सालगिरह है। सगाई का एनाउन्समेंट उसी वक्त कर दिया जायेगा।

राजन—जी अभी जाता हूं।

राजन बाबू जी के तरीके से खुश है। और इस काम को पूरा करने के लिए तेजी से बाहर चला जाता है।

□ □

ज्यों-ज्यों दिन ढलता जा रहा है, सीमा की बेकरारी बढ़ती जा रही है। वह वादे के मुताबिक पांच बजे अनूप से मिलने वाली है। जैसे ही दीवार की घड़ी साढ़े चार बजाती है, वह बाहर जाना चाहती है, लेकिन चौधरी उसे रोक लेते हैं।

चौधरी—जा कहां रही हो बेटी ? एक कप चाय और बना दो।

सीमा—ज्यादा चाय पीने से रात को नींद नहीं आयेगी बाबूजी!

चौधरी—जब बेटी बड़ी हो जाती है तो बाप की नींद यों ही उड़ जाती है। खैर रहने दो चाय। तो किताब ले आओ—रेलिजियन ऑफ मैन बाई डॉ० टैगोर।

सीमा बुक-शेल्फ से किताब निकालकर उनकी तरफ बढ़ाती है।

सीमा—यह लीजिए बाबू जी !

चौधरी—तुम पढ़ोगी—हम सुनेंगे।

सीमा—आज मुझे कहीं बाहर जाना है बाबूजी।

चौधरी—हमने तुमसे कहा था न कि इस घर से बाहर नहीं जाओगी। शायद तुम भूल गई।

सीमा—नहीं ! मैंने किसी से वादा किया है।

चौधरी—बेटी, तुमने किसी से भी वादा किया हो—तुम यहां से नहीं जाओगी। बैठो। हमने अभी-अभी तुमसे कहा—तुम पढ़ोगी और···

सीमा बाहर जाने के लिए बेचैन है। लेकिन बाप के हुक्म के सामने मजबूर हो जाती है। चौधरी उसके दिल की बेचैनी को पढ़ने लगते हैं।

□ □

अनूप भी बेचैनी से इंतजार कर रहा है। वह बार-बार घड़ी की तरफ देखता है, और मायूस हो जाता है। उसी वक्त दरवाजे पर खटखटाहट होती है, वह फौरन कह उठता है।

अनूप—आ जाओ।

सीमा के बजाय चौधरी घर में दाखिल होते हैं। उन्हें देख कर अनूप ताज्जुब से खड़ा हो जाता है।

अनूप—आप !

चौधरी—शायद तुम्हें किसी और का इन्तज़ार था ?

अनूप—जी हां !

चौधरी—हमें देखकर ताज्जुब तो हुआ होगा ?

अनूप—ताज्जुब तो नहीं हुआ लेकिन आपके आने की उम्मीद नहीं थी। तशरीफ रखिए।

वह उन्हें बैठने के लिए कुर्सी पेश करता है। चौधरी उसकी

घबराहट का जायजा लेते हुए कहते हैं।

चौधरी—सीमा से तुम्हारी जान-पहचान कब से है?

अनूप—जी, कुछ ही दिनों की बात है।

चौधरी—और इन कुछ ही दिनों में बात बदनामी की हद तक पहुंच गई।

अनूप—देखिए, मैं गरीब जरूर हूं, लेकिन बदनाम नहीं।

चौधरी—अनूप हमारे घर में गरीबी सबसे बड़ी बदनामी है।

अनूप—इस धर्म को जन्म देने वाले और गरीबी को बदनाम करने वाले आप ही लोग हैं।

चौधरी—हम तुम्हारे साथ बहस नहीं करना चाहते। अगर हम चाहें तो सीमा को जबर्दस्ती तुम्हारी जिन्दगी से बाहर ले जा सकते हैं। लेकिन उसके साथ हम कोई सख्ती नहीं करना चाहते। वह जब छः महीने की थी, उसकी मां इस दुनिया से चल बसी। और उस दिन से आज तक उसने कोई दुःख नहीं देखा। हमें यकीन है अनूप कि तुम भी उसे सुखी देखना चाहोगे?

अनूप—ये आप कैसे कह सकते हैं—मैं सीमा को सुखी नहीं रख सकूंगा?

चौधरी—क्योंकि सीमा की जिन्दगी तुम हो और तुम्हारी जिन्दगी की कोई सीमा नहीं है। तुम जिस आग से खेल रहे हो, सीमा उस आग से खेलने की आदी नहीं।

अनूप—इसका फैसला तो आने वाला वक्त ही करेगा।

चौधरी—नासमझ हैं वो जो वक्त के सहारे जिन्दा रहते हैं। समझदार वो हैं जो वक्त से पहले वक्त की धारा समझ लेते हैं। और आज नहीं तो कल सीमा को होश आ जायेगा। उस समय जिन्दगी जिन्दगी से टकरायेगी और तुम्हारी यही जिन्दगी मौत बन जायेगी।

चौधरी के शब्दों से अनूप दुःखी हो उठता है, मगर खामोश रहता है। वह जरा रुककर फिर कहते हैं—

चौधरी—हम सिर्फ इतना चाहते हैं कि सीमा की ज़िन्दगी से तुम दूर हट जाओ। अनूप तुम्हारी ज़िन्दगी सुख और शान्ति से गुज़रे, यह कहना बेकार है। लेकिन हमारी दिली ख्वाहिश है कि तुम्हारे हाथों हर इन्सान का कल्याण हो।

सचिन चौधरी यह कहकर चले जाते हैं। अनूप चुपचाप खड़ा उनके फैसले को दिल में तौलने की कोशिश करता है। आज उसे सीमा की ज़िन्दगी से दूर हट जाना है, यह खयाल आते ही उसका दिल दहल उठता है।

□ □

राजन के घर बड़े हाल में सीमा के जन्म-दिन की पार्टी पर शहर भर के मशहूर लोग इकट्ठे हुए हैं। राजन, उसकी बीवी, अशोक और लिली मेहमानों का स्वागत करते हैं। चौधरी, आइ० जी० और उनके बेटे का स्वागत करते हैं। उनके होंठों पर मुस्कराहट है, लेकिन दिल अभी तक बोझिल है।

चौधरी—हैलो आनन्द मोहन ! ओह सुभाष ! कांग्रेच्युलेशन, बड़ी खुशी हुई—तुम इम्तहान में बहुत अच्छे रहे।

सुभाष—थैंक यू अंकल !

आई० जी०—आखिर बेटा किस बाप का है ?

चौधरी—देखो आनन्द मोहन, जहां तक हमारा खयाल है तुम

तालीम में काफी कच्चे थे, इसीलिए पुलिस में भर्ती हो गये।

आई० जी०—(सीमा के बारे में पूछते हैं) अरे भई वह हमारे घर में आनेवाली बहार कहां है ?

चौधरी—आती ही होगी। अभी तक आई नहीं।

आई० जी०—देखो चौधरी, मैं पुलिस का आदमी हूं। मेरे सब्र का इतना इम्तहान मत लो कि मुझे ज्यादती से काम लेना पड़े।

चौधरी—लेकिन ये पुलिस-हैड-क्वार्टर नहीं है, हमारा घर है। यहां हमारा हुक्म चलता है। हैव ए ड्रिंक ?

चौधरी अशोक की तरफ पलटते हैं और शोख लहजे से पुकार उठते हैं।

चौधरी—डिस्गस्टिग, डैमेजिंग ! कम आन, सर्व सम ड्रिंक्स टु इन्सपेक्टर जेनरल ऑफ पोलिस।

अशोक—व्हाट विल यू लाइक टु हैव सर ? समथिंग सोफ्ट ?

आई० जी०—नैवर।

तभी हाल के दूसरे कोने में आशा राजन से धीरे-धीरे बात करती है और वे शब्द चौधरी के कानों तक पहुंच जाते हैं।

आशा—सुनिये, आपकी बहन पार्टी में आने से इन्कार कर रही है।

राजन—यह लड़की तो हम लोगों की इज्जत तबाह करने पर उतर आई है। मैं लेकर आता हूं।

राजन ऊपर जाने लगता है। चौधरी उसे रोकते हैं।

चौधरी—ठहरो राजन ! तुम मेहमानों की देख-भाल करो, हम जाते हैं।

यह कहकर चौधरी स्वयं सीमा को नीचे लाने के लिये उसके कमरे की तरफ जाते हैं। लिली जान-बूझकर आशा के करीब आकर पूछती है—

लिली—भाभी, सीमा अब तक नहीं आई ?

श्रीमती राजन—अभी आ जायेगी।

चौधरी सीमा के कमरे में खड़े देख रहे हैं कि वह पलंग पर लेटी एक नावेल पढ़ रही है। उन्हें देखते ही वह खड़ी हो जाती है। चौधरी होठों पर जबरदस्ती मुस्कराहट लाने की कोशिश करते हैं।

चौधरी—ताज्जुब है सीमा ! तुम यहां किताब पढ़ रही हो और लोग नीचे तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।

सीमा—बाबूजी मैं···

सीमा कुछ कहना चाहती है, मगर चौधरी उसकी बात काट कर कह उठते हैं।

चौधरी—बेटी जन्म-दिन तुम्हारा है। अगर तुम नहीं चलोगी तो लोगों को बुरा नहीं लगेगा ?

सीमा उन मामूली कपड़ों में बाप के साथ चलने को तैयार हो जाती है।

सीमा—चलिए !

चौधरी—तो फिर तैयार हो जाओ, जाओ।

सीमा—तैयार तो हूं।

चौधरी—वेट, वेट, वेट, वेट। वाह-वाह, हमने पहले कभी महसूस भी नहीं किया था कि सादे कपड़ों में तुम इतनी अच्छी लगती हो !

सीमा—चलिए।

चौधरी और सीमा ऊपर से नीचे आने के लिए गैलरी में ही हैं कि नीचे से बस्ती के लोगों के शोर-गुल की आवाज़ें आती हैं। चौधरी झांककर बाहर बागीचे में खड़े मज़दूरों के भीड़ को देखते हैं। वे सब सीमा की जय-जयकार बोल रहे हैं। सीमा भी उन्हें देखती है।

बस्ती वाले—सीमा देवी की जय ! सीमा देवी की जय ! सीमा देवी की जय। हम सीमा देवी को धन्यवाद देने आये हैं।

चौधरी उनसे निगाह हटाकर बेटी के चेहरे को पढ़ते हैं।

चौधरी—ये लोग तुम्हें धन्यवाद देने आए हैं। इनका खयाल है कि इनकी सारी मांगें तुमने मंजूर करवाई हैं।

एक आदमी—हम लोग कल एक सभा करना चाहते हैं—आप लोगों का शुक्रिया अदा करने के लिए ! आपकी मेहरबानी से हमारे बर्बाद घर फिर से आबाद हो गये।

सीमा उनके सामने आकर उन्हें समझाती है।

सीमा—इसके लिए आप लोगों को अनूप बाबू के पास जाना चाहिए।

एक आदमी—हम लोग उनके पास गये थे। वह आज शहर छोड़कर जा रहे हैं।

सीमा—शहर छोड़कर जा रहे हैं ?

एक आदमी—इसीलिए तो सभा में नहीं आ रहे।

अनूप के शहर छोड़ने की खबर सुनते ही सीमा बेचैनी के साथ बड़बड़ा उठती है।

सीमा—बाबूजी, मैं अभी अनूप बाबू से मिलना चाहती हूं···मुझे इजाजत दे दीजिए, मैं उनसे मिलना चाहती हूं···सुनिये बाबूजी, मुझे एक बार अनूप बाबू से मिलना ही पड़ेगा।

सीमा बेचैन होकर बाप से इजाजत मांगती है, तो वह गम्भीर हो कह उठते हैं।

चौधरी—अगर तुमने फैसला ही कर लिया है तो इजाजत क्यों मांग रही हो ?

फिर भी सीमा नहीं रुकती और बाहर जाने लगती है।

नीचे मेहमान सीमा का इन्तजार कर रहे हैं। सबकी निगाह जीने पर लगी हुई है। तभी सीमा तेजी से सीढ़ियां उतरती

आ रहा है। राजन उसे जाने पर ही रोक लेता है। वह उसे मामूली कपड़ों में देख गुस्सा करता है।

राजन—सीमा ये कपड़े पहनकर तुम पार्टी में शरीक होने जा रही हो ?

सीमा—नहीं, मैं अनूप बाबू से मिलने जा रही हूं।

राजन—बाबूजी के मना करने पर भी ?

सीमा—उन्होंने मना नहीं किया।

राजन—(उसे धमकाते हुए) लेकिन याद रहे अगर ये कदम इस वक्त इस दरवाज़े से बाहर चले गये तो इस घर के दरवाज़े हमेशा के लिए बन्द हो जायेंगे।

सीमा—ये घर सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, फिर भी तुम्हारी बात मुझे मंजूर है।

राजन—फिर भी तुम नहीं जा सकती।

सीमा—तुम्हें रोकने का कोई अधिकार नहीं।

घर में मौजूद सभी मेहमान सीमा और राजन की बहस व झगड़े बड़ी हैरत से देख रहे हैं। आशा के हाथ-पांव कांपने लगते हैं। सीमा सख्ती के साथ राजन की बातों का जवाब देती है।

राजन—एक भाई के नाते अपनी बहन के कदम मैं इस घर से बाहर नहीं जाने दूंगा।

सीमा—सीधे रास्ते पर उठते हुए कदम तुम तो क्या ज़माने की कोई ताकत नहीं रोक सकती।

श्रीमती राजन—सीमा, ऐसी नादानी मत करो। अपने भैया की

बात मान जाओ।

राजन—इतना तो सोचो, कहां रहोगी ? क्या खाओगी ?

सीमा—लाखों गरीब इन्सान जहां रहते हैं, और जो खाते हैं।

राजन—तो क्या एक गरीब के लिए तुम इस घर की इतनी बड़ी मान-मर्यादा और दौलत को छोड़कर चली जाओगी ?

सीमा—दौलत खोकर पाई जा सकती है, लेकिन अनूप जैसा इन्सान खोकर फिर पाया नहीं जा सकता।

राजन—ये सब कुछ तुम्हें उसी ने सिखा दिया। जा मिली है उस चार सौ बीस के साथ।

सीमा—चार सौ बीस का मतलब समझते हो भैया ?

राजन—हां, जो गरीब हो, मोहताज हो, भिखारी हो, दूसरों को बहकाता हो।

सीमा—नहीं, जो दूसरे की किताब अपने नाम से छपवा ले, वह चार सौ बीस कहलाता है।

राजन—और वह गरीब जो एक अमीर घराने की लड़की को गलत रास्ते पर लगा दे…

सीमा—नहीं, वो गरीब जो दौलत के बोझ से डूबती हुई अमीरों की नैया को इन्सानियत का किनारा दिखा दे—वह इन्सान नहीं, इन्सानियत का देवता कहलाता है।

राजन—और वह जो हमारी मिल में वर्कर्स को भड़का कर आग लगाने भिजवाये…

सीमा—आग लगाने नहीं आग बुझाने जाये ! वह भगवान की तरफ से भेजा हुआ बारिश का पहला छींटा कहलाता है।

राजन—सीमा !

सीमा—और जो बस्ती के गरीबों की दिवाली को आग के शोलों में बदल दे, वह हत्यारा कहलाता है।

राजन सीमा की बात पर पागल हो उठता है। उसकी आंखों से अंगारे निकलने लगते हैं, मगर बेबस हुआ चिल्लाकर रह जाता है।

राजन—सीमा !

सीमा—और जो अनूप बाबू की मां को ज़िन्दा आग में जलवा दे—वह खूनी और कातिल कहलाता है।

राजन—सीमा !!

सीमा—हट जाओ मेरे रास्ते से। तुमसे बेगुनाहों के खून की बू आ रही है।

राजन—नहीं सीमा नहीं। मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।

सीमा—छोड़ दो मुझे जाने दो।

राजन—नहीं-नहीं।

राजन बहन को पकड़ लेता है, वह झुंझला उठती है। तभी चौधरी की आवाज़ सुनकर दोनों चौंक पड़ते हैं।

चौधरी—सीमा को रोको नहीं राजन, उसे जाने दो।

राजन—आज आपकी आंखों के सामने इस घर की इज्ज़त बाहर जा रही है बाबूजी।

राजन बाप की तरफ बढ़ता है। सीमा की निगाहें बाप की तरफ उठती हैं। उनकी आंखों में पहले जैसी नफरत के अंगारे नहीं हैं, बल्कि स्नेह के आंसू झिलमिला रहे हैं। सीमा तेज़ी से बाहर चली जाती है।

चौधरी—यह तुम्हें उस वक्त सोचना था राजन, जिस वक्त तुम खुद इज्जतदार होकर गरीबों की इज्जत के साथ खेल रहे थे। और उनकी जानों के साथ दिवाली मना रहे थे।

सीमा के चले जाने के बाद सचिन चौधरी मेहमानों से पार्टी समाप्त होने का ऐलान करते हैं।

चौधरी—लेडीज एण्ड जेन्टिल मैन, आई एम सॉरी टु एनाउन्स द पार्टी इज ओवर।

मेहमान बाहर जाने लगते हैं। मगर चौधरी आई० जी० को रोक लेते हैं, और मेहमानों की भीड़ खत्म होते ही उनसे कहते हैं—

चौधरी—आनन्द···मुझे अफसोस है आनन्द! कि दोस्त होकर हम तुम्हारे घर में बहार न ला सके।

आई० जी०—मैं समझ गया चौधरी।

चौधरी—लेकिन पुलिस अफसर होने के नाते हम तुम्हें खाली हाथ नहीं भेज सकते। तुमने सुन लिया—सीमा ने राजन के खिलाफ क्या-क्या कहा? अब फैसला हमारे हाथ में नहीं कानून के हाथ में है।

आई० जी० राजन की तरफ बढ़ते हैं, तो सचिन चौधरी रुख पलट लेते हैं। उनके कानों में आई० जी० के आखिरी शब्द पड़ते हैं—"राजन यू आर अन्डर अरेस्ट"। उनकी आंखों में आंसू उतर आते हैं, फिर भी बर्दाश्त करने की कोशिश करते हैं।

□ □

अनूप बस्ती छोड़कर हमेशा के लिए जा रहा है। जाने से पहले वह मन्दिर में रेखा की महेश के साथ शादी करा देता है। बस्ती के तमाम लोग मौजूद हैं। दोनों अनूप के पांव छूकर उससे आशीर्वाद लेते हैं।

अनूप—महेश तुमने रेखा का हाथ थामकर मुझको जिन्दगी की सबसे बड़ी खुशी दे दी।

महेश—अनूप भैया ! अगर आप मुझे सही रास्ता न बताते तो मैं आज इस काबिल नहीं होता ।

बस्ती का आदमी—भैया तुम ही ने हमारी बस्ती सुधारी और तुम ही छोड़कर चले जा रहे हो ?

अनूप—दीनू मैं तुम लोगों को छोड़कर नहीं जा रहा हूं। तुम्हारी इस बस्ती का पैग़ाम देश की और बस्तियों को पहुंचाने जा रहा हूं।

अनूप रेखा को स्नेह भरी निगाहों से देखता है, और फिर अपनी राह पर चल पड़ता है। रेखा पलकों में आंसू लिये भैया को देखती रह जाती है।

□ □

उधर सीमा अनूप के घर आती है। मकान-मालिक दरवाजे पर 'टू लेट' का बोर्ड लगा रहा है। वह यह बोर्ड देखकर चौंक पड़ती है, और आगे बढ़कर मकान-मालिक से पूछती है—

सीमा—अनूप बाबू ? अनूप बाबू कहां हैं ?

मकान मालिक—वह मकान छोड़कर चले गये। आपने जो उनके किराये के हिसाब में पांच सौ रुपये दिये थे वह भी वापस कर गये।

सीमा—लेकिन वह कहां गये ?

मकान मालिक—इसका पता तो आपको बस्ती वाले ही दे सकते हैं।

सीमा वहां से निराश लौट पड़ती है। मकान-मालिक चिल्ला कर उसे रोकने की कोशिश करता है, लेकिन वह तेज कदमों से बस्ती की तरफ जाने लगती है। उसके कानों में मकान-मालिक के शब्द गूंजते हैं—

मकान मालिक—लेकिन मेम साहब अपने पैसे तो वापस लेते जाइये।

□ □

बस्ती के जले हुए मकानों की जगह नये मकान बनाये जा रहे हैं। रेखा बस्ती के बच्चों के साथ स्कूल जा रही है। उसी वक्त सीमा वहां पहुंचती है और रेखा को देखते ही कह उठती है—

सीमा—रेखा—अनूप बाबू ?

रेखा—तुमने बहुत देर कर दी सीमा !

रेखा की निराश निगाहें देखकर सीमा चुप हो जाती है। उसे लगता है जैसे नाव किनारे पर पहुंचने से पहले ही तूफान में घिर गयी हो। तभी महेश आता है और उसकी निराशा को आशा में बदलने की कोशिश करता है।

महेश—देर हुई, ऊपर वाले के घर में अन्धेर नहीं। चलो सिस्टर।

महेश, सीमा और रेखा को लेकर अपने चलते-फिरते होटल में बैठ जाता है, और गाड़ी लिये उस तरफ निकल पड़ता है जिस तरफ अनूप गया है।

□ □

दूर पगडंडी पर महेश अनूप को जाते हुए देखता है। वह अपना चलता-फिरता होटल वहीं रोक देता है और उसकी तरफ इशारा करता है। सीमा उनसे बिना कुछ कहे-सुने, अनूप के पीछे भागती है। अनूप चलते-चलते रुक जाता है। सीमा के कदमों की चाप से वह पलटकर देखता है। सीमा दौड़कर उसके पांव छूती है। अनूप उसे देखकर ताज्जुब करता है।

अनूप—सीमा !

सीमा—मैं तुम्हारे रास्ते की रुकावट बनने नहीं आई हूं। मैं

आज तुम्हारा साथ देने आई हूं। इन्सान की सेवा करने के लिए अपनी सारी दौलत को पीछे छोड़कर···

अनूप—नहीं सीमा, दौलत तुम्हारे पीछे नहीं छूटी, दौलत तुम्हारे सामने है। जिन गरीबों की पुकार सुनकर तुम्हारा दिल बोल उठा है, वही ज़िन्दगी की सच्ची दौलत है।

अनूप और सीमा, रेखा और महेश की तरफ देखते हैं। उनकी आंखों में खुशी के आंसू हैं। दोनों एक दूसरे का हाथ थामे उस नयी मंज़िल की खोज में निकल पड़ते हैं, जहां ज़िन्दगी का एक नया सबेरा उनका इन्तज़ार कर रहा है। उस सुबह की गूंज शायद यही थी—

"ज़िन्दगी पर सबका एक-सा हक है
सब तसलीम करेंगे।
सारी खुशियां सारे दर्द बराबर
हम तकसीम करेंगे।।

(समाप्त)

□ □ □

अब तक प्रकाशित स्टार पॉकेट बुक्स

अपनी पसन्द की पुस्तकें इनमें से चुनिए :

उपन्यास

० नया जमाना (**गुलशन नन्दा**)
चिनगरी ,,
सांवली रात ,,
राख और अंगारे ,,
कलंकिनी ,,
देवछाया ,,
० नीलकण्ठ ,,
० गेलार्ड ,,
अंधेरे चिराग ,,
सितारों से आगे ,,
सांझ की बेला ,,
शीशे की दीवार ,,
जलती चट्टान ,,
टूटे पंख ,,
घाट का पत्थर ,,
गली-कूचे : सं० कहानियां ,,
निशानी (**राजवंश**)
प्यासे नैना ,,
पुतली ,,
अनदेखी राह ,,
पतिता ,,
फुहार ,,
दायरा ,,
अबला कौन ,,
लाज ,,
दीवार ,,
अभिमान ,,
प्रायश्चित (राजवंश)
शिकायत ,,
सौगंध ,,
पतवार ,,
सांझ और सवेरा ,,
कांटों की सेज ,,
अमानत ,,
रंजना ,,
लगन ,,
जान-पहचान ,,
आंचल की प्यास ,,
नीलाम ,,
अपने पराये ,,
वासना ,,
दर्पण की परछाइं ,,
काया-कल्प ,,
प्यास और ममता ,,
घूंघट की ओट (**लोकदर्शी**)
प्यास ,,
लालसा ,,
प्रेम के बन्धन ,,
अंगड़ाई ,,
० आकाश पाताल (**गुरुदत्त**)
० पर्दे के पीछे ,,
विलोमगति (दो भाग) ,,
० प्रभात बेला ,,
लोक परलोक ,,
बंद ताबूत का रहस्य (**इं० गिरीश**)

वसीयत का षड्यंत्र (इं० सिरीज़)
खूनी जाल के कैदी ,,
खूनी तिकोन ,,
खून की प्यास ,,
खून के व्यौपारी ,,
पिंजरे में बंद खूनी ,,
बोलती हुई लाशें ,,
एक लाश दो चेहरे ,,
राजमहल की प्रेतात्मा ,,
रेसकोर्स में खून (आरिफ मारहर्वी)
पानी में लाश ,,
बंद कमरे में खून ,,
खून का रंग ,,
भयानक दलदल ,,
मुस्कराते भूत ,,
तहखाने का कैदी ,,
दीवार का शिकार ,,
काले गुलाम ,,
पहली रात (आदिल रशीद)
• वसंती आंचल ,,
इन्तकाम ,,
• कंचनमाला (ताराशंकर बंद्योपाध्याय)
कौन परदा ढाके (कुशल)
भील और मंजिल : (रेवतीसरन शर्मा)
पाप का बाजार (नसीम)
दूखन लागे नैन (भगवतीप्रसाद वाजपेयी)
दानव देश (कुशवाहाकान्त)
खून का प्यासा ,,
उसके साजन ,,
महल में प्रेत (ओमप्रकाश शर्मा)
कोठे वाली की हत्या ,,
होटल रंगशाला (ओमप्रकाश शर्मा)
माधवपुर हत्याकांड ,,
अंधेरे के दीप ,,
बदनाम गली (कमलेश्वर)
अभागिन (विजयकुमार गुप्त)
रास्ते अपने-अपने ,,
ढलती शाम ,,
शरारत ,,
• पाप की छाया (नानकसिंह)
फ़र्ज़ का देवता: (जमुनादास अख्तर)
बुझते दीप ,,
पंजाब की बेटी ,,
चमकीले पत्थर (वेदप्रकाश कम्बोज)
सातवां पागल (अकरम)
पत्थर बोलते हैं (मुसाफिर लायलपुरी)
तन का पाप (सत्यपाल विद्यालंकार)
तीन देवियां (जगदीश भारती)
लुई की आत्मा (रोमांचकारी)
आदमी और सिक्के (महेन्द्रनाथ)
नींव की मिट्टी (शिवसागर मिश्र)
सूरज का सातवां घोड़ा (धर्मवीर भारती)
आखिरी फेरा (कृपाशंकर)
आधा आदमी ,,
मन के काले ,,
टूटे फूल ,,
सुजाता ,,

कहानी-संग्रह

सिर्फ एक सिगरेट (बेदी)
सपनों की फांसी (टण्डन)

बीसवीं सदी के मजनूं (अब्बास)
माफकीजिए (गोपाल प्रसाद व्यास)

पांच लोकप्रिय कवि (संकलन)
ꜝसर्वश्रेष्ठ विरह गीत : (सं०नीरज)

शेरो-शायरी व कविता-संग्रह

नग़मा-ए-इश्क (संकलन)
नग़मानुमा (फिराक़ गोरखपुरी)
दीवाने गालिब
पिल्ला (काका हाथरसी)
चकल्लस (सं०,,)
तो मैं क्या करूं : (गोपाल प्रसाद व्यास)

विविध

योरूप में २८ दिन : (यात्रा संस्मरण)
साग-सब्जियां कैसे उगाएं ?
भारत की पन्द्रह भाषाएं : (प्रभाकर माचवे)
एक राष्ट्रपति (सचित्र अनुवाद)
चन्द्रयात्रा के रोमांच

नोट : बिना चिन्ह की पुस्तकों का मूल्य दो रुपया प्रति
ꜝ चिन्ह की पुस्तकों का मूल्य एक रुपया प्रति
० चिन्ह की पुस्तकों का मूल्य तीन रुपया प्रति





सदियों से समाज के आंगन में अमीर और ग़रीब एक साथ पलते आ रहे हैं। अमीर ने कईबार ग़रीब पर तरस खाया, उसकी दुर्दशा पर आंसू बहाए, लेकिन उसने यह कभी नहीं सोचा कि ग़रीबी के अभिशाप को दूर कैसे किया जाए?

शायद वह उसे उसका नसीब समझ कर चुप बैठ गया।

'नया ज़माना' कहानी है, कल के धनवान और आज के मेहनतकश इंसान की, जो एक-दूसरे को इंसानियत के नाते से पहचानने की कोशिश कर रहे हैं।

—गुलशन नन्दा